भारत सरकार

भारत मौसम विज्ञान विभाग

संस्करण - 21 वर्ष : 2015 - 16

# मौसम मंजूषा

**भारत मौसम विज्ञान विभाग**
**पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय**
मौसम भवन, लोदी रोड
नई दिल्ली–110003

## भारत सरकार
## भारत मौसम विज्ञान विभाग

संस्करण-21 वर्ष:2015-16

# मौसम–मंजूषा

**भारत मौसम विज्ञान विभाग**
**पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय**
**मौसम भवन, लोदी रोड**
**नई दिल्ली-110003**

*(आवरण पृष्ठ- भारती स्टेशन, अंटार्कटिका, छायाकार- श्री कैलाश भिंडवार,सहायक मौसम विज्ञानी)*

*डिजाइन- श्री दिनेश खन्ना, वैज्ञानिक सहायक*

# मौसम मंजूषा

भारत मौसम विज्ञान विभाग
की
विभागीय हिंदी गृह पत्रिका

## प्रमुख संरक्षक

डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़
मौसम विज्ञान के महानिदेशक

## संरक्षक

श्री अशोक कुमार शर्मा
मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक (प्रशासन एवं भंडार)

## संपादक

सुश्री रेवा शर्मा
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी

## सह संपादक

श्रीमती सरिता जोशी
हिंदी अधिकारी

## टंकण सहयोग

श्री प्रमोद कुमार
सहायक

श्री उमाशंकर
उच्च श्रेणी लिपिक

## पत्र व्यवहार का पता

संपादक - ' मौसम मंजूषा ', भारत मौसम विज्ञान विभाग
हिंदी अनुभाग, कक्ष सं- 612, उपग्रह मौसम भवन
लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

## प्रकाशक

हिंदी अनुभाग, भारत मौसम विज्ञान विभाग

(मौसम मंजूषा में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकार के हैं । भारत मौसम विज्ञान विभाग का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।)

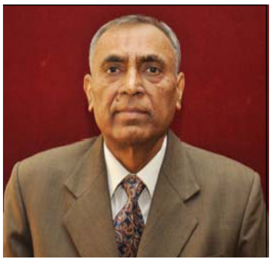

*महानिदेशक*
*भारत मौसम विज्ञान विभाग*
*मौसम भवन, लोदी रोड*
*नई दिल्ली-110003*

## *महानिदेशक महोदय की कलम से*

हमारे देश की भाषा हिंदी के लिए विद्वानों ने सही कहा है कि हिंदी में बंगला का वैभव, गुजराती का संजीवन, मराठी का चुहल, कन्नड़ की मधुरता, संस्कृत का अजस्र स्रोत है। प्राकृत ने इसका श्रृंगार किया और उर्दू ने इसे मेंहदी लगाई। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास हिंदी भाषा का समृद्ध साहित्य है और पिछले कुछ दशकों से साहित्य की अन्य विधाओं के साथ साथ विज्ञान और तकनीक से जुड़े विषयों पर भी हिंदी में लेखन कार्य हो रहा है और मैं समझता हूँ यह बहुत आवश्यक भी है क्योंकि विज्ञान का लाभ अंतत: जनमानस तक पहुँचता है।

आवश्यकता केवल प्रबल इच्छाशक्ति की है और इस इच्छाशक्ति का एक छोटा सा उदाहरण हमारी 'मौसम मंजूषा' है। विविध प्रकार के विषयों पर हमारे विभाग के लोग हिंदी में लेखन कार्य से जुड़ने लगे हैं। यह शुभ संकेत है।

मैं सभी लेखकों को बधाई देता हूँ। मुझे आशा है कि हमारे देश की भाषा को आगे बढ़ाने में इनका प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित

लक्ष्मणसिंह राठोड

**(लक्ष्मण सिंह राठौड़)**

*मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक*
*(प्रशासन एवं भंडार)*
*मौसम भवन, लोदी रोड*
*नई दिल्ली-110003*

## *संदेश*

हिंदी दिवस 2015 के शुभ अवसर पर 'मौसम मंजूषा' के इक्कीसवें संस्करण का प्रकाशन हम सबके लिए प्रसन्नता की बात है। मैं देख रहा हूँ विभाग के लोगों में विविध विषयों पर हिंदी में लिखने का जो विश्वास पैदा हुआ है वह वास्तव में अपनी भाषा की क्षमता का प्रमाण है।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हमारे विभाग में कार्यालयों का लगातार निरीक्षण किया जा रहा है। निरीक्षण के समय राजभाषा प्रदर्शनी में 'मौसम मंजूषा' पत्रिका को भी प्रदर्शित किया गया। सभी सांसदों ने इस पत्रिका को बहुत सराहा है। मौसम मंजूषा की प्रतियाँ भी उन्हें सहर्ष भेंट की गई हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि हिंदी में लेखन कार्य को नई दिशा मिली है। मुझे खुशी है कि पूरे देश में फैले हमारे विभाग के लोग इस पत्रिका से जुड़ने लगे हैं।

'मौसम मंजूषा' के नवीन अंक पर सभी लेखकों, संपादक मंडल, पाठकों को बहुत बहुत बधाई।

शुभकामनाओं सहित

अकुशर्मा
26/8/15

**(अशोक कुमार शर्मा)**

# संपादकीय

जीवन यात्रा के दौरान अनुभव से इतना तो समझ आ जाता है कि ये राह नहीं आसान, जैसे आप यात्रा के लिए सड़क पर निकलते हैं, तो अक्सर तरह तरह के रास्तों से यानि सड़कों से गुज़रते हैं। ड्राइव कर रहें हैं तो स्वाभाविक है आप ऑफिस या किसी दूसरे गंतव्य की ओर जा रहे हैं तो एक बात जो उस समय दिलो-दिमाग पर छा जाती है वह यह है कि किसी भी सड़क या रास्ते पर अपनी मंजिल तय करना हर बार आसान तो नहीं। मान लीजिए आप कार चला रहे हैं कभी कार ठीक ठाक सी सपाट सड़क से गुज़रती है तो कभी सड़क राजपथ का रूप धर लेती है और गाड़ी मक्खन सी उस रास्ते पर फिसलती हुई आगे बढ़ती जाती है और कभी ऐसे ही गतिरोधक यानि स्पीड ब्रेकर गाड़ी की रफ्तार को थाम लेते हैं। फिर स्पीड ब्रेकर के चरित्र भी तरह तरह के होते हैं, पता ही नहीं चलता अचानक उबड़ खाबड़ सा झटकेनुमा रूप धरे बीच सड़क पर आ खड़ा होता है कि आप जबरदस्त झटका खा जाते हैं। और कभी बाकायदा सफेद पट्टियों से दूर से ही बताते हुए कि मैं यहाँ हूँ, आराम से गुजरें, तो आप शांति से ऐसे अवरोधों को पार कर लेंगे। सड़क का काफी लम्बा हिस्सा ऐसा भी होता है जिसमें जगह जगह छोटे, बड़े, गहरे, कम गहरे गड्ढ़े सड़क की रौनक बढ़ा रहे होते हैं। आप ज़िगजैग ड्राइव कितना भी करें गड्ढे से फिर भी बचना मुश्किल हो जाता है और कभी डायवर्जन की वजह से आप कहीं और पहुँच जाते हैं आप का सफर लम्बा होता जाता है।

सड़क कभी उबड़ खाबड़, या टूटी हुई होती है पर रास्ते और चाहें कितने भी टेढ़े मेढ़े क्यों न हो, चलना तो इन्हीं रास्तों पर पड़ता ही है। सड़क की यही फितरत है आप चाहे सड़क पर चलते हुए कितना ही खुश हो या कुढ़ें या स्वयं को बेबस महसूस करें पर सड़क का दर्शन जीवन दर्शन से कम नहीं है। जीवन पथ पर चलते हुए कई बार राहें आसान होती हैं लगता है दो हाथ लगे और नैया पूर्ण पार हुई, तो कई बार मुश्किल भरी होती है। आप चलते कहीं के लिए हैं तो पहुँच कहीं जाते हैं। आपके महत् कार्यों की राह में कभी अचानक स्पीड ब्रेकर ऐसे आ जाता है कि आपको न चाहते हुए भी अपनी रफ्तार धीमी करनी पड़ती है या रूकना पड़ता है। तरह तरह के विरोध के गड्ढे हैं जिन्हें आपको पार करना ही है। आपके रास्ते में रूकावट लाल बत्ती लिए भी आती है, बदकिस्मती से अगर वह लाइट खराब हो तो करते रहिए इंतजार उसके हरे होने का। रूकना, चलना, बढ़ना, रफ्तार जीवन में आपके सुकून, व्याकुलता, बेबसी, निश्चलता, शांति, सब्र, हौसले का

इम्तिहान भी साथ साथ लेती चलती है। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की पंक्तियों में भी यही संदेश हमें मिलता है।

चलता ही जाता हूँ मैं निरंतर,
मंजिल है कहाँ बताए खुदा
जिस शांति, सत्य और ज्ञान की खोज में
चलता ही रहा, चलता ही रहा
वह शांति, सत्य वह ज्ञान अभी नहीं मिला।
ऐ खुदा सुन ये दुआ मैं रहूँ या
न रहूँ पर यह सफर जारी रहे।

चलना तो है ही सड़क पर भी जीवन में भी। इसके सभी पहलुओं को आत्मसात करते हुए ही आगे बढ़ना यही जीवन की चुनौती है। यह आपका कौशल है कि आप किस कौशल से सभी तरह के रास्तों से पार होते हैं। चलना ही जीवन है।

तो चलते चलते 'मौसम मंजूषा' के इक्कीसवें पड़ाव पर आ पहुँचे। 'मौसम मंजूषा' के नवीन अंक की ओर भी हम बढ़े और सदैव की भाँति हमें पाठकों का सहयोग मिला। अपनी भाषा में अपनी बात कहने का और बल मिला। पूरे भारत वर्ष में फैले मौसम के कार्यालयों से हमें और भी अधिक रचनाएँ मिलने लगी। नए लेखक भी जुड़े। साथियों ! मौसम की इस मंजूषा में विविध रंग भरने के प्रयास किए गए हैं, आशा है पाठकों को पसंद आएंगे। चाय पर चर्चा करते हुए अंडमान निकोबार विशाखापट्टनम की यात्रा का आनंद लीजिए। दूरसंचार तकनीक ने किस प्रकार समाज की धारा में नव संचार किया है इसे जानिए लेख दूरसंचार में नवसंचार, चक्रवात के विशेष प्रेक्षणों के दौरान हुए अनुभव से भी आप गुजरेंगे। मन को आह्लादित कर देने वाली कविताएँ भी आपको पढ़ने को मिलेंगी। कुल मिलाकर बात यही है कि आपके मन की बात आपकी अपनी भाषा के शब्दों के पंख लेकर एक लंबी उड़ान भरती है आसमान में ऊँचे और ऊँचे उड़ने के लिए---

यह उड़ान जारी रहेगी ।

शुभकामनाओं सहित

31/08/15

**(रेवा शर्मा)**

# अनुक्रमणिका


**• वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार**

❖ स्पेशल ऑब्जरवेशन्स (हुदहुद) 08
• *प्रकाश चिंचोले*

❖ अल-नीनो और ला-नीना 14
• *पोषण लाल देवांगन*

❖ दूरसंचार में नवसंचार 18
• *आर.एस.चौरिशी*

❖ बंजर धरती और जल चेतना 21
• *डॉ गुरुदत्त मिश्रा*

**• साहित्यिक बहार**

❖ उसने कहा था 25
• *चंद्रधर शर्मा गुलेरी*

**• यादों के झरोखे से**

❖ जलवायु और वन संपदा 36
• *डॉ. रंजन केलकर*

❖ मौसम की कुछ विशेषताएँ 40
• *जी. आर. गुप्ता*

**• काव्य फुहार**

❖ मौसम का हाल 46
• *विजय घई*

❖ दो छंद 46
• *नीलोत्पल चतुर्वेदी*

❖ यह जिंदगी 47
• *सुनंदा गाबा*

❖ जिन्दगी ♦ जिस्म 48
• *डी.पी संधोकर*

❖ लाडली बेटी है ये हिंदी 48
• *विलास पठारे*

❖ सरकारी नौकरी 49
• *कृष्ण कुमार गुप्ता*

❖ एक मेरी मां, एक मैं मां 50
• *सुषमा*

❖ गज़ब 51
• *डी. एस. गायकवाड*

❖ प्रभाकर 51
• *सुमन चट्टोपाध्याय*

❖ दोहे 52
• *अशोक कुमार कश्यप*

❖ तू तो नारी है 53
• *अपूर्वा सिंहरौल*

❖ क्यों न सुधारे अपनी मति को 53
• *आसिया आसिफ भट्ट*

**• यात्रा वृत्तांत**

❖ अंडमान निकोबार में बिताए वे दिन 54
• *रामहरि शर्मा*

❖ आइए विशाखापट्टनम का भ्रमण करें 61
• *कु.वै.बालसुब्रमणियन*

**• सामान्य लेख**

❖ डॉ भीम राव अंबेडकर 68
• *उदय प्रताप सिंह*

❖ बदलाव जरुरत - विचार पूरक 72
• *डॉ. प्रकाश खरे*

❖ चाय पर चर्चा 75
• *पूनम सिंह*

❖ कूड़े के ढेर के नीचे कराहती धरती 80
• *अंजुलता विक्रम शर्मा*

❖ विविधता में एकता 83
• *आर. बी. एस. नारायण*

**• रहस्य**

❖ पुनर्जन्म 87
• *प्रीति श्रीवास्तव*

❖ *खास खबर* 91

❖ *संसदीय राजभाषा समिति –निरीक्षण* 101

*वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार*

# SSSS - स्पेशल ऑब्जरवेशन्स (हुदहुद) एक प्रेक्षक के दृष्टिकोण से

❖ *प्रकाश चिंचोले*

**यादों में (स्पेशल ऑब्जरवेशन्स)**

नज़दीकी मौसम केंद्र से एक तार संदेश आता है, स्पेशल ऑब्जरवेशन्स जो लेने हैं। आमतौर पर सामान्य मौसम में AAXX संदेश भेजे जाते हैं, लेकिन यह तो, स्पेशल ऑब्जरवेशन्स हैं। जानकारी को अपडेटेड रखने के लिए "कोड बुक" फिर निकाली गई।

रात भर तेज़ हवाएँ, तेज़ बारिश। ऑफ़िस सप्लाई के नाम पर सिर्फ एक फटा रेनकोट, गमबूट, एक छतरी और मध्यम रोशनी देती एक टॉर्च, जैसे जीवन उपयोगी सामग्री का रोल निभा रहे थे । एक साधारण सी बारिश में भी जब रेनकोट से पानी अंदर रिसता हो तो ऐसी भारी बारिश में क्या हाल होता होगा, अंदाज़ा तो लगाया जा सकता है। रेनकोट के ऊपर छाता, लेकिन तेज़ हवाओं में इसे संभालते हुए, एनिमोमीटर रीडिंग के लिए हिलती- डुलती सीढ़ी से रात के अंधेरे में छत पर जाना, किसी सर्कस के करतब से कम नहीं था।

पूरी रात, हर घंटे, टूटी-फूटी सीढ़ी से छत पर जाना, बुरी तरह गीला होकर काम को अंजाम तक पहुँचाना, वह भी अंधेरे में, जब आसपास कोई नज़र भी न आता हो, कठिन ही था। ऐसे समय में टेलीफ़ोन ने भी साथ छोड़ दिया कुछ समय के लिए । संदेश न मिलने की वज़ह से, सुबह-सुबह तहसीलदार भी आंकड़े लेने पहुंचे। जानकारी के अभाव में वे भी विचलित थे। रात भर तकलीफों के साथ हम में हनत से काम करते रहे और सुबह-सुबह दो बातें भी सुनें, अवस्था व्यक्त न करें तो ज्यादा अच्छा है। आखिर उन्हें भी तो ये आंकड़े ऊपर तक पहुंचाने थे। वर्षा से पूरी तरह तर-बतर, गीली अवस्था में वेधशाला में आकर कागज़ों पर इन प्रेक्षणों को एकत्रित करते हुए इसे संदेश बनाकर, जब तक यह निकटतम मौसम केंद्र में आगे का रास्ता पार करने के लिए प्रेषित नहीं होता, शायद काम पूरा होते हुए भी शून्य बनकर रह जाता।

उपर्युक्त वर्णन, मेरे मौसम सेवा काल के दौरान, पोरबन्दर स्थित मौसम कार्यालय में रहते हुए,1996 में अरब सागर पर बने भीषण चक्रवात,जो 19/06/1996 को गुजरात तट के दीव के आसपास जमीन से टकराया (लैंडफॉल) था। यह वाकया उसी से जुड़े प्रेक्षण से सम्बंधित है। चक्रवात के बाद 'पोस्ट चक्रवात सर्वेक्षण रिपोर्ट' तैयार करने वाली टीम को उपर्युक्त जानकारी भी बताई गई थी।कुछ जानकारियाँ दर्ज़ हो जाती हैं तो कुछ छूट भी जाती हैं।

❖ ***मौसम विज्ञान के महानिदेशक के कार्यालय में सहायक मौसम विज्ञानी के पद पर कार्यरत हैं***

## अत्यंत भीषण चक्रवात हुदहुद (07 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2014)

निम्न वायु दाब क्षेत्र ने अवदाब, फिर गहन अवदाब की तीव्रता हासिल करके चक्रवाती तूफान का रूप लिया और इस तरह हुदहुद का सफर शुरू हुआ। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने इस पर अपनी तेज नज़र बनाए रखी | भारतीय महासागर पर प्रेक्षण 07 अक्टूबर से शुरू कर दिया गया था। इनसैट उपग्रह से प्राप्त चित्रों के माध्यम से इसके केंद्र का निश्चित स्थान पता लगाया जाता है। केंद्र के आसपास, समुद्र में चलने वाले जहाज़ों तथा BUOY प्रेक्षणों से, समुद्री सतह पर चक्रवात के केंद्र के सटीक स्थान को तय करने में काफ़ी सहायता मिलती है।

धीरे-धीरे वह समय आ गया जब, हुदहुद चक्रवात विशाखापट्टनम के रेडार के सीमा क्षेत्र में आ गया। हर घंटे लगातार इससे प्राप्त चित्र और संदेश मिलते रहे, लेकिन अचानक 11.00 के बाद संकेत मिलने बंद हो गए। 04:51 UTC का अंतिम रेडार चित्र ही मिल सका। पता चला कि तेज़ हवाओं की वज़ह से रेडार क्षतिग्रस्त हो गया था। अब बारी थी,स्पेशल ऑब्जरवेशन्स की। एक चक्रवाती तूफान जब तट के करीब आता है, रेडार से अनुमानित तीव्रता और उपग्रह से अनुमानित तीव्रता दोनों को देखा जाता है। लेकिन जब चक्रवाती तूफान तट पार करने के लिए या भूमि की सतह पर बहुत करीब होता है, तटीय प्रेक्षण को, जो SSSS - स्पेशल ऑब्जरवेशन्स के रूप में मौसम केन्द्रों पर प्राप्त होते हैं, तीव्रता का आकलन करने के लिए रेडार और उपग्रह प्रेक्षणों की तुलना में इन्हें सर्वोच्च वरीयता दी जाती है।

इसमें मौसम केंद्र विशाखापट्टनम, टुनी, नरसापुर, काकीनाड़ा, कलिंगपटनम जैसे स्टेशनों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। एक-एक प्रेक्षण काफी महत्वपूर्ण साबित हो रहा था। कुछ स्टेशनों से जानकारी टेलीफोन पर भी मांगी जा रही थी। तो कुछ स्टेशनों से संपर्क भी नहीं हो पा रहा था। इन स्टेशनों से प्रेक्षण प्राप्त करते समय मुझे मेरे द्वारा लिए गए प्रेक्षण की यादें दृश्य पटल पर ताज़ा हो आई थी । मैं अनुभव कर पा रहा था कि इन स्टेशनों पर मेरे सहकर्मी किन कठिन स्थितियों में कार्य कर रहे होंगे।

चक्रवात चेतावनी प्रभाग में कार्य करते हुए 2014 में 07 अक्टूबर से 14 अक्टूबर के दौरान बंगाल की खाड़ी पर बने हुदहुद चक्रवात के दौरान 12 अक्टूबर को विशाखापटनम के समीप जमीन से टकराते समय हर घंटे समय समय पर जानकारी को अपडेट करना, उसके ट्रैक बनाना, उसे वेब साइट पर अपलोड करना, प्रेक्षक के दृष्टिकोण से देखना, एक अच्छा अनुभव मिला है। स्थान, समय, परिस्थिति के अनुसार सभी के अनुभव अलग-अलग होते हैं। ऐसे भी प्रेक्षक होंगे, जो इससे भी बुरे अनुभव से गुज़रे होंगे, कल्पना की जा सकती है।

## इन्ही तूफ़ानी हवाओं ने काम करने की हमारी क्षमता को बढ़ाया

अब पता चला, तटीय प्रेक्षण- स्पेशल ऑब्जरवेशन्स की वास्तव में कद्र की जाती है। शायद इसीलिए

वे स्पेशल ही हैं। वे भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने इन्सैट चित्र और रेडार प्रेक्षण होते हैं। इसका वास्तविक चित्र अब नज़र आने लगा था।

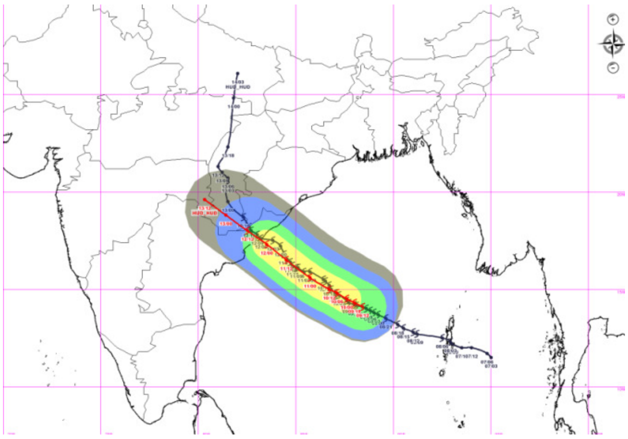

*हुदहुद चक्रवात का ट्रैक (07 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2014)*

ज़मीनी स्तर से ऊपर अर्थात चक्रवातीय प्रणाली के ऊपरी सतह की जानकारी इन्सैट चित्र या कई संख्यात्मक मौसम पूर्वानुमान मॉडल के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है लेकिन ज़मीनी स्तर पर वास्तविक चित्र तो यही स्पेशल ऑब्जरवेशन्स बयान करते हैं। रेडार, AWS जैसे स्टेशन इतनी तूफानी हवाओं में जमीं पर आ जाते हैं, तो उस मानव का क्या हाल होता होगा जो इस काम को अंजाम देते हैं। शायद एक मानव रहित और मानव सहित प्रेक्षण में यही फर्क है। दूर दराज़ के क्षेत्रों में जहाँ एक प्रेक्षक अपनी सभी मुसीबतों को भूल कर अपनी सेवाएं प्रदान करता है, काबिले तारीफ है। इस देश ने,इस विभाग ने, एक प्रेक्षक के रूप में आजीविका दी है। भले ही किसी रिपोर्ट में इसका उल्लेख छूट जाए, पूरी ज़िम्मेदारी से इसे पूरा करना ही हर प्रेक्षक का लक्ष्य होना चाहिए, चाहे उसका श्रेय मिले या न मिले । मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देकर, आपदाओं से निपटने में जान-माल की रक्षा करना, एक सराहनीय कदम है। यही मेरा स्पेशल ऑब्जरवेशन है।

*अत्यंत भीषण चक्रवात हुदहुद के तटीय प्रेक्षणों का चित्र*

**अन्य उल्लेखनीय जानकारियाँ :**

हुदहुद चक्रवात के समय विशेष तौर पर हर घंटे अपडेट शुरू किए गए

दिनांक 12.10.2014 (13:30 IST) को जारी किए गए एक संदेश का प्रारूप :

| बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना अत्यंत भीषण चक्रवात हुदहुद- हर घंटे अपडेट | |
|---|---|
| तारीख / समय (भारतीय मानक समय): | 12.10.2014 (13:30 IST) |
| स्थिति : अक्षांश / देशांतर: | 17.7 0N / 83.1 0 E |
| विशाखापट्टनम से दूरी: | विशाखापट्टनम के बहुत करीब |
| जमीन से टकराना (लैंडफॉल) : | सिस्टम विशाखापट्टनम तट को करीब से पार कर रहा है |
| वर्तमान हवा की गति: | 170-180 किमी प्रति घंटे/झोंका 195 किमी प्रति घंटे तक |
| लैंडफॉल की अवधि: | लगभग एक घंटे के अंदर चक्रवात का केंद्र (आँख) भूमि की सतह के ऊपर होगा |

चक्रवात का केंद्र (आँख) भूमि की सतह के ऊपर स्थित है। इस क्षेत्र में एक अस्थायी अवधि के लिए जो लगभग आधे घंटे से एक घंटे के लिए हो सकता है, साफ मौसम का अनुभव होगा। उसके बाद फिर से विनाशकारी मौसम का अनुभव होगा। हवा की दिशा में उत्क्रमण के साथ, 170 -180 किमी प्रति घंटे की तेज हवा के साथ, झोंका 195 किमी प्रति घंटे तक अनुभव किया जा सकता है। इसलिए तब तक लोगों को सुरक्षित स्थान पर रहना चाहिए।

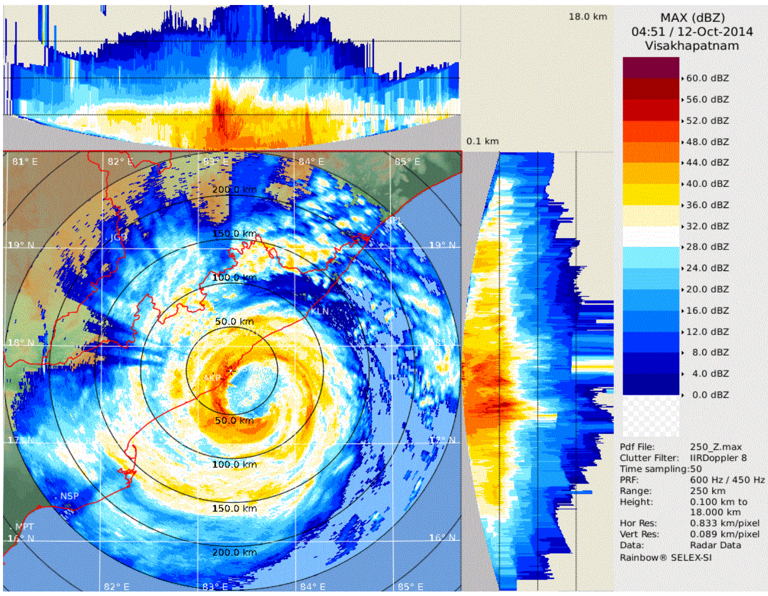


*हुदहुद चक्रवात : विशाखापट्टनम से प्राप्त रेडार चित्र (07 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2014)*

## हुदहुद चक्रवात के पूर्वानुमान की सफलता भी बयान करती है अपनी एक कहानी

चक्रवात चेतावनी प्रभाग ने वर्ष 2013 के दौरान उत्तरी हिंद महासागर के ऊपर चक्रवातीय विक्षोभ का ब्यौरा देते हुए एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। चक्रवात चेतावनी प्रभाग हर वर्ष रिपोर्ट प्रकाशित करता है, उसे वेबसाइट पर अपलोड किया जाता है। वर्ष 2013 चक्रवातीय विक्षोभ गतिविधियों में वृद्धि के कारण अपने आप में एक अद्‌वितीय वर्ष रहा। बंगाल की खाड़ी में पांच चक्रवात विकसित हुए। अत्यंत भीषण चक्रवाती तूफान- पिलिन,12 अक्टूबर 2013 को ओडिशा तट को पार कर गया। भारत मौसम विज्ञान विभाग द्‌वारा चक्रवात संबंधी सही ट्रैक, तीव्रता और लैंडफॉल के प्रभाव की सटीक भविष्यवाणी चक्रवात प्रबंधन में काफी उपयोगी रही है। उल्लेखनीय है कि इसके कारण निम्नतम लोगों के हताहत होने के संकेत मिलते हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग द्‌वारा अत्यंत भीषण चक्रवाती तूफान- पिलिन की बहुत अच्छी भविष्यवाणी की जिसने 12 अक्टूबर को ठीक एक वर्ष पहले ओडिशा के गोपालपुर के पास लैंडफॉल किया था, उसके बाद, 2014 में अत्यंत भीषण चक्रवाती तूफान 'हुदहुद' की स्टीक भविष्यवाणी एक और सफलता की कहानी बयान करती है ।

## प्रशंसा भरे कई खत

पिलिन तथा हुदहुद की सफलता के बाद ,प्रशंसा भरे कई खत लगातार प्राप्त हो रहे हैं । प्रधानमंत्री जी ने दिनांक 14 अक्टूबर को दिए अपने भाषण में कहा था, जिसका विशेष तौर पर उल्लेख किया जा रहा है-

"इस Cyclone में Technology का बहुत ही Perfect उपयोग हुआ, पहले दिन से ही। इस Cyclone में मौसम विभाग ने Technology का बखूबी उपयोग किया और 6 तारीख से ही ये संकेत दे दिए गए थे। जो अनुमान थे, उतनी ही Velocity रही। जो दिशा थी अनुमानित, वही दिशा रही। जो अनुमानित Time था, वही Time रहा। और एक प्रकार से इस संकट से बचने में ये Technology का उपयोग भी काफी काम आया।"

.. यह हमारा हौसला बढ़ाने में अवश्य सहायक सिद्ध होगा।

दक्षिणी अंडमान सागर पर केंद्रित इस चक्रवातीय प्रणाली के ऊपर मौसम विभाग ने 7 अक्टूबर से कड़ी नजर रखी हुई थी। अवदाब की तीव्रता, अत्यंत भीषण चक्रवाती तूफान में बदलने तथा 12 अक्टूबर को लैंडफॉल की जगह विशाखापट्टनम के आस-पास होने की भविष्यवाणी कर दी गई थी। 3 से 5 दिन की पर्याप्त समय सीमा और पूर्वानुमान की सटीकता में विश्वास के कारण, केंद्रीय और राज्य एजेंसियों की आपदा तैयारियों में चक्रवात के विशाखापट्टनम तट के पास पहुंचने से पहले ही, पूर्व चेतावनी अच्छी तरह से मददगार साबित हुई।

मौसम विभाग से सेवानिवृत्त महानिदेशक, एयर वाइस मार्शल श्री अजित त्यागी कहते हैं,

"हुदहुद की निगरानी और भविष्यवाणी में शामिल सभी को बधाई, विशेषतः मुख्यालय (मौसम भवन) में विशेष रूप से चक्रवात चेतावनी प्रभाग, चक्रवात चेतावनी केंद्र, विशाखापट्टनम और भुवनेश्वर तथा भारत मौसम विज्ञान विभाग और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सफल नेतृत्व को बधाई"। वे कहते हैं, "संख्यात्मक मौसम पूर्वानुमान मॉडल (आई.एम.डी, NCMRWF और अन्य केंद्रों) से प्राप्त जानकारियों ने,भविष्यवाणी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आईआईटी भुवनेश्वर और SHAR ने भी जानकारियों का आदान प्रदान किया हैं, विशेष उल्लेखनीय हैं। आईआईटी दिल्ली, INCOIS, और प्रोफेसर दुबे ने भी तूफान के पूर्वानुमान में सहयोग दिया है। यह चक्रवात चेतावनी प्रभाग द्वारा समन्वित टीम वर्क का वास्तव में एक बहुत अच्छा उदाहरण है। 2008 में FDP समूह शुरू कर दिया था, वह अभी भी सक्रिय हैं। चक्रवात पूर्वानुमान में और अधिक सुधार करने के लिए और अधिक वैज्ञानिकों, समूहों और संस्थाओं को सक्रिय रूप से इस FDP समूह में भाग लेते हुए अनुसंधान कार्य को साझा करना चाहिए"। प्रोफ़ेसर यू एस मोहंती के अनुसार "प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, हमारी मॉडलिंग क्षमताओं और हमारे बुनियादी ढांचे में काफी सुधार किए गए हैं, वे दिन अब ख़त्म हो चुके हैं जब एक चक्रवात से मारे जाने वालो की संख्या हजारों में होती थी"।

1999 के उड़ीसा महाचक्रवात के लिए,मौसम विभाग द्वारा मात्र 24 घंटे पहले चेतावनी जारी की गई थी, इसके विपरीत हुदहुद के लिए, सटीक और विस्तृत चेतावनियों को पांच दिन पूर्व ही जारी कर दिया गया था। इंडियन एक्सप्रेस के साथ वार्तालाप में, चक्रवात चेतावनी प्रभाग के वैज्ञानिक डॉ एम. महापात्र का वक्तव्य के अनुसार, "हम लगातार चक्रवात पूर्वानुमान और चेतावनियों में सुधार कर रहे हैं। हर चक्रवात के बाद, हम अपने पूर्वानुमान में त्रुटि मार्जिन और वास्तविक घटना की गणना करते हैं। यह त्रुटि अब हर वर्ष कम होने लगी है"।

***सन्दर्भ : RSMC रिपोर्ट्स, चक्रवात चेतावनी प्रभाग, प्रादेशिक विशेषीकृत मौसम केंद्र , नई दिल्ली***

***(चक्रवात चेतावनी प्रभाग के सहयोग से )***

----------------

***आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर आप अपनी आदतें बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देंगी।***

***- अब्दुल कलाम***

वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार

# अल-नीनो और ला-नीना

❖ पोषण लाल देवांगन

यह सच्ची बात है कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है। यहाँ की जनसंख्या का लगभग 70% भाग कृषि कार्य और कृषि-जन्य उद्योगों में जुड़ा है। कृषि ही यहाँ का जीवनाधार है। कृषकों को हम अन्नदाता कहते हैं तथा  कृषि के लिए महत्वपूर्ण तत्वों मिट्टी और पानी को क्रमशः धरती माता और जल देवता के रूप में पूजा जाता है। हमें ज्ञात है कि हमारे देश में कृषि कार्य और अन्न उत्पादन के लिए जल मुख्यतः मॉनसूनी वर्षा से प्राप्त होता है। इसके अलावा भू-जल के पुनर्भरण के लिए भी मॉनसूनी वर्षा अत्यंत आवश्यक है। भारत मौसम विज्ञान विभाग की रिपोर्ट के अनुसार देश में वार्षिक वर्षा का लगभग 80% भाग मॉनसून काल (जून से सितम्बर) में प्राप्त होता है। अतएव भरपूर अन्न उत्पादन के लिए पर्याप्त वर्षा के साथ ही मॉनसून की भरपूर क्रियाशीलता आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि कृषि और मॉनसून का चोली दामन का साथ है। विभिन्न संगठनों द्वारा मॉनसून आगमन के पूर्व इसका पूर्वानुमान जारी किया जाता है जो कृषकों व कृषि व्यवसाय से जुड़े संगठनों के लिए उत्सुकता का विषय होता है। आगामी ऋतु में फसल उत्पादन के भरपूर होने या न होने अर्थात मॉनसूनी वर्षा की पर्याप्तता या अन्न उत्पादन के लिए मौसम की अनुकूलता का अनुमान इसी मॉनसून पूर्वानुमान से किया जा सकता है। भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा दीर्घ-अवधि पूर्वानुमान के तहत मॉनसून पूर्वानुमान के द्वारा आगामी मॉनसून की क्रियाशीलता का पूर्वानुमान आंकड़ों के साथ जारी किया जाता है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग ने वर्ष 2014 में वक्तव्य दिया था कि भारत में अल नीनो फैक्टर के सक्रिय होने के कारण मॉनसून सामान्य से कम रह सकता है। एक बयान जारी कर कहा गया था कि, "मॉनसून के मौसम में इस बार पहले के मुकाबले करीब 95 फ़ीसदी बारिश होने की संभावना है। इसमें 5 प्रतिशत की घट बढ़  हो सकती है। " हालांकि भारतीय कृषि विशेषज्ञों ने सरकार को सलाह दी थी कि वह इससे जुड़ी कोई चेतावनी जारी न करे। इस संबंध में रेटिंग एजेंसी 'क्राइसिल' के मुख्य अर्थशास्त्री डी. के जोशी ने कहा था कि "सामान्य स्तर से कम बारिश का मतलब सूखा नहीं होता। ज्यादा फर्क इस बात से पड़ता है कि पूरे देश में बारिश एक समान होती है या नहीं। हम चिंता तो करें  लेकिन साथ ही आने वाली परिस्थिति के लिए तैयार भी रहें, ताकि अचानक किसी तरह की घबराहट का सामना न करना पड़े।" समाचार एजेंसी पीटीआई के अनुसार कृषि लागत और मूल्य आयोग के

❖ *मौसम केंद्र- रायपुर में सहायक मौसम विज्ञानी के पद पर कार्यरत हैं*

पूर्व प्रमुख अशोक गुलाटी ने कहा था, "अल-नीनो से हमें सतर्क रहने की और आने वाली परिस्थितियों के लिए तैयार रहने की आवश्यकता तो है लेकिन आतंकित होने की जरूरत बिलकुल नहीं है, क्योंकि वर्ष 1997 में भी अल-नीनो फैक्टर सक्रिय हुआ था मगर इसके प्रभाव से देश सफलतापूर्वक बाहर निकल आया था।

वर्ष 2014 में मॉनसून के गुजर जाने के बाद भारत मौसम विज्ञान विभाग की रिपोर्ट में बताया गया कि देश में मॉनसूनी वर्षा औसत वर्षा के 94% रही जो अल-नीनो का ही दुष्प्रभाव प्रतीत होता है । इसी तरह पिछले कुछ वर्षो में से वर्ष 1972, 1976, 1982, 1987, 1991, 1994, 1997, 2002-03, 2004-05, 2006-07, 2009-10 और 2014 में व्यापक रूप से अल–नीनो का प्रभाव दर्ज किया गया जिसमें वर्ष 1982-83 तथा 1997-98 में इस घटना का दुष्प्रभाव सर्वाधिक रहा है। अतएव हम कह सकते हैं कि जब भी मॉनसून के कमजोर होने की बात आती है तो यह मुख्यतः अल-नीनो के दुष्प्रभाव से होती है। ऐसे में जनमानस में अल-नीनो के बारे में जानने की उत्सुकता जाग उठती है। आइये जानते है कि ये अल-नीनो और ला-नीना कैसी प्राकृतिक घटना है और मॉनसून को किस तरह प्रभावित करती है।

स्पैनिश शब्द अल-नीना का शाब्दिक अर्थ है छोटा बालक। इसका यह नामकरण पेरू के मछुआरों द्वारा बालक ईसा के नाम पर किया गया है क्योंकि इसका प्रभाव सामान्यतः क्रिसमस के आसपास अनुभव किया जाता है। ला-नीना भी स्पैनिश भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है छोटी बालिका। इसका प्रभाव अल-नीनो के विपरीत होता है इसलिए इसे प्रति अल-नीनो भी कहा जाता है। आरंभ में, दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तटीय देश पेरू एवं इक्वेडोर के समुद्री मछुआरों द्वारा प्रतिवर्ष क्रिसमस के आसपास प्रशांत महासागरीय धारा के तापमान में होने वाली वृद्धि को अल नीनो कहा जाता था। किंतु आज इस शब्द का उपयोग उष्ण और शीत कटिबंधीय क्षेत्र में केन्द्रीय और पूर्वी प्रशांत महासागरीय जल के औसत सतही तापमान में कुछ अंतराल पर असामान्य रूप से होने वाली वृद्धि और इसके परिणामस्वरूप होने वाले विश्वव्यापी प्रभाव के लिए किया जाता है।

अल-नीनो और ला-नीना ऐसी मौसमी परिस्थितियाँ हैं जो प्रशांत महासागर के पूर्वी भाग अर्थात दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तटीय भागों में महासागर की सतह पर पानी का तापमान अक्रमिक रूप से बढ़ने-घटने के कारण पैदा होती है। प्रशांत महासागर में समुद्री जलसतह के ताप-वितरण में अंतर तथा सागर तल के ऊपर से बहने वाली हवाओं के बीच अंतक्रिया का परिणाम ही अल-नीनो है। इस भौगोलिक चक्र में गरम जलधारा वाली स्थिति अल-नीनो तथा ठंडी जलधारा की स्थिति ला-नीना होती है। यह जलवायु तंत्र की एक ऐसी बड़ी घटना है जो मूल रूप से भूमध्यरेखा के आसपास प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में होती है किंतु पृथ्वी के सभी जलवायवीय चक्र इससे प्रभावित होते हैं।

अल-नीनो की भौगोलिक संरचना को समझने के लिए एक अन्य प्रक्रिया 'दक्षिणी दोलन को समझना आवश्यक है । यह एक प्रकार की वायुमंडलीय दोलन अवस्था है जिसमें प्रशांत महासागर और

हिंद महासागर क्षेत्र के वायुदाब में विपरीत स्थिति पाई जाती है । वर्ष 1923 में भारत मौसम विभाग के अध्यक्ष सर गिलबर्ट वॉकर ने पहली बार यह बताया कि जब प्रशांत महासागर में उच्च दाब की स्थिति होती है तब अफ्रीका से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक हिंद महासागर के दक्षिणी भाग में निम्न दाब की स्थिति पाई जाती है। दूसरी स्थिति में इसके विपरीत दाब स्थिति बन जाती है। यह घटना दक्षिणी गोलार्द्ध में होती है तथा लगभग क्रमिक रूप से विपरीत दाब स्थिति बनाती रहती है, इसलिए उन्होंने इसे दक्षिणी दोलन का नाम दिया। दक्षिणी दोलन की अवस्था की माप के लिए 'दक्षिणी दोलन सूचकांक' का प्रयोग किया जाता है। इस सूचंकाक की माप के लिए डारविन, ऑस्ट्रेलिया, ताहिती एवं अन्य केंद्रों पर समुद्री सतह पर वायुदाब मापा जाता है। इसका ऋणात्मक मान अल-नीनो की स्थिति होती है जबकि धनात्मक मान ला-नीना की स्थिति दर्शाता है। अल-नीनो तथा दक्षिणी दोलन की संपूर्ण घटना को एक साथ "अल-नीनो द साउथ ऑसीलेशन" (ENSO) कहा जाता है जिसका चक्र 3 से 7 वर्ष के बीच होता है। वर्ष 1969 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जैकॉब व्येरकेंस ने अल-नीनो से सम्बंधित मौसम विज्ञान तथा इसके भौगोलिक विस्तार का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया ।

इसका विस्तार क्षेत्र 3° दक्षिण से 18° दक्षिण अक्षांश तक तथा इन्डोनेशियाई द्वीप क्षेत्र में लगभग 120° पूर्वी देशांतर से 80° पश्चिमी देशांतर अर्थात मेक्सिको और दक्षिण अमेरिकी पेरू तट तक, संपूर्ण उष्ण कटिबंधीय प्रशांत महासागर में फैला है ।

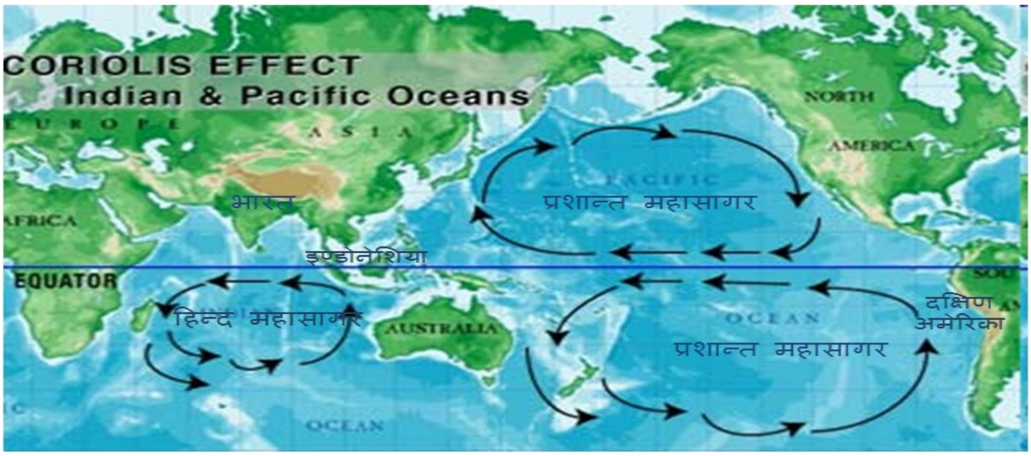


***चित्र : हिंद महासागर और प्रशांत महासागर में व्यापारिक पवनों के बहाव की दिशा***

अल-नीनो एक गरम जलधारा वाली घटना है जिसका प्रभाव दक्षिणी गोलार्द्ध में प्रशांत महासागर तथा हिंद महासागर पर वायु दाब को सामान्य से कम कर देता है। दूसरी ओर भारतीय उपमहाद्वीप में ग्रीष्म ऋतु में निम्न वायुदाब निर्मित रहता है। अतएव उपर्युक्त वर्णित दोनों क्षेत्रों के बीच वायु दाब का अंतर सामान्य की अपेक्षा कम हो जाता है। इससे भारतीय क्षेत्र के आसपास भूमध्य रेखीय क्षेत्र पर पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली व्यापारिक पवनों (मॉनसूनी हवाओं) की गति भी कम हो जाती है जो मॉनसून को कमजोर करने के लिए पर्याप्त होता है। इस स्थिति में भारतीय प्रायद्वीप में अल्पवर्षा, सूखे आदि की स्थिति देखी जाती है। इसके विपरीत ला-नीना की स्थिति में ठंडी जलधाराओं

के बहने के कारण दक्षिणी प्रशांत व हिंद महासागर में वायु दाब और अधिक हो जाता है। यह भारतीय उपमहाद्वीप पर निर्मित कम वायु दाब के साथ अपेक्षाकृत अधिक दाबांतर निर्मित करता है जो व्यापारिक पवनों की गति में वृद्धि करने के साथ ही अधिक मात्रा में नमी प्रवाहित करता है। फलस्वरूप भारतीय प्रायद्वीप में सामान्य से अच्छा मॉनसून रहता है। अल-नीनो का जैविक दुष्प्रभाव भी देखा गया है। अल-नीनो की स्थिति में समुद्री जल का तापमान सामान्य से अधिक रहने से जल में जलीय जीव जंतुओं के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थ व ऑक्सीजन में कमी आ जाती है। इससे जलीय जीव जंतुओं के सामान्य जीवन में व्यवधान के साथ ही कुछ समुद्री जीवों का जनन कार्य लगभग रुक-सा जाता है तथा अनेक वयस्क पक्षी व मछलियों की मृत्यु भी हो जाती है।

अल नीनो की उत्पत्ति का उचित कारण अब तक खोजा नहीं जा सका है। गुरूत्वाकर्षण के सिद्धांत की तरह ही दक्षिणी दोलन एक सिद्ध घटना है किंतु इसका कारण अज्ञात है। अल-नीनो घटित होने के संबंध में भी कई सिद्धांत मौजूद हैं लेकिन कोई भी सिद्धांत या गणितीय मॉडल अल-नीनो के आगमन की सटीक भविष्यवाणी नहीं कर पाता। आँधी या वर्षा जैसी घटनाएँ चूँकि अक्सर घटती हैं इसलिए इसके बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध है और इसके आगमन की भविष्यवाणी भी लगभग सटीकता के साथ कर ली जाती है किंतु चार-पाँच वर्षों में एक बार आने वाले अल-नीनो के बारे में मौसम विज्ञानी पर्याप्त समय रहते इसके आगमन का अनुमान नहीं लगा पाते। एक बार इसके घटित होने का लक्षण मालूम पड़ जाए तो अगले 6-8 महीनों में इसकी स्थिति को आँका जा सकता है। ला-नीना यानी समुद्र तल की ठंडी तापीय स्थिति आमतौर पर अल-नीनो के बाद आती है किंतु यह जरूरी नहीं कि दोनों बारी-बारी से ही आए । एक साथ कई अल-नीनो भी आ सकते हैं। अल-नीनो के पूर्वानुमान के लिए जितने प्रचलित सिद्धांत हैं उनमें एक यह मान्यता है कि भूमध्य सागर क्षेत्र में संचित ऊष्मा एक निश्चित अवधि के बाद अल-नीनो के रूप में बाहर आती है। इसलिए समुद्री ताप में हुई अभिवृद्धि को मापकर अल-नीनो के आगमन की भविष्यवाणी की जा सकती है।

एक दूसरी मान्यता के अनुसार, मौसम वैज्ञानिक यह मानते हैं कि अल-नीनो एक अनियमित रूप से घटित होने वाली घटना है और इसका पूर्वानुमान नहीं किया जा सकता। ऐसे तो अल-नीनो आगमन की भविष्यवाणी किसान, मछुआरे, सरकार और वैज्ञानिक सभी के लिए चिंता का विषय होता है किन्तु उष्ण या शीतोष्ण कटिबंध में पड़ने वाले कई देश जैसे- पेरू, ब्राजील, भारत, इथियोपिया, ऑस्ट्रेलिया आदि में कृषि योजना के लिए यहाँ की सरकारें अल-नीनो की भविष्यवाणियों का उपयोग करने लगी हैं। सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठन भी अल नीनो से होने वाली संभावित हानि के आकलन हेतु खर्च के लिए तैयार रहते हैं।

***(सन्दर्भ :- प्रभात कुमार, अभिव्यक्ति हिन्दी)***

*सामान्य लेख*

# दूरसंचार में नवसंचार

❖ *आर.एस.चौरिशी*

वर्ष 2014 भारत के इंटरनेट सोशल मिडिया क्षेत्र के लिए बदलाव का पड़ाव बना । वर्ष 2015 तक नेट से जुड़े लोगों की संख्या 15 करोड़ होगी ऐसी भविष्यवाणी दो तीन साल पहले की गई थी परंतु 2014 तक यह आंकड़ा 20 करोड़ पार कर गया । मोबाइल इंटरनेट तथा सोशल मिडिया से जुड़े लोग आज 10 करोड़ से अधिक है। हर रोज टी.वी .के सामने बैठने वाले लोग, इंटरनेट पर लगे रहने लगे। इस वजह से ई-कॉमर्स कम्पनियों की चाँदी होने लगी । जैसे रिक्शा, टैक्सी ,फर्नीचर ,बीमा कंपनी तथा नई स्टार्ट-अप कंपनियां जोरों पर हैं । परंतु आज भी 95% मोबाइल कनेक्शन्स प्रिपेड प्रारुप में है । अनेक उपभोक्ताओं का इंटरनेट खर्च नहीं के बराबर है । -3 जी का प्रयोग अभी तक बहुत ही कम है । इसका मुख्य कारण यह है कि -3 जी स्पीड होते हुए भी मुंबई में सीधी वेबसाइट नहीं खुलती - इंटरनेट के स्पीड के संदर्भ में वैश्विक स्तर पर भारत का 15वां क्रम है । इसलिए 'डिजिटल इंडिया' का सपना पूरा करने के लिए सरकार ने इस विषय का गंभीरता से अध्ययन करना शुरु कर दिया है । फेसबुक ,ट्विटर ,व्हॉटस-एप एवं यू-ट्यूब सभी के लिए भारतीय व्यापार सबसे बड़ा बन सकता है। इसलिए बीते कुछ महीनों में सोशल मिडिया साइट पर उनकी सेवाओं में अनेक बदलाव किए गए हैं ।

**यू-ट्यूब**- आज यू-ट्यूब में प्रति मिनिट 100 घंटे के विडियो अपलोड हो रहे हैं ,इसके अलावा इस माध्यम से गुगल के पास इतना विडियो कंटेट तैयार हो चुका है कि ,जल्द ही वह अनेक हिंदी चैनलों को मात दे सकेंगे । 300 एम.बी .से 1 जी.बी .डेटा प्लान में यू-ट्यूब को देखते हुए केवल भारत के लिए यू-ट्यूब विडियो डाउनलोड करके ऑफलाइन देखने की सुविधा उपलब्ध कराई है । फिलहाल यह सुविधा केवल एंड्रायड के लिए ही उपलब्ध है । इस वजह से जब आप वाय-फाय ज़ोन में होंगे तब आप अपनी पसंद के विडियो डाउनलोड कर सकते हैं ।

**व्हॉटस-एप**- चीन के अलावा आज फेसबुक के बाद 6 करोड़ से अधिक लोग व्हॉटस-एप का प्रयोग करते हैं । ज्यादातर नये यूजर सोशल मिडिया का श्रीगणेश व्हॉटस-एप से करते हैं क्योंकि इसमें संदेश भेजना इतना आसान है कि आपको अपना मोबाइल नं. देने के अलावा कोई अधिक जानकारी नहीं देनी पड़ती । अभी तक व्हॉटस-एप केवल मोबाइल द्वारा ही इस्तेमाल कर सकते थे- जिससे मोबाइल बैटरी डाउन हो जाया करती थी। इस समस्या के समाधान के लिए मैसेज सेवाओं से स्पर्धा करने हेतु

❖ *मौसम विज्ञान के अपरमहानिदेशक (अनु.) के कार्यालय - पुणे में सहायक मौसम विज्ञानी के पद पर कार्यरत हैं*

अब डेस्कटॉप/लैपटॉप व्हॉटस-एप का प्रयोग करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। व्हॉटस-एप की नयी प्रणाली डाउनलोड करके एक बारकोड स्कैन करना होता है, जिससे आपके मोबाइल के मैसेज आपको अपने कम्प्यूटर स्क्रीन पर दिखाई देते हैं । लेकिन ,यह सेवा प्राप्त करने के लिए आपके पास वाय-फाय होना जरुरी है । इतना ही नहीं व्हॉटस-एप ने अब वॉइस कॉल की सेवा मुफ्त में उपलब्ध कराई है । फेसबुक मैसेंजर ,गुगल हैंग आऊट ,वायबर ,लाइन और स्काइप के साथ स्पर्धा में कूद पड़ी है । वी.ओ.आई.पी .क्षेत्र के इस संग्राम में हजारों करोड़ की लागत से स्पेक्ट्रम खरीद करने वाली कंपनियों को उनका भविष्य डूबता नजर आ रहा है । लोग एक-दूसरे से मोबाइल पर यदि इंटरनेट के माध्यम से बातें करने लगेंगे तो टेलिकॉम कंपनियों का दिवाला निकल सकता है । इसलिए इंटरनेट फोन कॉलिंग पर प्रतिबंध लगाने की मांग करने अनेक टेलिकॉम कंपनियां निकल पड़ी हैं।

**फेसबुक**– फेसबुक ने भारत की भिन्न परिस्थिति का जायजा लेकर गत वर्ष में ऑफलाइन स्टेटस अपडेट करने की सुविधा उपलब्ध करायी है तथा प्रायोगिक बेस पर आपसे 1 कि.मी .दूर आपके कोई मित्र हो तो उनकी जानकारी आपको अपडेट करने वाली सेवा शुरु की है ।

**ट्विटर**– सबसे क्रांतिकारी सोशल मिडिया टूल मतलब ट्विटर को वैश्विक स्तर पर भ्रष्टाचार विरोधी क्रांतियों का जनक माना जाता है । इसका प्रयोग अत्यंत सुविधाजनक तथा आसान होने के बावजूद बाकी मिडिया की तुलना में इसके फीचर्स कम होने के कारण ,भारत जैसे विकसनशील देशों में स्वयं को अभिव्यक्त करना संभव नहीं होता इसलिए ट्विटर का प्रयोग करने वालों की संख्या भी तुलना में फेसबुक ,व्हॉटसएप ,गुगल आदि से काफी पीछे रही है । इस स्पर्धा में उभरने के लिए ट्विटर ने ग्रुप मैसेजिंग और 30 सेकंड के विडियो रिकॉर्ड प्राप्त करके पोस्ट करने की सुविधा उपलब्ध कराई है ।

**ई-मेल**– सोशल मिडिया के आगमन के पश्चात इंटरनेट की सर्च और ई-मेल सेवा धीमी पड़ गई थी । सर्च में गुगल ,ई-मेल ,जी-मेल जैसे समीकरण बन चुके थे। अब इसमें भी स्पर्धा होने लगी है। एक ओर एमेजॉन ने आउटलुक को विकल्प की दृष्टि से वर्क मेल सेवा शुरु की है तो दूसरी ओर मोबाइल के याहू-मेल और मायक्रोसॉफ्ट के ई-मेल ऍप ,जी-मेल ऍप की अपेक्षा काफी अच्छे हैं । मायक्रोसॉफ्ट ई-मेल ऍप से आप जी मेल का भी प्रयोग कर सकते हैं ।

**शेअरिंग ऍप**– आज मोबाइल और वाय-फाय के कारण लोगों के घरों के कम्प्यूटर का प्रयोग कम होता जा रहा है । लेकिन मोबाइल की संग्रहण क्षमता कम होने के कारण आपके नियमित अंतराल से संकलित फोटो ,विडियो ,गानो के लिए घरेलू कम्प्यूटर पर बैक-अप बनाना जरुरी हो चुका है । इसके अलावा अगर दो लोगों को मोबाइल से गाने अथवा विडियो शेअर करना हो तो ब्लूटूथ द्वारा काफी समय लगता है ,और इंटरनेट द्वारा करने से बड़े पैमाने पर डाटा खर्च होता है । इस सभी पर विकल्प के तौर पर सुपरबीम जैसी अनेक शेअरिंग ऍप उपलब्ध हुई हैं जिनके द्वारा एक ही वाय-

फाय नेटवर्क से जुड़े दो मोबाइल , कम्प्यूटर या टैबलेट से तीव्र गति से लेकिन डेटा खर्च न करते हुए भी फाइल शेअर करना संभव हुआ है ।

**इंटरनेट टी.वी -** नेट टी.वी .कंपनियां गत एक दो वर्षों से इनबिल्ट वाय-फाय टी.वी .मॉडेल बाजार में उपलब्ध करवा रही हैं। आप ऍपल सेट टॉप बॉक्स या गुगल क्रोमकास्ट लेकर टी.वी .पर इंटरनेट के माध्यम से विडियो और सोशल मिडिया का प्रयोग कर सकते हैं ।

केंद्र सरकार की स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत 100 एम.बी .प्रति सेकंड की इंटरनेट और 100 % मोबाइल कवरेज होने की योग्यता रखी जाएगी । आज तक लैण्डलाइन अथवा मोबाइल फोन संपर्क का माध्यम होता था परंतु गत कुछ वर्ष में इंटरनेट के क्षेत्र में बदलाव करते हुए विविध कंपनियों द्वारा किफ़ायती और अच्छी सेवाएं उपलब्ध कराई है जिसके परिणामस्वरुप भारत में ऍप क्रांति की घुड़-दौड़ शुरु हो चुकी है।

-------------------

# उषा की लाली में

❖ ***नागार्जुन***

***साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ***

उषा की लाली में
अभी से गए निखर
हिमगिरि के कनक शिखर

आगे बढ़ा शिशु रवि
बदली छवि, बदली छवि
देखता रह गया अपलक कवि
डर था, प्रतिपल
अपरूप यह जादुई आभा
जाए ना बिखर, जाए ना बिखर,

उषा की लाली में
भले हो उठे थे निखर
हिमगिरि के कनक शिखर ।

*वैज्ञानिक व तकनीकी बौछार*

# बंजर धरती और जल चेतना

❖ *डॉ गुरुदत्त मिश्रा*

भारत की करीब 32 प्रतिशत धरती बंजर हो रही है । ग्लोबल वार्मिंग के कारण यह नया खतरा पैदा हो गया है, अभी तक इस खतरे की ओर किसी का ध्यान नहीं गया है । धरती के बंजर होने के मुख्य कारण हैं :-

- **बढ़ती जनसंख्या -** पूरे विश्व की आबादी तेजी से बढ़ रही है,आबादी बढ़ने से भोजन की मांग बढ़ रही है । सभी को भरपेट भोजन मिले इसके लिए धरती पर उसकी क्षमता से अधिक खेती की जा रही है । अधिक रासायनिक खादों का प्रयोग हो रहा है जो मृदा के सूक्ष्म जीवों को खत्म कर रहा है । ये सूक्ष्म जीव ही मृदा को जीवित रखते हैं । एक इंच मिट्टी का निर्माण होने में 500 वर्ष लगते हैं, वैसे निर्माण में कितना समय लगेगा यह अक्षांश पर निर्भर है ।
- **ग्लोबल वार्मिंग -** पृथ्वी के बढ़ते तापमान के कारण जमीन को उतना पानी नहीं मिल पाता जितना उसको उपजाऊ बनाए रखने के लिए जरूरी है । बारिश नहीं होने या कम बारिश होने से मिट्टी सूखने लगती है । भारत समें त दुनिया के कई इलाके सूखाग्रस्त हो चुके हैं और कई इलाकों के जल्द ही सूखाग्रस्त होने की आशंका है ।

- **उत्खनन -** देशभर में बड़े पैमाने पर उत्खनन किया जा रहा है । उत्खनन के कारण जमीन का उपजाऊपन खत्म होने लगता है। खनन के बाद वृक्षारोपण अनिवार्य होता है । लेकिन ऐसा नहीं होता, जमीन खाली छोड़ दी जाती है जो कि रेगिस्तान में बदल जाती है । बड़ी मात्रा में नदियों से रेत निकाली जाती है जिससे नदियों का कटाव तथा वृक्षों को हानि होती है। उपजाऊ जमीन नदी में बह जाती है।जमीनी रकवा कम होता जा रहा है, नदियों के तट चौड़े हो रहे हैं ।
- **कृषि कम होना -** 2080 तक भारत में कृषि योग्य भूमि 25 प्रतिशत कम हो जाएगी । कृषि

❖ *मौसम केंद्र - भोपाल के कार्यालय में सहायक मौसम विज्ञानी के पद पर कार्यरत हैं*

घटने का सीधा असर जमीन की गुणवत्ता पर पड़ेगा । पीने के पानी की आपूर्ति के लिए भू-जल स्त्रोतों का दोहन बड़े पैमाने पर किया जा रहा है इससे न सिर्फ भू-जल स्त्रोत खत्म हो रहे हैं बल्कि जमीन भी निम्न स्तर की होती जा रही है । आशंका व्यक्त की जा रही है कि 2050 तक विश्व की आधी जनसंख्या भूख,पानी और बीमारी के कारण नष्ट हो जाएगी । कार्बन उत्सर्जन की बढ़ती मात्रा से पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है जो जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण है । यद्यपि पृथ्वी को जलवायु परिवर्तन के खतरे से बचाने के लिए कई उपाय किए जा रहे हैं किन्तु सबसे अच्छा विकल्प वृक्षारोपण माना जा रहा है ।

हमारे देश में 1981 से लेकर 2011 तक 8.30 लाख हेक्टेयर जंगल उद्योग और खनन परियोजनाओं के नाम पर काटे जा चुके हैं । भारत का औद्योगिक क्षेत्र हवा और भूमि में खतरनाक रसायन उड़ेल रहा है जो मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक है । इन रसायनों से भी जमीन बंजर हो रही है । केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा यूनाइटेड नेशंस कंनवेन्शन में प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार 32 प्रतिशत जमीन या तो मृदा क्षरण के कारण बंजर हो रही है या फिर मरूस्थल में बदलती जा रही है । धरती का बंजर होना या उसकी उत्पादन क्षमता सीधे तौर पर प्रभावित होने से जमीन कृषि योग्य नहीं रह जाती । बंजर जमीन और उपजाऊ जमीन में सबसे बड़ा अंतर है कि बंजर जमीन की मिट्टी बाउन्ड नहीं रहती । मिट्टी के कण एक दूसरे से अलग हो जाते हैं । इसे रोकने के लिए सबसे पहले कृषि को बढ़ावा देने की जरूरत है ताकि मिट्टी आपस में जुड़ी रहे ।

यह सर्वविदित है कि जल ही जीवन है, वैज्ञानिकों ने पानी की एक और विशेषता खोजी है, जब आप आपे से बाहर हो तो पानी शान्ति दे सकता है । शरीर में पानी की कमी होने से मिजाज पर विपरीत असर पड़ता है । अत: जल ही जीवन है यह अटल सत्य है क्योंकि जल मानव ,पेड-पौधों,जीव जंतुओं के जीवन यापन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है ।पृथ्वी की सतह का 71 प्रतिशत भाग पानी है तथा पृथ्वी पर विद्यमान सभी प्रकार के जीवन के लिए यह आवश्यक है ।

आज विश्व के अधिकांश भाग में मानव की सुरक्षित और शुद्ध पानी तक पहुँच बढ़ गई है। लेकिन विश्व की एक बिलियन जनसंख्या अब भी इससे दूर है तथा 2.5 बिलियन लोगों के पास पर्याप्त सफाई की सुविधा नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वच्छ जल वह है जो स्वच्छ, शीतल, स्वादयुक्त, गन्धरहित हो तथा जिसका जी एच मान 7 से लेकर 8.5 के मध्य हो। विश्व की बढ़ती आबादी ने सम्पूर्ण विश्व में गहरा जल संकट उत्पन्न कर दिया है। समय रहते यदि इसमें समुचित प्रयास न किए गए तो इसके गम्भीर परिणाम भोगने पड़ेंगे। भारत में दो तिहाई भूजल के भण्डार खाली हो चुके हैं एवं नदियों का जल पीने योग्य नहीं बचा है। कुएं, बावड़ियां समाप्त हो रही हैं, तालाबों को पूरा भरके खेतीहर बनाया जा रहा है। हैण्डपंपों का जल स्तर गिर रहा है और वे बन्द होते जा रहे हैं। उथले हेण्डपंम्पों में खराब पानी आ रहा है जो पीने योग्य नहीं है। यही स्थिति रही तो आर्थिक विकास,प्रगति एवं समृद्धि सिर्फ कागजों तक सीमित रह जाएगी। नीला ग्रह कहे जाने वाली इस धरती पर तीन चौथाई भाग जल है जिसमें 97.4 प्रतिशत जल खारे पानी के रूप में समुद्रों में तथा केवल 2.6 प्रतिशत जल का 1.984 प्रतिशत हिम नदी के रूप में है तथा 0.616 प्रतिशत जल ही शुद्ध स्वच्छ तरल एवं सतही भूजल के रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध है। भारत का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का 2.5 प्रतिशत है तथा भारत में विश्व की 16 प्रतिशत आबादी निवास करती है एवं भारत के पास जल संसाधन विश्व के जल संसाधन का केवल 4 प्रतिशत ही है। भारत में प्रतिवर्ष जल की उपलब्धता 1869 घन कि.मी.है तथा इनमें से 1123 घन कि.मी.जल ही विभिन्न कार्यों में प्रयोग होता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारी कृषि मॉनसून पर निर्भर है । गहराते जल संकट और जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में हम मॉनसून की अनिश्चितता से सबसे अधिक पीड़ित हैं। इसलिए हमें अपनी जल भण्डारन क्षमता को बढाने की आवश्यकता है। इसके लिए राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना की आवश्यकता है जिससे जल संरक्षण तथा जल संकट का निवारण होगा । सूखी नदियां अपनी मूल अवस्थाओं में आ जाएँगी तथा अतिक्रमण रूकेगा ,आसपास का जल स्तर बढ़ेगा एवं बाढ़ से बचाव होगा, लोगों को सिंचाई तथा अन्य परियोजनाओं के लिए जल उपलब्ध हो सकेगा ,जलीय जीव जन्तुओं की रक्षा हो सकेगी । राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना एक स्वर्णिम योजना है जिसके अंतर्गत 14 हिमालयी और 16 प्रायद्वीपीय लिंको द्वारा भारत की विभिन्न नदियों को आपस में जोड़ा जाना प्रस्तावित है । सर्वोच्च न्यायालय ने इस परियोजना को 2012 में अपनी स्वीकृति दे दी है । हमारे समाज में हर जगह जल संबंधी समस्या बढ़ रही है । कहीं सूखा तो कहीं बाढ़, कहीं गुणवत्ता में कमी तो कहीं जल जनित रोग में वृद्धि पाई जा रही है । कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि मनुष्य का सुख चैन लूट रही है । एक क्षेत्र में जहां पानी के लिए घोर संघर्ष करना पड़ रहा है वही दूसरे क्षेत्र में अत्यधिक बारिश, बादल फटने की घटनाएॅ इन्ही विषमताओं के बीच हमें जो जल पीने के लिए मिलता है उसकी गुणवत्ता का भी कोई भरोसा नहीं है । सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद -21 के तहत प्रदत्त मौलिक अधिकारों में से " पेयजल प्राप्त करना " को एक मौलिक अधिकार का दर्जा दिया है । अमेरिका अंतरिक्ष एजेन्सी नासा की रिपोर्ट कहती है कि सन 2002 से 2008 के बीच देश के भूमिगत जल भंडारों से 109 अरब क्यूबिक मीटर जल समाप्त हो चुका है । केन्द्रीय भूमिगत जल बोर्ड द्वारा कराए गए सर्वेक्षण से मालूम होता है कि विभिन्न राज्यों में भूमिगत जल स्तर में 20 सेन्टीमीटर प्रतिवर्ष की दर से गिरावट आ रही है ।

अत: जल संरक्षण के लिए भूमिगत जल का पुन:पूरण सुनिश्चित करना होगा । यदि समय रहते भूमिगत जल का सीमित उपयोग तथा बड़े पैमाने पर वर्षा जल का संरक्षण नहीं किया जाएगा तो हम सभी को दुष्परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना होगा ,विश्व पर जल संकट का खतरा मंडरा रहा है जिससे भारत भी अछूता नहीं है ।

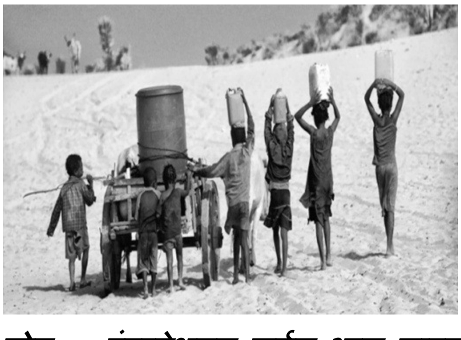

***स्रोत - इंटरनेशनल जर्नल आफ लाइफ साइकिल असेसमेंट***

साहित्यिक बहार

# उसने कहा था

❖ चंद्रधर शर्मा गुलेरी

बड़े-बड़े शहरों के इक्के-गाड़ीवालों की जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है, और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बंबूकार्टवालों की बोली का मरहम लगावें। जब बड़े-बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ चाबुक से धुनते हुए, इक्केवाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट-संबंध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अँगुलियों के पोरों को चींथ कर अपने-ही को सताया हुआ बताते हैं, और संसार-भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने, नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरीवाले तंग चक्करदार गलियों में, हर-एक लड़्ढीवाले के लिए ठहर कर सब्र का समुद्र उमड़ा कर बचो खालसा जी। हटो भाई जी। ठहरना भाई। आने दो लाला जी। हटो बाछा, कहते हुए सफेद फेंटों, खच्चरों और बत्तकों, गन्नें और खोमचे और भारेवालों के जंगल में से राह खेते हैं। क्या मजाल है कि जी और साहब बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती नहीं; पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती हुई। यदि कोई बुढ़िया बार-बार चितौनी देने पर भी लीक से नहीं हटती, तो उनकी बचनावली के ये नमूने हैं - हट जा जीणे जोगिए; हट जा करमाँवालिए; हट जा पुत्तां प्यारिए; बच जा लंबी वालिए। समष्टि में इनके अर्थ हैं, कि तू

***हिन्दी साहित्य में चंद्रधर शर्मा गुलेरी ऐसे अकेले कथा लेखक थे जिन्होंने मात्र तीन कहानियां लिखकर कथा साहित्य को नई दिशा और आयाम प्रदान किये। गुलेरी जी की 'उसने कहा था' कहानी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितना अपने समय में।***

जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रों को प्यारी है, लंबी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहिए के नीचे आना चाहती है? बच जा। ऐसे बंबूकार्टवालों के बीच में हो कर एक लड़का और एक लड़की चौक की एक दुकान पर आ मिले। उसके बालों और इसके ढीले सुथने से जान पड़ता था कि दोनों सिख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था, और यह रसोई के लिए बड़ियाँ। दुकानदार एक परदेसी से गुथ रहा था, जो सेर-भर गीले पापड़ों की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

'तेरे घर कहाँ है?'

'मगरे में; और तेरे?'

'माँझे में; यहाँ कहाँ रहती है?'

'अतरसिंह की बैठक में; वे मेंरे मामा होते हैं।'

'मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरु बजार में हैं।'

इतने में दुकानदार निबटा, और इनका सौदा देने लगा। सौदा ले कर दोनों साथ-साथ चले। कुछ दूर जा कर लड़के ने मुसकरा कर पूछा, - 'तेरी कुड़माई हो गई?' इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ा कर धत् कह कर दौड़ गई, और लड़का मुँह देखता रह गया।

दूसरे-तीसरे दिन सब्जीवाले के यहाँ, दूधवाले के यहाँ अकस्मात दोनों मिल जाते। महीना-भर यही हाल रहा। दो-तीन बार लड़के ने फिर पूछा, तेरी कुड़माई हो गई? और उत्तर में वही 'धत्' मिला। एक दिन जब फिर लड़के ने वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो लड़की, लड़के की संभावना के विरुद्ध बोली - 'हाँ हो गई।'

'कब?'

'कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।' लड़की भाग गई। लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छावड़ीवाले की दिन-भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभीवाले के ठेले में दूध उँड़ेल दिया। सामने नहा कर आती हुई किसी वैष्णवी से टकरा कर अंधे की उपाधि पाई। तब कहीं घर पहुँचा।

'राम-राम, यह भी कोई लड़ाई है। दिन-रात खंदकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गईं। लुधियाना से दस गुना जाड़ा और मेह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं। जमीन कहीं दिखती नहीं; - घंटे-दो-घंटे में कान के परदे फाड़नेवाले धमाके के साथ सारी खंदक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गैबी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का जलजला सुना था, यहाँ दिन में पचीस जलजले होते हैं। जो कहीं खंदक से बाहर साफा या कुहनी निकल गई, तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए हैं या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।''लहनासिंह, और तीन दिन हैं। चार तो खंदक में बिता ही दिए। परसों रिलीफ आ जाएगी और फिर सात दिन की छुट्टी। अपने हाथों झटका करेंगे और पेट-भर खा कर सो रहेंगे। उसी फिरंगी मेम के

बाग में मखमल का-सा हरा घास है। फल और दूध की वर्षा कर देती है। लाख कहते हैं, दाम नहीं लेती। कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बचाने आए हो।'

'चार दिन तक एक पलक नींद नहीं मिली। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ा कर मार्च का हुक्म मिल जाय। फिर सात जरमनों को अकेला मार कर न लौटूँ, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े - संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं, और पैर पकड़ने लगते हैं। यों अँधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था - चार मील तक एक जर्मन नहीं छोडा था। पीछे जनरल ने हट जाने का कमान दिया, नहीं तो -

'नहीं तो सीधे बर्लिन पहुँच जाते! क्यों?' सूबेदार हजारासिंह ने मुसकरा कर कहा -'लड़ाई के मामले जमादार या नायक के चलाए नहीं चलते। बड़े अफसर दूर की सोचते हैं। तीन सौ मील का सामना है। एक तरफ बढ़ गए तो क्या होगा?'

'सूबेदार जी, सच है,' लहनसिंह बोला - 'पर करें क्या? हड्डियों-हड्डियों में तो जाड़ा धँस गया है। सूर्य निकलता नहीं, और खाईं में दोनों तरफ से चंबे की बावलियों के से सोते झर रहे हैं। एक धावा हो जाय, तो गरमी आ जाय।'

'उदमी, उठ, सिगड़ी में कोले डाल। वजीरा, तुम चार जने बालटियाँ ले कर खाईं का पानी बाहर फेंको। महासिंह, शाम हो गई है, खाईं के दरवाजे का पहरा बदल ले।' - यह कहते हुए सूबेदार सारी खंदक में चक्कर लगाने लगे।

वजीरासिंह पलटन का विदूषक था। बाल्टी में गँदला पानी भर कर खाईं के बाहर फेंकता हुआ बोला - 'मैं पाधा बन गया हूँ। करो जर्मनी के बादशाह का तर्पण !' इस पर सब खिलखिला पड़े और उदासी के बादल फट गए।

लहनासिंह ने दूसरी बाल्टी भर कर उसके हाथ में दे कर कहा - 'अपनी बाड़ी के खरबूजों में पानी दो। ऐसा खाद का पानी पंजाब-भर में नहीं मिलेगा।'

'हाँ, देश क्या है, स्वर्ग है। मैं तो लड़ाई के बाद सरकार से दस घुमा जमीन यहाँ माँग लूँगा और फलों के बूटे लगाऊँगा।'

'लाड़ी होराँ को भी यहाँ बुला लोगे? या वही दूध पिलानेवाली फरंगी मेम - '

'चुप कर। यहाँवालों को शरम नहीं।''देश-देश की चाल है। आज तक मैं उसे समझा न सका कि सिख तंबाखू नहीं पीते। वह सिगरेट देने में हठ करती है, ओठों में लगाना चाहती है,और मैं पीछे हटता हूँ तो समझती है कि राजा बुरा मान गया, अब मेरे मुल्क के लिए लड़ेग़ा नहीं।'

'अच्छा, अब बोधसिंह कैसा है?'

'अच्छा है।'

'जैसे मैं जानता ही न होऊँ ! रात-भर तुम अपने कंबल उसे उढ़ाते हो और आप सिगड़ी के सहारे गुजर करते हो। उसके पहरे पर आप पहरा दे आते हो। अपने सूखे लकड़ी के तख्तों पर उसे सुलाते हो, आप कीचड़ में पड़े रहते हो। कहीं तुम न माँदे पड़ जाना। जाड़ा क्या है, मौत है, और निमोनिया से मरनेवालों को मुरब्बे नहीं मिला करते।' 'मेरा डर मत करो। मैं तो बुलेल की खड्ड के किनारे मरूँगा। भाई कीरतसिंह की गोदी पर मेरा सिर होगा और मेरे हाथ के लगाए हुए आँगन के आम के पेड़ की छाया होगी।'

वजीरासिंह ने त्योरी चढ़ा कर कहा - 'क्या मरने-मारने की बात लगाई है? मरें जर्मनी और तुरक! हाँ भाइयों, कैसे -

दिल्ली शहर तें पिशोर नुं जांदिए,
कर लेणा लौंगां दा बपार मड़िए;
कर लेणा नाड़ेदा सौदा अड़िए -
(ओय) लाणा चटाका कदुए नुँ।
कद्दू बणाया वे मजेदार गोरिए,
हुण लाणा चटाका कदुए नुँ।।

कौन जानता था कि दाढ़ियोंवाले, घरबारी सिख ऐसा लुच्चों का गीत गाएँगे, पर सारी खंदक इस गीत से गूँज उठी और सिपाही फिर ताजे हो गए, मानों चार दिन से सोते और मौज ही करते रहे हों।

दोपहर रात गई है। अँधेरा है। सन्नाटा छाया हुआ है। बोधासिंह खाली बिसकुटों के तीन टिनों पर अपने दोनों कंबल बिछा कर और लहनासिंह के दो कंबल और एक बरानकोट ओढ़ कर सो रहा है। लहनासिंह पहरे पर खड़ा हुआ है। एक आँख खाईं के मुँह पर है और एक बोधासिंह के दुबले शरीर पर। बोधासिंह कराहा।

'क्यों बोधा भाई, क्या है?'

'पानी पिला दो।'

लहनासिंह ने कटोरा उसके मुँह से लगा कर पूछा - 'कहो कैसे हो?' पानी पी कर बोधा बोला - 'कँपनी छुट रही है। रोम-रोम में तार दौड़ रहे हैं। दाँत बज रहे हैं।'

'अच्छा, मेरी जरसी पहन लो !'

'और तुम?'

'मेरे पास सिगड़ी है और मुझे गर्मी लगती है। पसीना आ रहा है।'

'ना, मैं नहीं पहनता। चार दिन से तुम मेरे लिए - '

'हाँ, याद आई। मेरे पास दूसरी गरम जरसी है। आज सबेरे ही आई है। विलायत से बुन-बुन कर भेज रही हैं मेमें, गुरु उनका भला करें।' यों कह कर लहना अपना कोट उतार कर जरसी उतारने लगा।

'सच कहते हो?'

'और नहीं झूठ?' यों कह कर नाँहीं करते बोधा को उसने जबरदस्ती जरसी पहना दी और आप खाकी कोट और जीन का कुरता भर पहन-कर पहरे पर आ खड़ा हुआ। मेम की जरसी की कथा केवल कथा थी। आधा घंटा बीता। इतने में खाई के मुँह से आवाज आई - 'सूबेदार हजारासिंह।'

'कौन लपटन साहब? हुक्म हुजूर!' - कह कर सूबेदार तन कर फौजी सलाम करके सामने हुआ।

'देखो, इसी दम धावा करना होगा। मील भर की दूरी पर पूरब के कोने में एक जर्मन खाई है। उसमें पचास से ज्यादा जर्मन नहीं हैं। इन पेड़ों के नीचे-नीचे दो खेत काट कर रास्ता है। तीन-चार घुमाव हैं। जहाँ मोड़ है वहाँ पंद्रह जवान खड़े कर आया हूँ। तुम यहाँ दस आदमी छोड़ कर सब को साथ ले उनसे जा मिलो। खंदक छीन कर वहीं, जब तक दूसरा हुक्म न मिले, डटे रहो। हम यहाँ रहेगा।'

'जो हुक्म।'

चुपचाप सब तैयार हो गए। बोधा भी कंबल उतार कर चलने लगा। तब लहनासिंह ने उसे रोका। लहनासिंह आगे हुआ तो बोधा के बाप सूबेदार ने उँगली से बोधा की ओर इशारा किया। लहनासिंह समझ कर चुप हो गया। पीछे दस आदमी कौन रहें, इस पर बड़ी हुज्जत हुई। कोई रहना न चाहता था। समझा-बुझा कर सूबेदार ने मार्च किया। लपटन साहब लहना की सिगड़ी के पास मुँह फेर कर खड़े हो गए और जेब से सिगरेट निकाल कर सुलगाने लगे। दस मिनट बाद उन्होंने लहना की ओर हाथ बढा कर कहा - 'लो तुम भी पियो।'

आँख मारते-मारते लहनासिंह सब समझ गया। मुँह का भाव छिपा कर बोला - 'लाओ साहब।' हाथ आगे करते ही उसने सिगड़ी के उजाले में साहब का मुँह देखा। बाल देखे। तब उसका माथा ठनका। लपटन साहब के पट्टियों वाले बाल एक दिन में ही कहाँ उड़ गए और उनकी जगह कैदियों से कटे बाल कहाँ से आ गए?' शायद साहब शराब पिए हुए हैं और उन्हें बाल कटवाने का मौका मिल गया है? लहनासिंह ने जाँचना चाहा। लपटन साहब पाँच वर्ष से उसकी रेजिमेंट में थे।

'क्यों साहब, हमलोग हिंदुस्तान कब जाएँगे?'

'लड़ाई खत्म होने पर। क्यों, क्या यह देश पसंद नहीं ?'

'नहीं साहब, शिकार के वे मजे यहाँ कहाँ? याद है, पारसाल नकली लड़ाई के पीछे हम आप जगाधरी जिले में शिकार करने गए थे -

'हाँ, हाँ - ''वहीं जब आप खोते पर सवार थे और और आपका खानसामा अब्दुल्ला रास्ते के एक मंदिर में जल चढ़ाने को रह गया था? बेशक पाजी कहीं का - सामने से वह नील गाय निकली कि ऐसी बड़ी मैंने कभी न देखी थीं। और आपकी एक गोली कंधे में लगी और पुट्ठे में निकली। ऐसे अफसर के साथ शिकार खेलने में मजा है। क्यों साहब, शिमले से तैयार होकर उस नील गाय का सिर आ गया था न?

आपने कहा था कि रेजमेंट की मैस में लगाएँगे।'

'हाँ पर मैंने वह विलायत भेज दिया - '

'ऐसे बड़े-बड़े सींग! दो-दो फुट के तो होंगे?'

'हाँ, लहनासिंह, दो फुट चार इंच के थे। तुमने सिगरेट नहीं पिया?'

'पीता हूँ साहब, दियासलाई ले आता हूँ' - कह कर लहनासिंह खंदक में घुसा। अब उसे संदेह नहीं रहा था। उसने झटपट निश्चय कर लिया कि क्या करना चाहिए।

अँधेरे में किसी सोनेवाले से वह टकराया।

'कौन? वजीरासिंह?'

'हाँ, क्यों लहना? क्या कयामत आ गई? जरा तो आँख लगने दी होती?'

'होश में आओ। कयामत आई है और लपटन साहब की वर्दी पहन कर आई है।'

'क्या?

'लपटन साहब या तो मारे गए है या कैद हो गए हैं। उनकी वर्दी पहन कर यह कोई जर्मन आया है। सूबेदार ने इसका मुँह नहीं देखा। मैंने देखा और बातें की है। सौहरा साफ उर्दू बोलता है, पर किताबी उर्दू। और मुझे पीने को सिगरेट दिया है?'

'तो अब!'

'अब मारे गए। धोखा है। सूबेदार होराँ, कीचड़ में चक्कर काटते फिरेंगे और यहाँ खाईं पर धावा होगा। उठो, एक काम करो। पल्टन के पैरों के निशान देखते-देखते दौड़ जाओ। अभी बहुत दूर न गए होंगे। सूबेदार से कहो एकदम लौट आएँ। खंदक की बात झूठ है। चले जाओ, खंदक के पीछे से निकल जाओ। पत्ता तक न खड़के। देर मत करो।'

'हुकुम तो यह है कि यहीं - '

'ऐसी तैसी हुकुम की! मेरा हुकुम - जमादार लहनासिंह जो इस वक्त यहाँ सब से बड़ा अफसर है, उसका हुकुम है। मैं लपटन साहब की खबर लेता हूँ।'

'पर यहाँ तो तुम आठ है।'

'आठ नहीं, दस लाख। एक-एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है। चले जाओ।'

लौट कर खाईं के मुहाने पर लहनासिंह दीवार से चिपक गया। उसने देखा कि लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले। तीनों को जगह-जगह खंदक की दीवारों में घुसेड़ दिया और तीनों में एक तार सा बाँध दिया। तार के आगे सूत की एक गुत्थी थी, जिसे सिगड़ी के पास रखा। बाहर की तरफ जा कर एक दियासलाई जला कर गुत्थी पर रखने -

इतने में बिजली की तरह दोनों हाथों से उल्टी बंदूक को उठा कर लहनासिंह ने साहब की कुहनी पर तान कर दे मारा। धमाके के साथ साहब के हाथ से दियासलाई गिर पड़ी। लहनासिंह ने एक कुंदा

साहब की गर्दन पर मारा और साहब 'ऑख! मीन गौट्ट' कहते हुए चित्त हो गए। लहनासिंह ने तीनों गोले बीन कर खंदक के बाहर फेंके और साहब को घसीट कर सिगड़ी के पास लिटाया। जेबों की तलाशी ली। तीन-चार लिफाफे और एक डायरी निकाल कर उन्हें अपनी जेब के हवाले किया।

साहब की मूर्छा हटी। लहनासिंह हँस कर बोला - 'क्यों लपटन साहब? मिजाज कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं। यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधरी के जिले में नीलगाएँ होती हैं और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियों पर जल चढ़ाते हैं और लपटन साहब खोते पर चढ़ते हैं। पर यह तो कहो, ऐसी साफ उर्दू कहाँ से सीख आए? हमारे लपटन साहब तो बिन डेम के पाँच लफ्ज भी नहीं बोला करते थे।'

लहना ने पतलून के जेबों की तलाशी नहीं ली थी। साहब ने मानो जाड़े से बचने के लिए, दोनों हाथ जेबों में डाले। लहनासिंह कहता गया - 'चालाक तो बड़े हो पर माँझे का लहना इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार आँखें चाहिए। तीन महीने हुए एक तुरकी मौलवी मेरे गाँव आया था। औरतों को बच्चे होने के ताबीज बाँटता था और बच्चों को दवाई देता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछा कर हुक्का पीता रहता था और कहता था कि जर्मनीवाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़-पढ़ कर उसमें से विमान चलाने की विद्या जान गए हैं। गौ को नहीं मारते। हिंदुस्तान में आ जाएँगे तो गोहत्या बंद कर देंगे। मंडी के बनियों को बहकाता कि डाकखाने से रूपया निकाल लो। सरकार का राज्य जानेवाला है। डाक-बाबू पोल्हूराम भी डर गया था। मैंने मुल्लाजी की दाढ़ी मूड़ दी थी। और गाँव से बाहर निकाल कर कहा था कि जो मेरे गाँव में अब पैर रक्खा तो -

साहब की जेब में से पिस्तौल चला और लहना की जाँघ में गोली लगी। इधर लहना की हैनरी मार्टिन के दो फायरों ने साहब की कपाल-क्रिया कर दी। धड़ाका सुन कर सब दौड़ आए।

बोधा चिल्लया - 'क्या है?'

लहनासिंह ने उसे यह कह कर सुला दिया कि एक हड़का हुआ कुत्ता आया था, मार दिया और, औरों से सब हाल कह दिया। सब बंदूकें ले कर तैयार हो गए। लहना ने साफा फाड़ कर घाव के दोनों तरफ पट्टियाँ कस कर बाँधी। घाव मांस में ही था। पट्टियों के कसने से लहू निकलना बंद हो गया।

इतने में सत्तर जर्मन चिल्ला कर खाईं में घुस पड़े। सिक्खों की बंदूकों की बाढ़ ने पहले धावे को रोका। दूसरे को रोका। पर यहाँ थे आठ (लहनासिंह तक-तक कर मार रहा था - वह खड़ा था, और, और लेटे हुए थे) और वे सत्तर। अपने मुर्दा भाइयों के शरीर पर चढ़ कर जर्मन आगे घुसे आते थे। थोड़े से मिनिटों में वे - अचानक आवाज आई, 'वाह गुरुजी की फतह? वाह गुरुजी का खालसा!! और धड़ाधड़ बंदूकों के फायर जर्मनों की पीठ पर पड़ने लगे। ऐन मौके पर जर्मन दो चक्की के पाटों के बीच में आ गए। पीछे से सूबेदार हजारासिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने लहनासिंह के साथियों के संगीन चल रहे थे। पास आने पर पीछेवालों ने भी संगीन पिरोना शुरू कर दिया।

एक किलकारी और - अकाल सिक्खाँ दी फौज आई! वाह गुरुजी दी फतह! वाह गुरुजी दा खालसा ! सत श्री अकालपुरुख!!! और लड़ाई खतम हो गई। तिरेसठ जर्मन या तो खेत रहे थे या कराह रहे थे। सिक्खों में पंद्रह के प्राण गए। सूबेदार के दाहिने कंधे में से गोली आरपार निकल गई। लहनासिंह की पसली में एक गोली लगी। उसने घाव को खंदक की गीली मट्टी से पूर लिया और बाकी का साफा कस कर कमरबंद की तरह लपेट लिया। किसी को खबर न हुई कि लहना को दूसरा घाव - भारी घाव लगा है।

लड़ाई के समय चाँद निकल आया था, ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत-कवियों का दिया हुआ क्षयी नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी जैसी वाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौडा-दौडा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहनासिंह से सारा हाल सुन और कागजात पा कर वे उसकी तुरंत-बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

इस लड़ाई की आवाज तीन मील दाहिनी ओर की खाईंवालों ने सुन ली थी। उन्होंने पीछे टेलीफोन कर दिया था। वहाँ से झटपट दो डाक्टर और दो बीमार ढोने की गाड़ियाँ चलीं, जो कोई डेढ़ घंटे के अंदर-अंदर आ पहुँची। फील्ड अस्पताल नजदीक था। सुबह होते-होते वहाँ पहुँच जाएँगे, इसलिए मामूली पट्टी बाँध कर एक गाड़ी में घायल लिटाए गए और दूसरी में लाशें रक्खी गईं। सूबेदार ने लहनासिंह की जाँघ में पट्टी बँधवानी चाही। पर उसने यह कह कर टाल दिया कि थोड़ा घाव है सबेरे देखा जाएगा। बोधासिंह ज्वर में बर्रा रहा था। वह गाड़ी में लिटाया गया। लहना को छोड़ कर सूबेदार जाते नहीं थे। यह देख लहना ने कहा - 'तुम्हें बोधा की कसम है, और सूबेदारनीजी की सौगंध है जो इस गाड़ी में न चले जाओ।'

'और तुम?'

'मेरे लिए वहाँ पहुँच कर गाड़ी भेज देना, और जर्मन मुरदों के लिए भी तो गाड़ियाँ आती होंगी। मेरा हाल बुरा नहीं है। देखते नहीं, मैं खड़ा हूँ? वजीरासिंह मेरे पास है ही।'

'अच्छा, पर - '

'बोधा गाड़ी पर लेट गया? भला। आप भी चढ़ जाओ। सुनिए तो, सूबेदारनी होराँ को चिठ्ठी लिखो, तो मेरा मत्था टेकना लिख देना। और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया।' गाड़ियाँ चल पड़ी थीं। सूबेदार ने चढ़ते-चढ़ते लहना का हाथ पकड़ कर कहा - 'तैने मेरे और बोधा के प्राण बचाए हैं। लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी को तू ही कह देना। उसने क्या कहा था?'

'अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैंने जो कहा, वह लिख देना, और कह भी देना।'

गाड़ी के जाते लहना लेट गया। 'वजीरा पानी पिला दे, और मेरा कमरबंद खोल दे। तर हो रहा है।'

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो जाती है। जन्म-भर की घटनाएँ एक-एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं। समय की धुंध बिल्कुल उन पर से हट जाती है।

लहनासिंह बारह वर्ष का है। अमृतसर में मामा के यहाँ आया हुआ है। दहीवाले के यहाँ, सब्जीवाले के यहाँ, हर कहीं, उसे एक आठ वर्ष की लड़की मिल जाती है। जब वह पूछता है, तेरी कुड़माई हो गई? तब धत् कह कर वह भाग जाती है। एक दिन उसने वैसे ही पूछा, तो उसने कहा - 'हाँ, कल हो गई, देखते नहीं यह रेशम के फूलोंवाला सालू? सुनते ही लहनासिंह को दुःख हुआ। क्रोध हुआ। क्यों हुआ?

'वजीरासिंह, पानी पिला दे।'

पचीस वर्ष बीत गए। अब लहनासिंह नं 77 रैफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही न रहा। न-मालूम वह कभी मिली थी, या नहीं। सात दिन की छुट्टी ले कर जमीन के मुकदमें की पैरवी करने वह अपने घर गया। वहाँ रेजिमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली कि फौज लाम पर जाती है, फौरन चले आओ। साथ ही सूबेदार हजारासिंह की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधासिंह भी लाम पर जाते हैं। लौटते हुए हमारे घर होते जाना। साथ ही चलेंगे। सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था। लहनासिंह सूबेदार के यहाँ पहुँचा। जब चलने लगे, तब सूबेदार बेढे में से निकल कर आया। बोला - 'लहना, सूबेदारनी तुमको जानती हैं, बुलाती हैं। जा मिल आ।' लहनासिंह भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती हैं? कब से? रेजिमेंट के क्वार्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं। दरवाजे पर जा कर मत्था टेकना कहा। असीस सुनी। लहनासिंह चुप।

'मुझे पहचाना?'

'नहीं।'

'तेरी कुड़माई हो गई - धत् - कल हो गई - देखते नहीं, रेशमी बूटोंवाला सालू -अमृतसर में -

भावों की टकराहट से मूर्छा खुली। करवट बदली। पसली का घाव बह निकला।

'वजीरा, पानी पिला' - 'उसने कहा था।'

स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है - 'मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक-हलाली का मौका आया है। पर सरकार ने हम तीमियों की एक घँघरिया पल्टन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदारजी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भर्ती हुए उसे एक ही बरस हुआ। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नहीं जिया। सूबेदारनी रोने लगी। अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन ताँगेवाले का घोड़ा दहीवाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे, आप घोड़े की लातों में चले गए थे, और मुझे उठा कर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह में री भिक्षा है। तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ।

रोती-रोती सूबेदारनी ओबरी में चली गई। लहना भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया।

'वजीरासिंह, पानी पिला' -'उसने कहा था।'

लहना का सिर अपनी गोद में रक्खे वजीरासिंह बैठा है। जब माँगता है, तब पानी पिला देता है। आध घंटे तक लहना चुप रहा, फिर बोला - 'कौन ! कीरतसिंह?' वजीरा ने कुछ समझ कर कहा - 'हाँ।'

'भइया, मुझे और ऊँचा कर ले। अपने पट्ट पर मेरा सिर रख ले।' वजीरा ने वैसे ही किया।

'हाँ, अब ठीक है। पानी पिला दे। बस, अब के हाड़ में यह आम खूब फलेगा। चचा-भतीजा दोनों यहीं बैठ कर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है, उतना ही यह आम है। जिस महीने उसका जन्म हुआ था, उसी महीने में मैंने इसे लगाया था।' वजीरासिंह के आँसू टप-टप टपक रहे थे।

** ** **

कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबारों में पढा -

फ्रांस और बेलजियम - 68वीं सूची - मैदान में घावों से मरा - नं 77 सिख राइफल्स जमादार लहनासिंह

--------------------

# पैर उठे, हवा चली

❖ **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला**

पैर उठे, हवा चली
उर-उर की खिली कली।
शाख-शाख तनी तान,
विपिन-विपिन खिले गान,
खिंचे नयन-नयन प्राण,
गन्ध-गन्ध सिंची गली।

पवन-पवन पावन है
जीवन-वन सावन है,
जन-जन मनभावन है,
आशा सुखशयन-पली।

दूर हुआ कलुष-भेद,
कण्टके निस्पन्ध छेद,
खुले सर्ग, दिव्य वेद,
माया हो गई भली।

*साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ*

*संवैधानिक उपबंध*

# अनुच्छेद 343

## संघ की राजभाषा

(1) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।

(2) खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था :

परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतरराष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा

(क) अंग्रेजी भाषा का, या

(ख) अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

# जलवायु और वन संपदा

❖ *डॉ. रंजन केलकर*

वनस्पतियों का पर्यावरण मुख्यत: जलवायु की परिस्थिति, उनके अस्तित्व, लक्षण और भौगोलिक विवरण को निर्धारित करता है । विकिरण, वर्षण, वाष्पन, तापमान, वातावरण तथा भूमि की आर्द्रता और हवा का वेग आदि का वनस्पतियों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है । इसके अतिरिक्त, ये कारण एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं और उन पर वनस्पतियों का भी प्रभाव पड़ता है । अतिशीत प्रदेशों में, जहां हिम या बर्फ स्थायी रूप में होती है, वनस्पति की वृद्धि संभव नहीं होती । उन प्रदेशों में आर्द्रता तथा पानी उपलब्ध होना जरूरी होता है और जैसे जैसे वर्षण की मात्रा बढ़ती जाती है, वनस्पति का रूप रेगिस्तान से लेकर स्टेपी, घास-मैदान, वन और वर्षा-वन इस क्रम में बदलता जाता है । जलवायु तथा वनस्पति का संबंध तभी प्रकट होता हे जब वनस्पति प्राकृतिक रूप में होती है और इसके भैगोलिक क्षेत्र की जलवायु से उसका एक प्रकार का संतुलन बन जाता है । इस चरमावस्था वनस्पति का मानव के हस्तक्षेप या जलवायु की विसंगति के कारण कहीं-कहीं अभाव रहता है या उसके स्थान पर किसी अन्य जाति की वनस्पति का अस्तित्व होता है।

> ***यादों के झरोखे से***
>
> ***यह लेख मौसम मंजूषा के जून 1988 के ग्रीष्म अंक में प्रकाशित किया गया था।***
>
> ***❖ डॉ. रंजन केलकर महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं ।***

सदाबहार और पतझड़ी वनों के क्षेत्र में भारत मौसम विज्ञान की अनेक वेधशालाएं वनों की सीमा के बाहर स्थित हैं, जहां के मौसमी आँकड़े केवल वन के ही नहीं पर उससे व्यापक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं । परन्तु, जंगलों के भीतरी भाग में बिल्कुल अलग पर्यावरण हो सकता है । वनों से संबंधित सूक्ष्म-जलवायु की बहुत थोड़ी जानकारी उपलब्ध है । इस विषय पर दूसरे देशों में जो अनुसंधान कार्य हो रहा है उसमें भी अब तक काफी प्रगति नहीं हुई है । फिर भी कुछ परिणाम ज्ञात हुए हैं, जिनमें से कोई निश्चित है तो कोई गुणात्मक है ।

**विकिरण और तापमान**: वन के छत्र से जो सौर विकिरण प्रवेश कर सकता है उसको छत्र का घनत्व, पेड़ों का अंतर, जाति की सहनशक्ति आदि कारण नियंत्रित करते हैं । इसलिए अन्य कारणों की तुलना में सौर विकिरण में सबसे अधिक परिवर्तन पाए जाते हैं । कहीं-कहीं ऊपर के छत्र पर विकिरण का 10 प्रतिशत से भी कम अंश भूमि के स्तर तक पहूँच सकता है । इस स्तर पर सौर विकिरण में 1.5 लेंगली प्रति मिनट से लेकर 0.01 लेंगली प्रति मिनट तक से परिवर्तन का अवलोकन

हुआ है । विकिरण और प्रदीपन में होने वाली इस कटौती के कारण सघन वनों में, उदाहरणार्थ उष्णदेशीय वर्षा-वनों में, शाकीय तथा अन्य छोटी वनस्पतियों की वृद्धि नहीं हो सकती या बहुत ही कम होती है । सघन वनों में वातावरण के साथ ऊर्जा का आदान-प्रदान ऊपरी छत्र के स्तर पर होता है। दिन में, भूमि की सौर विकिरण से रक्षा की जाती है और रात में वह जल्दी ठंडी नहीं हो पाती है। इसका परिणाम यह होता है कि भूमि तथा वातावरण के विभिन्न स्तरों का अधिकतम तापमान कम हो जाता है और न्यूनतम तापमान बढ़ जाता है । दैनिक परिवर्तन के साथ-साथ, मासिक और वार्षिक परिवर्तन भी वनों में कम होते हैं । खुली जगह की तुलना में वनों के तापमान 2 से 5 अंश सेल्सियस तक भिन्न रहते हैं ।

**सापेक्ष आर्द्रता:** वनों का सापेक्ष आर्द्रता पर महत्वपूर्ण असर नहीं होता और जो होता है वह तापमान के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से होता है । बाहर की तुलना में वनों के अंदर सापेक्ष आर्द्रता 10 प्रतिशत तक कम रहती है । सघन वनों में, सापेक्ष आर्द्रता भूमि के नज़दीक सबसे ज्यादा रहती है और छत्र के ऊपर सबसे कम ।

**हवा:** अलग-अलग पेड़ों का आकार और वन का सामान्य घनत्व, इनके अनुसार भूमि के नज़दीक हवा का वेग 20 से 60 प्रतिशत कम हो जाता है । हवा पर लगे हुए इस बंधन के कारण, वाष्पन तथा तापमान कम होते हैं, लेकिन सापेक्ष आर्द्रता बढ़ जाती है । अगर हिम वर्षा हुई हो, तो हिम का समान वितरण भी होता है । हवा की गति कम होना और भूमि पर कूड़ा-कचरा जम जाना इन दो कारणों से वनों के जमीन से होने वाला वाष्पन खुली जमीन से होने वाले वाष्पन की अपेक्षा बहुत कम होता है । खड़ी फसल को तेज़ हवा से बचाने के लिए और वाष्पोत्सर्जन घटाने के लिए वायु-भेदक का प्रयोग करते हैं । यहां हवा की प्रचलित दिशा के लंबत: पेड़ों की एक पंक्ति रहती है, जिसका प्रभाव पेड़ों की ऊँचाई से कई बार ज्यादा अंतर तक महसूस होता है ।

**वर्षण और संबंधित बातें**: वनों के भीतर खुली जगह में नापी गई वर्षा, वनों के बाहर नापी गई वर्षा से कुछ प्रतिशत ज्यादा होती है । प्रथमत: इसका कारण यह है कि वनों के अंदर स्थित वर्षामापी को विक्षुब्ध भंवरों से अच्छा संरक्षण मिलता है । वर्षा की मात्रा में वास्तविक वृद्धि का अनुमान लगाना आसान नहीं होता । लेकिन वनों का वर्षा पर प्रभाव गुणात्मक रूप में समझा जा सकता है ।

**अंतररोधन:** वनों का ऊपरी छत्र वर्षा के एक अंश को रोक लेता है । उसका वहां पर वाष्पन होता है और वह जमीन तक नहीं पहुँच पाता । अंतररोधन का प्रमाण कई मामलों से निश्चित होता है जैसे, पर्णों का आकार तथा घनत्व, वाष्पन की दर, अलग-अलग बौछार में वर्षण की तीव्रता और हवा की गति ।

**स्तंभ प्रवाह तथा कुहरे से टपक** : वर्षा का पानी पेड़ों के स्तंभों तथा स्कंधों पर से ज़मीन तक

बहता है और अंतररोधन के विरूद्ध कार्य करता है । जिन प्रदेशों में कुहरा अक्सर पड़ता है, वहां कुहरे से टपकता हुआ पानी भूमि की आर्द्रता बढ़ाने में मदद करता है । सागर की ओर या प्रचलित हवा की ओर वनों के किनारे के क्षेत्र में यह क्रिया सबसे अधिक प्रभावित होती है ।

**उत्सर्जन:** शंकुधारा और सदाबहार वनों को पतझड़ी वनों की अपेक्षा कम की जरूरत पड़ती है । उत्सर्जन से होने वाली हानि पर्णों के क्षेत्रफल तथा वजन पर निर्भर करती है परंतु भूमि की आर्द्रता पर नहीं।

**अपवाह तथा धारा प्रवाह** : यह गिरी हुई वर्षा में से अंतर-रोधन, उत्सर्जन, वाष्पन और अंत:सरण आदि कारणों द्वारा हानि के बाद बचा हुआ हिस्सा है । भारी बौछार में बह जाने वाला पानी वनों के अस्तित्व से कम हो जाता है । उधर अंतररोधन और अंत:सरण की हानि को रोकने के लिए और अपवाह बढ़ाने के लिए वनों की घनता कम की जा सकती है । इन संबंधों को वन तथा पनधारा का नियोजन करते समय ध्यान में रखना आवश्यक है ।

**वन अग्नि:** वन अग्नि का संभाव्य खतरा किन क्षेत्रों में है, यह निश्चित करने के लिए मौसम की स्थिति के बारे में जानकारी बहुत जरूरी है । जैसे कि, लंबे सूखे और उष्ण काल के बाद जंगल में पड़े हुए सूखे पत्ते, वनस्पति और घास ज्वलनशील बन जाते हैं । तेज़ हवा की वजह से वाष्पन और शुष्कता में वृद्धि होती है । तेज़ हवा का असर ज्वाला फैलाने में भी होता है । वर्षा के परिणाम बिल्कुल विरूद्ध रहते हैं इसलिए वातावरण के तापमान तथा आर्द्रता और ज़मीन के कूड़े-कचरे की आर्द्रता के प्रेक्षण उपयोगी हो सकते हैं । मौसम स्वयं अग्नि का कारण भी हुआ करता है । पश्चिमी संयुक्त राज्य अमें रिका में वनों में अग्नि बिजली गिरने की वजह से लगती है, ऐसा अनुमान है । अग्नि के दौरान मौसम प्रेक्षण और वर्षा तथा हवा का पूर्वानुमान वन अग्नि का नियंत्रण रखने में काफी मदद दे सकते हैं ।

**जलवायु के परिवर्तन का पेड़ों द्वारा अध्ययन:** पेड़ों की लंबी आयु के कारण उनको जलवायु के अधिक तीव्र परिवर्तन को सहना पड़ता है । अनावृष्टि के समय में उनकी वृद्धि रूक जाती है, तो अच्छी वर्षा होने पर वे ज्यादा बढ़ते हैं । पेड़ों के छेद के विश्लेषण से भूतकाल में हुए जलवायु के परिवर्तन का अनुमान लगाया जा सकता है । इस पद्धति से पिछले अनेक वर्षों की वर्षा तथा हिमवर्षा के अनुमान करने के लिए प्रयत्न जारी है ।वन और जलवायु का एक-दूसरे पर असर पूरी तरह से समझ लेना बहुत ही जरूरी है । सामान्यत: वनों को आर्द्रता और जल की अधिक आवश्यकता रहती है और उष्ण, आर्द मौसम में वे अच्छे बढ़ते हैं । किंतु, पेड़ों की हर जाति की जलवायु संबंधी आवश्यकताएं अलग-अलग होती हैं । वनों की सूक्ष्म-जलवायु कृत्रिम उपायों से बदली जा सकती है जिससे मूलत: विकिरण तथा वाष्पन में परिवर्तन होते हैं । इसका परिणाम यह भी होता है कि निम्न

स्तर की वनस्पतियां बढ़ने लगती हैं और फिर से सूक्ष्म-जलवायु को बदल देती हैं । बड़ी मात्रा में पेड़ों की काटछांट से तेज़ हवा का नुकसान भी बढ़ सकता है ।

हमारे देश में खेती की प्रगति तथा बढ़ती आबादी के लिए प्राय: जंगल काटे जा रहे हैं । ऐसे उपायों का जलवायु पर तथा पूरे पर्यावरण पर होने वाले संभाव्य परिणामों के विषय में विचार करना महत्वपूर्ण है । यह खेद की बात है कि सघन वनों के भीतर, वनों की खुली जगह में और वनों के बाहर मौसमी और मौसम संबंधित प्रेक्षण अब तक नहीं किए गए हैं । नियोजित निर्वनीकरण और वन पुनरूद्धार कार्य सफल बनाने के लिए ऐसे प्रेक्षण व्यवस्थित पद्धति से होने अत्यंत आवश्यक हैं ।

-------------------------

# उठ उठ री लघु लोल लहर !

❖ ***जयशंकर प्रसाद***

उठ उठ री लघु लोल लहर
करुणा की नव अंगड़ाई-सी,
मलयानिल की परछाई-सी
इस सूखे तट पर छिटक छहर!

शीतल कोमल चिर कम्पन-सी,
दुर्ललित हठीले बचपन-सी,
तू लौट कहाँ जाती है री
यह खेल खेल ले ठहर-ठहर!

उठ-उठ गिर-गिर फिर-फिर आती,
नर्तित पद-चिह्न बना जाती,
सिकता की रेखायें उभार
भर जाती अपनी तरल-सिहर!

तू भूल न री, पंकज वन में,
जीवन के इस सूनेपन में,
ओ प्यार-पुलक से भरी ढुलक!
आ चूम पुलिन के बिरस अधर!

***साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ***

# भारत के मौसम की कुछ विशेषताएँ एवं विविधताएँ और उनका सामान्य जीवन पर प्रभाव

❖ *जी. आर. गुप्ता*

भारत के आकार के और किसी भी देश में इतनी भिन्ताएं, विविधताएं एवं विशेषताएँ नहीं पाई जाती हैं। भारत में चार विशेष मौसम होते हैं:-

- शरद ऋतु : जनवरी- फरवरी,
- ग्रीष्म ऋतु : मार्च-मई,
- वर्षा ऋतु : जून-सितम्बर(इसे ग्रीष्मकालीन मॉनसून या दक्षिण-पश्चिमी मॉनसून भी कहते हैं) और
- लौटती वर्षा ऋतु : या शीतकालीन मॉनसून, इसे उत्तर-पर्वी मॉनसून भी कहते हैं।

अब मौसम के इन कुछ खास मौसम संबंधी तत्वों को हम थोड़ा विस्तार से देखेंगे:

**न्यूनतम तापमान एवं मास**

न्यूनतम तापमान देश के उत्तरी क्षेत्र में -20$^0$ से. या इससे भी कम हो जाता है जबकि सुदूर दक्षिण में +10 से +13$^0$ से. होता है। देश के पूर्व में शून्य से 5$^0$ से. तक हो सकता है, जबकि पश्चिम के मैदानी क्षेत्रों में -3$^0$ से. तक ठंडा मौसम होता है। सुदूर दक्षिण में जबकि न्यूनतम तापमान नवम्बर से फरवरी तक कभी भी हो सकता है। उत्तरी हिस्सों में फरवरी में और मध्यवर्ती मैदानी क्षेत्रों में दिसम्बर से जनवरी में न्यूनतम तापमान मिलते हैं। इससे यह जान पड़ता है कि देश के अधिकतम क्षेत्रों में अधिक सर्दी का मौसम जनवरी-फरवरी महीनों में होता है। दक्षिण के पठारी क्षेत्रों में दिसम्बर में भी अधिकतम सर्दी हो सकती है। कभी-कभी देश के उत्तरी क्षेत्रों में कड़ाके की सर्दी अनुभव की जाती है, परन्तु दक्षिणी और पूर्वी भागों में सर्दी मामूली होती है।

**ग्रीष्म ऋतु:** अधिकतम तापमान देश के उत्तर पश्चिमी भाग (राजस्थान) में 50$^0$ से. तक जाता है जबकि मध्यवर्ती मैदानों में 48$^0$ से. तक जाता है और सुदूर दक्षिण और पूर्व में यह 30$^0$ से. 35$^0$ से.तक होता है। उत्तर में भी 35$^0$ से. तक ही तापमान जाता है। इससे यह पता चलता है कि देश के करीब 90% क्षेत्र में तापमान 40 से. या इससे अधिक हो सकता है। ग्रीष्म ऋतु के साथ ही देश के अधिकतर हिस्सों में मई और जून में अधिकतम तापमान होते हैं। पर सुदूर दक्षिण में और

***यादों के झरोखे से***

***यह लेख मौसम मंजूषा के मार्च 1990 के अंक में प्रकाशित किया गया था।***

***श्री जी. आर. गुप्ता,उत्तरी गोलार्ध विश्लेषण केंद्र से सेवानिवृत्त हो चुके हैं ।***

पश्चिमी घाट पर मार्च-अप्रैल में और पूर्वी क्षेत्रों में अप्रैल में और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में जुलाई में अधिक तापमान होते हैं जबकि इनका माप $35^0$ से. $40^0$ से. से अधिक नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे-जैसे सूर्य उत्तरायण हो जाता है अधिकतम तापमान का क्षेत्र भी उसी प्रकार उत्तर की ओर बढ़ता जाता है। ग्रीष्मकालीन तड़ित झंझा भी उसी प्रकार देश में मार्च के प्रारंभ में दक्षिण भारत में शुरू होकर धीरे-धीरे उत्तर की ओर बढ़कर पूर्व में अप्रैल में और उत्तरी भारत में मई-जून तक शुरू हो जाते हैं, और जून के अंत तक या जुलाई के शुरू में मॉनसून की वर्षा उत्तरी भारत तक पहुँच जाती है। इसे विस्तार से आगे देखेंगे। इन तड़ित झंझाओं से ग्रीष्म ऋतु में गर्मी से स्थाई राहत मिल जाती है। भारत में गर्मी से बचाव के लिए प्रकृति ने कुछ पर्वतीय स्थल भी बनाए हैं। उत्तर व दक्षिण में जहाँ पर पहुँच कर गर्मी से राहत पाई जा सकती है। मॉनसून पर बातचीत करने से पहले एक और खास पहलू भारत के मौसम का देखेंगे वह है चक्रवात, समुद्री चक्रवात।यह चक्रवात भारत के पूर्वी और पश्चिमी तट पर काफी नुकसान पहुँचाते हैं और साथ ही भारी वर्षा भी करते हैं।

भारत में समुद्री तूफान के दो मौसम होते है:- मई-जून तथा अक्तूबर-दिसम्बर । दुनिया के और किसी भाग में चक्रवात के इस प्रकार अलग-अलग मौसम नहीं होते।

**चक्रवात**

ये बहुत भयंकर भी हो सकते हैं। इनके तीन विनाशकारी पहलू होते हैं:-

- बहुत तेज हवाएं जोकि 250-300 कि.मी. प्रति घंटा तक हो सकती हैं। इससे मकानों और यातायात व संचार साधनों, फसलों इत्यादि को नुकसान पहुँचता है।
- एक दिन में 30-50 सें.मी. तक बहुत भारी वर्षा भी हो सकती है। इससे बाढ़ आती है। मकान गिर जाते है। फसलें बर्बाद हो जाती हैं।
- तूफानी समुद्री लहरें (स्टॉर्म सर्ज) सबसे ज्यादा विनाशकारी होती हैं और जो कुछ भी इनके सामने आता है वह नष्ट हो जाता है।

**कुछ ऐतिहासिक चक्रवात**

1864 में बाकर गंज में आए चक्रवात में एक लाख व 1970 के बंगलादेश में आए चक्रवात में 2 लाख आदमी मारे गए थे। समुद्री लहरों के कारण 10 नवम्बर 1977 के चिराला चक्रवात में 10 हजार आदमी मारे गए थे और 200 करोड़ रूपये का नुकसान हुआ था।

आंध्र प्रदेश में सबसे ज्यादा चक्रवात आए। सामान्यतया पूर्वी तट पर सबसे ज्यादा चक्रवात आए हैं और पश्चिमी तट पर गुजरात में सबसे ज्यादा चक्रवात आए हैं। सबसे ज्यादा भयंकर तूफान भी बंगाल की खाड़ी में ही आए हैं। नुकसान भी पूर्वी तट पर ही सबसे ज्यादा होता है। इन तूफानों से अब तक सबसे भयंकर तूफान, मई, नवम्बर व कुछेक अक्टूबर और सितम्बर में भी आए हैं। मॉनसून के जुलाई-अगस्त व शीतऋतु के जनवरी-फरवरी में प्राय: समुद्री तूफान नहीं आते या आते हैं तो ज्यादा भयंकर नहीं होते हैं। तूफान महोर्मि बंगाल और कुछ आंध्र प्रदेश व तमिलनाडु के स्थानों पर अधिकतम आते हैं। जाहिर है यदि इन क्षेत्रों में तीव्र तूफान आए तो इससे बहुत ज्यादा नुकसान हो सकता है। विभिन्न सरकारें समुद्री तटों पर बचाव के लिए चक्रवात शरण स्थल बनाती हैं। घने जंगल भी समुद्री तट पर तूफान की भीषणता को कुछ हद तक कम करते हैं।

## मॉनसून ऋतु

जैसे कि अधिकतम तापमान में देखा था कि सूर्य के उत्तरायण प्रस्थान के साथ ही अधिकतम तापमान का क्षेत्र और माप भी उत्तर की तरफ प्रस्थान करता है। जब मध्य और दक्षिण एशिया के मैदानी क्षेत्रों और आस-पास के समुद्री क्षेत्रों में सूर्य के ताप से काफी स्थायी तापमान का अंतर हो जाता है तो भारत के उत्तरी मैदानी क्षेत्र पर मई जून में अच्छी तरह मॉनसून द्रोणी बन जाती है। इससे समुद्री हवाएँ देश की तरफ और धीरे-धीरे उत्तर की ओर बढ़ती हैं व थल क्षेत्रों से गर्म और शुष्क हवा को हटाती जाती है जिससे मॉनसून की वर्षा शुरू होती है। जिस क्षेत्र में समुद्री हवाएँ थल की गर्म व शुष्क हवा को हटाती है वहाँ काफी गर्ज के साथ तूफान आते हैं। लगातार कई दिन तक भारी वर्षा होती है इसी को मॉनसून का आरंभ या आगमन कहते हैं। इससे गर्मी से राहत मिल जाती है व जमीन को खेती के लिए पानी। मॉनसून देश के दक्षिण में सामान्यतया पहली जून को आता है व धीरे-धीरे उत्तर की ओर बढ़ता हुआ जुलाई के पहले सप्ताह में पूरे देश पर छा जाता है।इसी प्रकार जब सूर्य भूमध्यरेखा से दक्षिण प्रस्थान करता है तो मॉनसून भारत से विदा लेता हुआ दक्षिण की तरफ लौटता है व अक्टूबर तक तमिलनाडु व केरल को छोड़कर पूरे देश से चला जाता है। अक्टूबर में लौटता हुआ मॉनसून उत्तर पूर्वी मॉनसून हो जाता है।इसी प्रकार मॉनसून की वर्षा की अवधि देश के उत्तर में कुल 50 दिन होती है। जबकि दक्षिण में करीब 4 महीने होती है। देश के ज्यादातर हिस्से में मॉनसून की अवधि 100 दिन के करीब है।

अब हम मॉनसून संबंधी कुछ तथ्य देखेंगे। वर्ष 1979 की मई के अंत में दक्षिणी अरब सागर पर एक दक्षिणावर्त घुमावदार क्षेत्र था, जिससे हवाएँ पश्चिमी घाट के समानांतर थी जबकि यह पश्चिमी घाट पर लम्बवर्ती टकरानी चाहिए। इससे मॉनसून के केरल में आने में करीब 11 दिन का बिलम्ब हुआ।

मॉनसून की हवाएँ दक्षिणी हिन्द महासागर से दक्षिण-पश्चिम की दिशा में अरब सागर में चलती हुई भारत के पश्चिमी तट पर टकराती हैं। इसलिए इसे दक्षिण-पश्चिमी मॉनसून कहते हैं। 1979 में एक कम दाब का क्षेत्र उत्तरी बंगाल की खाड़ी पर बना था जो 26.06.79 को देश के मध्यवर्ती क्षेत्र पर पहुँच गया। ऐसे कम दाब के क्षेत्र अपने दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में भारी वर्षा व आसपास के दूसरे क्षेत्र में हल्की से मध्यम दर्जे की वर्षा करते हुए देश पर पूर्व से उत्तर पश्चिम दिशा में बढ़ते हैं। इन कम दाब के क्षेत्रों के कारण मॉनसून द्रोणी भी मैदानी क्षेत्रों में दक्षिण-उत्तर में बारी-बारी से घूमती है। इस प्रकार वर्षा का वितरण देश के सभी क्षेत्रों में समुचित होता है। किन्हीं कारणों से यह कम दाब के क्षेत्र पर्याप्त नहीं बनते या मॉनसून की द्रोणी कमजोर पड़ जाए तो मॉनसून की वर्षा भी कम होती है ऐसी स्थिति में अकाल की सम्भावना बढ़ जाती है।

अब हम देश की वार्षिक वर्षा को देखते हैं। देश के पूर्वी क्षेत्र व पश्चिमी घाट पर सामान्य वर्षा 250 सें.मी. या इससे अधिक है तो एकदम उत्तर या पश्चिम में सिर्फ15 से.मी. मध्यवर्ती क्षेत्रों में 100-150 से.मी. है व दक्षिण में 100 से.मी. या इससे कम। देश के ज्यादातर हिस्से में मॉनसून के मौसम में ही वर्षा कुल वर्षा का 80 प्रतिशत होती है। वर्षा हिमालय के पहाड़ी क्षेत्रों में भी 150 से 250 से.मी. के करीब होती है। हिमालय के तराई क्षेत्रों में वर्षा पूर्व में ज्यादा व पश्चिम में कम होती है।

इसी प्रकार वर्षा हिमालय में 3 किलोमीटर ऊँचाई तक बढ़ती है व इसके बाद कम होती है। यदि हम मॉनसून द्रोणी का सामान्य अक्ष मानचित्र पर बनाएँ तो पायेंगे कि वर्षा द्रोणी के उत्तर और दक्षिण दोनों ही तरफ बढ़ती है और द्रोणी के अक्ष के साथ-साथ कम होती है।

इसी प्रकार जब वर्षा के दिन देखते हैं तो वर्षा के दिन राजस्थान में सबसे कम और पूर्व में सबसे ज्यादा होते हैं। भारत में वर्षा का दिन 2.5 मि.मी. या इससे अधिक वर्षा होने पर कहलाता है। इससे कम वर्षा होने पर उसे वर्षा का दिन नहीं गिनते। देश के ज्यादातर भाग में वर्षा जून-सितम्बर मास में होती है जबकि तमिलनाडु में अक्तूबर-दिसम्बर में। देश के एकदम उत्तर और दक्षिण में कुछ कम या ज्यादा वर्षा लगभग साल के सभी महीनों में होती है। जबकि लन्दन में करीब साल भर समान वर्षा सभी महीनों में होती है। उत्तर में देश के सभी स्थानों में सर्दियों में भी कुछ थोड़ी सी वर्षा होती है।

इससे यह पता चलता है कि जब वर्षा ऋतु में करीब वार्षिक वर्षा का 80 प्रतिशत हो जाता है तो शेष समय वर्षा के पानी का भंडारण करके इस्तेमाल करने की जरूरत है, नहीं तो फालतू पानी नदियों के द्वारा समुद्र में बह जाएगा और साल के शेष महीनों में पानी की कमी रहेगी।

**वर्षा की तीव्रता**

कुछ एक स्थानों के 24 घंटे की अधिकतम वर्षा पर दृष्टि डालने पर मालूम होता है कि चेरापूंजी में 24 घंटे की वर्षा 103.6 से.मी. तक हो सकती है। राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में जैसे जयपुर में 24 घंटे की वर्षा 33 से.मी. तक हुई है जबकि वहाँ की वार्षिक कुल वर्षा लगभग 60 से.मी. है।

इससे एक और बात का पता चलता है वह यह है कि 24 घंटे की वर्षा, वर्षा काल के शुरूआत या अंतिम चरण में अर्थात मई-जून या सितम्बर-अक्टूबर में होती है। देश के मैदानी क्षेत्रों और मध्यवर्ती क्षेत्रों में अधिकतम वर्षा अकसर जुलाई-अगस्त में होती है। इतनी तीव्र वर्षा से स्थानीय और निचले क्षेत्रों वाली नदियों में बाढ़ आती है और उपजाऊ मिट्टी को अपने साथ बहा ले जाती है।

- प्रतिदिन मॉनसून की औसत वर्षा 18 मि.मी. या अधिक है।
- वर्षा ऋतु की 100 दिन की अवधि में से वास्तविक वर्षा होने की अवधि 1/10 हैक्टेयर 300 घंटे।
- भारी वर्षा के रूप में गिरने वाली वर्षा किसी स्थान की कुल वर्षा का 50 प्रतिशत है और इसकी वास्तविक अवधि 300 घंटे 1/10 भाग है=300/10=30 घंटे । इसमें वर्षा की तीव्रता 2 या 3 से.मी. प्रति घंटा से 10 से.मी. प्रति घंटा भी हो सकती है।
- इन प्रबल तीव्रताओं के कारण अत्यंत उर्वरक मिट्टी का भारी मात्रा में कटाव तथा बहाव होता है।
- तीव्रता के कारण वर्षा का अंत:स्राव भी केवल 7 से 10 प्रतिशत होता है। यह भूमि पर से वनों एवं वनस्पति के उन्मूलन और शहरीकरण के साथ और भी कम होता चला जाता है।

वर्षा की तीव्रता भारत के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र होने, इसकी भौगोलिक स्थिति एवं पर्वत श्रृंखलाओं की वजह से होती है जो भारत की एक विशेषता है।अब हम ऐसी स्थिति का अध्ययन करेंगे जबकि भारत जैसे देश में जहाँ वर्षा साल में सिर्फ 4 महीने होती है और इन चार महीनों में भी वर्षा

यदि सामान्य से कम हो तो ऐसी स्थिति में अकाल पड़ सकता है और खेती को भारी हानि पहुँचती है और पीने के पानी तक की कुछ क्षेत्रों में कमी हो जाती है। मध्यम सूखा तब होता है, जब वर्षा सामान्य से 25-50 प्रतिशत कम हो। देश के उत्तरी-पश्चिमी भागों में 100 में से 16-18 बार मध्यम सूखा हो सकता है जबकि पूर्वी क्षेत्रों में सिर्फ 2 बार और दक्षिणी क्षेत्र में 8 से 9 बार।

**भयंकर या भीषण सूखा**

वर्षा की कमी 50 प्रतिशत से भी अधिक हो तो भयंकर सूखा कहलाता है। उत्तर-पश्चिमी भारत में भीषण सूखे की बारंबारता 9-11 प्रतिशत है जबकि पूर्वी भागों में भयंकर सूखा नहीं पड़ता। इस प्रकार उत्तर-पश्चिमी और मध्य भारत के भाग सूखे से ज्यादा प्रभावित होते हैं जबकि पूर्वी भारत के बहुत कम। सूखा पड़ने के कई कारण हो सकते हैं। पिछले 100 साल में 17 मध्यम व भीषण सूखे पड़े हैं जिनमें 10 एल नीनो के साथ थे और 7 बिना एल नीनो के ।

अब हम कुछ मौसम संबंधी आँकड़ों का सामान्य जीवन पर प्रभाव देखेंगे-

• हम वायु के तापमान और पवन गति का मिलाजुला प्रभाव देखते हैं। हवा यदि शान्त हो तो -10 तापमान-10 कम ही महसूस होगा । इसी प्रकार हवा की गति यदि 30 कि.मी./घंटा हो तो इस प्रकार बढ़ती हुई हवा की गति के साथ शीत का वास्तविक प्रभाव भी बढ़ जाता है।

• हम वायु के तापमान पर आर्द्रता का प्रभाव भी देखते हैं। शुष्क वायुमंडल में $30^0$ से.मी. तापमान 100 प्रतिशत आर्द्रता में 23 से.मी. वाले तापमान के बराबर आरामदायक महसूस होगा। शुष्क वायुमंडल में $45^0$ से. का तापमान 100 प्रतिशत आर्द्रता वाले वायुमंडल में 28 से. के बराबर कष्टदायक होगा। इसीलिए कम तापमान भी यदि आर्द्रता ज्यादा हो तो ज्यादा महसूस होता है क्योंकि पसीना सूखने से जो राहत खुश्क वायुमंडल में मिलती है वह ज्यादा आर्द्रता होने पर नहीं मिल पाती । वायु का ताप और सापेक्ष आर्द्रता का प्रभाव देखा जा सकता है। $20^0$ और 80 प्रतिशत के बीच आर्द्रता आरामदायक है जबकि $20^0$ से $27^0$ तक का तापमान आरामदायक है। इन सीमाओं के पार के तापमान और आर्द्रता दोनों ही कष्टदायक हैं। यदि तापमान $27^0$ से. से कम हो तो धूप सेकने से आराम मिलता है जबकि $27^0$ से. अधिक हो तो आराम के लिए हवा की जरूरत महसूस होती है।

हम प्रभावी तापमान और उद्भासन काल घंटे मानसिक कार्य करने की क्षमता देखें तो इसके मुताबिक यदि प्रभावी तापमान $30^0$ से. के आसपास है तो मानसिक दक्षता पूरे 6 घंटे हो सकती है। बढ़ते हुए प्रभावी तापमान के साथ मानसिक दक्षता कम हो जाती है। $35^0$ से. पर यह एक घंटा रह जाती है और $45^0$ से. पर उससे भी कम।इसी प्रकार कुछ वैज्ञानिकों ने मौसम संबंधी आँकड़ों का विभिन्न रोगों पर व रोगियों पर भी प्रभाव का अध्ययन किया है।

---

***जल में मीन का मौन है, पृथ्वी पर पशुओं का कोलाहल और आकाश में पंछियों का संगीत, पर मनुष्य में जल का मौन पृथ्वी का कोलाहल और आकाश का संगीत सब कुछ है।***

***❖ रवींद्रनाथ ठाकुर***

**काव्य फुहार**

# कुछ कहना है...

आज का युग रचनात्मकता का युग है .... रचनात्मकता किसी भी कला को या विधा को एक नवीन चेहरा, नवीन ऊर्जा प्रदान करती है। प्राय: हम देखते हैं कि सामान्य सा कार्य जिसकी ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाता यदि उसे रचनात्मकता प्रदान की जाए, उसमें नया रंग भरा जाए तो उसकी ओर सभी का ध्यान आकर्षित होता है। चाहे फिर वह ज्ञान विज्ञान का क्षेत्र हो, कला का क्षेत्र हो या फिर साहित्य, लेखन आदि का क्षेत्र । किसी को हमें उपहार देना है तो हम उसे उपहार खरीद कर सीधे दे सकते हैं परंतु यदि वही उपहार सुंदर कागज में लपेट कर रंगीन धागे आदि से सजाकर दिया जाएगा तो उसका महत्व, उसका आकर्षण इस रचनात्मकता की वजह से और अधिक बढ़ जाएगा और आपके भावों को प्रभावशाली रूप से व्यक्त करने का माध्यम बन जाएगा।

हम अपने भावों को शब्दों में व्यक्त करते हैं और फिर उनका संप्रेषण करते हैं। संप्रेषण एक कला है बल्कि मैं इसे एक विधा मानती हूँ। क्या प्रतिभाशाली या विद्वान व्यक्ति अच्छा संप्रेषक भी हो सकता है। जी नहीं, यह जरूरी नहीं है। बहुत अधिक प्रतिभाशाली या विद्वान व्यक्ति की तुलना में सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति उससे बेहतर संप्रेषक हो सकता है। अच्छा संप्रेषक वह है जो अपने कथन, अपनी बात को श्रोता या पाठक के दिल में उतार सके।

कम शब्दों की अलंकारयुक्त कड़ी
सशक्त, प्रभावशाली हृदय तक चली,
छंदो, लयात्मकता की सरिता बही
ऐसी है जिसकी छवि, है वही सफल कवि।

काव्य में भी संप्रेषण का विशेष महत्व है। कवि गोपाल दास नीरज के अनुसार----- 'कवि अक्षरों की मैत्री करता है, शब्दों की नहीं क्योंकि वाक्य से सूक्ष्म शब्द और शब्द से सूक्ष्म अक्षर होता है। मेरा स्पष्ट मानना है कि आत्मा के सौंदर्य का शब्द रूप कविता है।'

'काव्य फुहार' में इसी दिशा की ओर बढ़ रहे कवियों की कविताओं या यू कहें कि संप्रेषकों के संप्रेषण का पिटारा खोल रहे हैं.......

***सह संपादक***

*काव्य फुहार*

# मौसम का हाल

❖ *विजय घई*
*वैज्ञानिक सहायक*
*मौसम केन्द्र- जयपुर*

जब कुदरत कहर बरपाती है
घनघोर अंधेरा छाता है,
तब मौसम का प्रहरी सबको
पल-पल का हाल बताता है,
उस कठिन घड़ी में सबको
मौसम विभाग याद आता है।

जब छा जाती हैं काली घटाएँ
या होता तेज बवंडर है,
या हो जाए भारी वर्षा या
फिर सूखा थन्डर है,
देख प्राकृतिक आपदा सबका
मन व्यथित हो जाता है ।

जब सागर पर हो तूफानी चक्रवात घना,
या फिर समतल पर हो परिसंचार बना,
रेडार व इनसैट चित्र देखकर वैज्ञानिक,
हमको सारा हाल बताता है।
ऐसे आड़े वक्त में सबको,
मौसम विभाग याद आता है।

अपनी सटीक भविष्यवाणियों के लिए,
यह विभाग जाना जाता है।
जनता को सारा हाल बताकर,
अपना फर्ज निभाता है,
ऐसी कठिन घड़ी में सबको
मौसम विभाग याद आता है।

# दो छंद

❖ *नीलोत्पल चतुर्वेदी*
*कनिष्ठ अनुवादक*
*प्रादेशिक मौसम केंद्र-कोलकाता*

दोहा को चबाया घोंटा सोरठा चौपाई संग,
छंद किया कुन्द पीसा गीत का मसाला है ।

गजलों को तोड़ा और मरोड़ा श्लोक मुक्तकों को,
अक्षर खरीद कर किया शब्द काला है ।

सूर को छपाया मम्मी पापा के नाम पर,
तुलसी की कविता का किया दीवाला है ।

गद्य को खदेड़ा , चीरा फाड़ा पद्य ऐसे जैसे,
गीदड़ों ने शेर का शिकार कर डाला है ।

सूरज से गरमी उमस देन सागर की,
बिजली गिराते इंद्र बारिश कराते हैं ।

हवाएं चलाएं सन सनन पवन देव,
चमन उजाड़ें कभी बाग लहराते हैं ।

भूमिकम्प शेष देवता की करवट करे,
तूफां और आंधी कहो कौन चलाते हैं ।

मौसमी ये खेल देव खेलें नित्य पर बेचारे,
मौसम विज्ञानी बदनाम हो जाते हैं ।

काव्य फुहार

# यह जिंदगी

❖ *सुनंदा गाबा*
*वैज्ञानिक सहायक*
*केंद्रीय विमानन मौसम प्रभाग*

दुनिया को दिया बहुत वक्त तुमने
कुछ वक्त खुद के संग गुजारो यारों ।
बहुत भागते रहे कुछ पाने के लिए
कभी तो जो है तुम्हारे पास
उसमें खुश रहो यारों ।

बहुत परेशां हुए बीते हुए
वक्त की बातों से
बहुत कोशिशें करते रहे
आने वाले वक्त को
बेहतर बनाने की
पर गुजरते वक्त में
ना रहो उदास यारों
खुद को पहचानो,
खुद को जानो यारों
खुद से खुद को जोड़ कर
अपनी जिंदगी संवारो यारों ।

जिंदगी जीने के लिए
हो इक जज्बा
ना हो फिक्र
कि क्या है उम्र या
क्या है रूत्बा
जिंदगी में चाहत हो
इक मुकाम को पाने की
अपनी उस चाहत को जानो यारों
उसे पाने के लिए
खुद को भूल जाओ यारों
जिंदगी में हर पल हँसो,
मुस्कुराओं, गुनगुनाओ, खुश रहो
और खुशियां बांटों यारों ।

जिंदगी नहीं है आसान
पर क्या करेगा
तू हो कर परेशान
हर वक्त को
सहजता से स्वीकार करके
रब का सदा शुक्र मनाओं यारों
जो वक्त आज तुम्हारे पास है
उसी को जी भर के जियो यारों ।

कल किसने देखा है
आज को अपनी मेहनत से
बनाओ इतना खूबसूरत
कि जब यह गुजरा वक्त बने
तो इसकी याद भी होंठों पे
इक मुस्कुराहट लाए यारों ।
जियो, यह जिंदगी इस तरह
कि वह बने
गुजरे हुए लम्हों की
एक बेहतरीन दास्तां
क्योंकि उसने बनाया है
हमें एक इंसां
जियो ऐसे कि लगे
हमनें जी इक मुक्म्मल जिंदगी
जाते जाते भी होठों पे
मुस्कुराहट हो यारों
जिंदगी को जियो यारों,
जिंदगी को जियो यारों ।

# जिन्दगी

❖ *डी.पी संधोकर*
*सहायक मौसम विज्ञानी*
*प्रादेशिक मौसम केंद्र- नागपुर*

दिल के टूटने पर भी हँसना,
शायद जिंदादिली इसी को कहते हैं।
ठोकर लगने पर भी,
मंजिल तक भटकना
शायद तलाश इसी को कहते हैं।
किसी को चाहकर भी ना पाना,
शायद चाहत इसी को कहते हैं।
टूटे खंडहर में बिना तेल के दिया जलाना
शायद उम्मीद इसी को कहते हैं।
गिर जाने पर भी, फिर से खड़ा होना,
शायद हिम्मत इसी को कहते हैं।
और ये उम्मीद, हिम्मत, चाहत, तलाश
शायद जिंदगी इसी को कहते हैं।

# जिस्म

यह जिस्म तो किराये का घर है,
एक दिन खाली करना पड़ेगा।
सांसें हो जाएंगी जब पूरी यहाँ,
रूह को तन से अलविदा कहना पड़ेगा।
मौत कोई रिश्वत लेती नहीं कभी,
सारी दौलत को छोड के जाना पड़ेगा।
ना डर यूँ धूल के जरा से एहसास से,
एक दिन सबको मिट्टी में मिलना पड़ेगा।
मत कर गुरूर किसी भी बात का ए- दोस्त,
तेरा क्या है, क्या साथ लेकर जाना पड़ेगा।
इन हाथों से करोड़ों, अरबों कमा लें भले,
तू यहाँ  खाली हाथ आया,
खाली हाथ जाना पड़ेगा।
ना भर यूँ जेबें, अपनी बेईमानी की दौलत से,
कफन बैगर जेब के ही ओढ़ना पड़ेगा।
यह ना सोच तेरे बगैर कुछ नहीं होगा यहाँ,
रोज यहाँ किसी को 'आना'
तो किसी को 'जाना' पड़ेगा ।

# लाडली बेटी है ये हिंदी

❖ *विलास पठारे*
*एम. टी . एस*
*मौविअमनि (अनुसंधान) पुणे*

संस्कृत की एक लाडली बेटी है ये हिंदी,
बहनों को साथ लेकर चलती है ये हिंदी ।
सुंदर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है,
ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिंदी ।
पाथेय है, प्रवास में परिचय का सूत्र है
मैत्री को जोड़ने की सांकल है ये हिंदी ।
पढ़ने और पढ़ाने में सहज है, सुगम है,
साहित्य का असीम सागर है ये हिंदी ।
तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है,
कवि सूर के सागर की गागर है ये हिंदी ।
वागेश्वरी का माथे पर वरदहस्त है,
निश्चित ही वंदनीय माँ सम है ये हिंदी ।
अंग्रेजी से भी इसका कोई बैर नहीं है,
उसको भी अपनेपन से लुभाती है ये हिंदी ।
यूं तो देश में कई भाषाएं और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिंदी ।

काव्य फुहार

# सरकारी नौकरी

❖ *कृष्ण कुमार गुप्ता*
*सहायक*
*प्रादेशिक मौसम केंद्र- कोलकाता*

जिंदगी का उद्देश्य सिर्फ
सरकारी नौकरी पाना था
इसलिए स्कूल से कॉलेज तक
की पढ़ाई को निभाना था
कठिन परिश्रम एवं लगन को
भी रंग दिखाना था क्योंकि
माता पिता के अरमानों को पंख लगाना था ।

सच्ची पढ़ाई काम कर गई
किस्मत एक साथ चार
नौकरी नाम कर गई
सरकारी नौकरी
ज्वाइन करने का
सपना सच हो गया
मौसम विभाग आकर जीवन धन्य हो गया ।

विभाग में आकर
इसकी सच्चाई को जाना
ससमय कार्य करने को
अपना लक्ष्य माना
काम करने वालों की
बहुत प्रशंसा होती है शायद
इसीलिए सारी ड्यूटी उनके नाम होती है।

काम न करने वालों की
अलग ही परिभाषा है
क्योंकि उनसे काम की
तनिक नहीं आशा है
आप सच्चे कर्मी हैं
सारा काम निबटा लेंगे
अपने साथ साथ उसकी भी फाइल निकाल देंगे।

एक करें या चार,
तनख्वाह सबकी समान है
काम न करने वाले
ऑफिस के मेहमान हैं
उससे नहीं होगा
यही सबकी जुबान है आपकी बात अलग है
क्योंकि काम ही आपकी पहचान है ।

कभी कभी लगता है
काम करना ही मूर्खता है
उन जैसा बनने में ही बुद्धिमत्ता है
काम निबटाएं या नहीं
सैलरी मिल ही जाएगी
इन सब बातो को सुनते सुनते
नौकरी कट ही जाएगी ।

जरूरत है सोच बदलने की
काम ना करने वालों की
मानसिकता बदलने की
सभी काम करेंगे तभी तो विकास होगा
विभाग के साथ साथ देश का भी नाम होगा
काम न करने वालों जाग जाओ
उठो, विभाग के लिए कुछ करके दिखाओ ।

काम शुरू तो करो
मंजिल मिल ही जाएगी आपके साथ
ऑफिस की सूरत भी बदल जाएगी ।

काव्य फुहार

# एक मेरी मां, एक मैं मां

❖ सुषमा
*वैज्ञानिक सहायक*
*सूचना प्रणाली एवं सेवाएँ प्रभाग*

मैं जब इक नन्ही बच्ची थी
मां के आंचल में रहती थी
हर पल मुस्काती मेरी मां
नजरों में समाई रहती थी
मैं हंसती, वो हंसती थी
मैं रोती वो व्याकुल हो जाती थी।

वो मेरा नखरे करना
बात बात पे रूठ जाना
फिर मां का नाज़ उठाना
और हंस कर मेरा मान जाना
सुबह आकर बालों को सहलाना
दूध का प्याला संग लाना
फिर हौले से मुस्काना।

वो मेरी संग सहेली थी
हर दम मुझको सिखलाती थी
हर पल वो निहारा करती थी
और मैं हर पल इठलाती थी
वक्त गुजरा और गुजर गया
मेरे उर नन्हा इक फूल खिला ।

मैं भी एक मां हूं आज
पर शायद मैं उतनी सुखी नहीं
क्योंकि मेरे और बच्चों के चेहरों पर
वो सुकून की हंसी नहीं
न ही वो हंसी ठिठोली है, न ही
उतना नखरे करना, न बात बात पे रूठ जाना ।

मुझे याद है, मेरा नन्हा
उसका मुस्काना, हर पल मेरा उसको
तकना और उस पर निहाल होना
पर जब लगता कि जाना है मुझको तो ऑफिस
बस झटपट सब करना
घर के कामों का निपटाना।

सुबह-सुबह उसका रोना
कि मां तुम आज नहीं जाना
मां को तो जाना ही है
हर पल उसको यह समझाना
बच्चे से दूरी होने पर
पल भर में विह्वल हो जाना।

फिर जाने की मजबूरी पर
आंखों का भर-भर आना
कभी-कभी मुझको लगता
मुझ बिन रोता होगा मेरा लाल
हर पल करता होगा याद मुझे
यह सोचना और सिहर जाना।

इक दिन उसको चोट लगी
चाहा उड़कर पहुंच जाऊं मैं घर
सोचा जाऊं। जब तक पहुंची
तो रो रो कर उसका सो जाना
बस क्या बोलूं, उस पल मन का
व्याकुलता से भर जाना ।

नन्हा मेरा जब दर्द में था
तो पास न मेरा पहुंच पाना
स्कूल से आने पर उसके
साथ न मेरा हो पाना
बस दूर-दूर से फोन पर ही
उसको कहना, कि यह करना और वह खाना।

जब पहुंचूं, तो उसका छज्जे से तकना
दौड़ के आना और लिपट जाना
आज भी आता है याद
मुझे देख, वो चेहरा खिल जाना
सोचती हूं, पल भर के लिए रुक कर
एक मेरी मां थी, एक मैं मां हूं।

वो हर पल थी साथ मेरे
और मैं
हर पल जुदा हूं।
ये सफर है कैसा अनजाना...

## गज़ब

❖ *डी. एस. गायकवाड*
*सहायक मौसम विज्ञानी*
*प्रादेशिक मौसम केंद्र - नागपुर*

तू मेरे आस-पास चाहिए
और तू ही मेरा हमसफर चाहिए ।
हा! मुझे और मुझे ही
दर्द! हर वक्त चाहिए ।

सच बता रे हे इन्सान
जिंदगी किसलिए चाहिए ?

'जंग' भी बार-बार कहे
'अमन' इस विश्व को चाहिए ।
हमेशा की तरह लड़ना-झगड़ना
अब एहसास इन फूलों को चाहिए ।
'कलम' में दर्द आने को
'ज़ख्म' इस दिल को चाहिए ।

कहता यह सुना इन्सान
हमारा उत्थान चाहिए ।
हर किसी को चाहिए खुशियाँ
अश्क किसे चाहिए?

मैं जैसा 'मायूस' और वैसा
दु:ख भी मायूस चाहिए ।
'हसती' जैसे भी तू वैसी
'शर्मिंदगी' बिंदास चाहिए ।

सभी अच्छे-भले इन्सान
सिर्फ वो 'अंदाज' चाहिए ।
'मन की बात' हे प्रिये
हाय गज़ब की चाहिए ।

## प्रभाकर

❖ *सुमन चट्टोपाध्याय*
*सहायक मौसम विज्ञानी*
*प्रादेशिक मौसम केंद्र- कोलकाता*

भास्कर ने दी तेज किरण
शक्ति मिली पूरे जगत भर
दिवाकर की धूप से बना मौसम
धरती में सभी का बचा जीवन ।

तेजोमय किरणों से बना चक्रवात
नभ में व्याप्त वाष्प से बादल सम्पात
तेज हवाओं से बना तूफान
यही है विज्ञान का अनुसंधान ।

पूरब से पश्चिम तक सूरज का अंतरण
विश्व में हुआ शोधन और परिवर्तन
जीव कुल की समस्याओं का हुआ समाधान
सभी तो हैं विश्व पिता की संतान ।

नीचे पृथ्वी स्तर पर आती तुम्हारी कृपा
सूरज है समाज का पालक विश्वरूपा
तिमिर निवारण कर दूर किया सभी का दुख
श्वेत शुभ्र देव ने दिया अपार सुख ।

अनंत कोटि जीव का जाना आना निरंतर
तुम जीवन दाता शक्ति प्रभाकर
पूरे विश्व की विषम भरी विपुल सृष्टि
उपनिषदों की वाणी ''आदित्यात्जायते वृष्टि'' ।

# दोहे

❖ ***अशोक कुमार कश्यप***
***वैज्ञानिक सहायक***
***मौविउमनि (उ.वा.उ) नई दिल्ली***

भागा-भागा जग फिरे, जगमग जग की चाह
जगमग जग की चाह में, निकल रही है आह|

लाखों दीखें मुखौटे, मुख दीखें दो-चार
इसीलिए हैं आदमी, अन्दर से बीमार ।

जग बोले मैं चतुर हूँ, चल तू मेरे संग
मैं बोलूँ ईमान की, पी राखी है भंग ।

जग पहुँचा कुरूक्षेत्र में, खून का खून बहाय
मैं बोलूँ कुरूवंश से, बाँट- बाँट कर खाय ।

जिन पंखों को मिल गई, अपनों की परवाज
वो ही जाकर दूर तक, करें गगन पे राज।

बेईमानी फसल वो, खड़ी-खड़ी लहराय
घर में लाया, ले गई घर को साथ बहाय।

में हनत की चक्की पिसा, जब कोई आटा खाय
इस धरती पर स्वर्ग वो, जीते जी पा जाय।

अपने पलकों बिठा लो, अपने मन को यार
फिर सपने में भी नहीं, होगें तुम बीमार।

पुत्र नहीं किसी काम का, बचपन से चिल्लाय
पुत्र रहा नहीं काम का, कैसे बुढ़िया खाय।

सुनता हूँ ये ज़िन्दगी, धूप-छाँव का खेल
मगर आज भी बेचते, होरी, गोबर भेल।

तन जिसका हो सुदामा, मन कुबेर की खान
दुनियां कहती है उसे, ज़िन्दा दिल इंसान।

लक्ष्य जहाँ धुंधला लगे, वहाँ न छोड़ो तीर
कश्यप ना सह पाओगे, दशरथ जैसी पीर।

काव्य फुहार

# तू तो नारी है

❖ अपूर्वा सिंहरौल
वैज्ञानिक सहायक
मौसम केंद्र- भोपाल

विराट फैली सृष्टि,
अपेक्षाओं भरा संसार
सब कुछ समेट लेना है तुझे
कण कण और अपार ।

परिवार तू, परिचय भी तू
तू प्रेम है, बंधन भी तू
सब कुछ तुझी से है बंधा
इस श्वास का, संसार का संबंध तू ।

उपेक्षा भी, प्रताड़ना भी
अवेहलना और कटाक्ष
सब कुछ सहा है तूने ही
तू प्रत्यक्ष, तू ही साक्षी ।

ममता भरी तू-स्नेहलता
तू बिसरी सी, तू बिखरी सी
कुम्हलाई-सी तू क्यारी है,सब कुछ निहित है
तुझमें ही , तू तो नारी है ।

दुर्गा भी तू , जननी भी तू
तू काली और तू विनाशक
सब रूप हैं तेरे अनेक
पृथक, पृथक, पृथक ।
तू भविष्य, वर्तमान, भूत है
सब तेरे ही वशीभूत है
तू अंलकृत और प्रेरणामयी
तेरा क्रोध सब पे भारी ।

है क्या समझेगा
क्षणभंगुर जग तुझे
तू तो नारी है ।

# क्यों न सुधारे अपनी मति को

❖ आसिया आसिफ भट्ट
वैज्ञानिक सहायक
मौसम केंद्र- श्रीनगर

यदि ये वृक्ष न होते
विहगो का संगीत न होता
शीतल मलय समीर न होती
बहते जल का गीत न होता ।

न होता यदि हिम का आंचल
होता कहा फिर गंगा का जल
प्रभात प्रतीक प्रकाश न होता
नीला ये आकाश न होता ।

हाथी की चिंघाड न होती
शेर की दहाड़ न होती
मानव होता सिर्फ अकेला
बेज़ान खंडहरो का मेला ।

क्या बाँट पाता तनाव को
क्या सह पाता कृतघ्नता के घाव को
फिर क्यों नष्ट करे प्रकृति को
क्यो न सुधारें अपनी मति को ।

*यात्रा वृत्तांत*

# अंडमान निकोबार में बिताए वे दिन

❖ *रामहरि शर्मा*

भारत का एक छोटा सा हिस्सा जो चारों तरफ समुद्र जल से घिरा हुआ है, इसकी यात्रा करने का सौभाग्य मिला। बड़ा ही सुन्दर मनमोहक द्वीप समूह है। इसके चारों तरफ समुद्र जल है जो कहीं हरा और कहीं नीला है। यह है, अंडमान निकोबार द्वीप समूह तथा इसकी राजधानी पोर्टब्लेयर है। चेन्नै उड़नखटोला स्टेशन पर कार्यालय के ही कुछ साथी मिले जिनके साथ वहाँ उड़न खटोले का इंतज़ार करना था। उनके साथ समय बिताया। जब चेन्नै से उड़न खटोले (हवाई जहाज) में हम बैठे तो चारों तरफ से समुद्र जल ही दिखाई दे रहा था। यह नजारा बहुत ही अद्भुत था। कहीं पहाड़ तो कहीं जल। यह छोटे छोटे भूखंडों में बँटा हुआ है जिन्हें द्वीप (आईलैंड) कहते हैं। दो घंटे की उड़ान के बाद अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर पहुँच गए। शहीद वीर सावरकर के नाम पर उड़न खटोले स्टेशन (यानि हवाई अड्डा) का नाम रखा गया है। इस उड़न खटोले की यात्रा यहीं तक थी इससे आगे की यात्रा कार से की और गेस्ट हाउस पहुँचकर अपना ठौर ठिकाना जमा लिया। वहाँ जाकर हम योजना बनाने लगे कि इस यात्रा को कैसे सुंदर और यादगार बनाया जाए। सर्वप्रथम हमने टैक्सी वाले से बात की जिसने पाँच दिनों की पूरी यात्रा का कार्यक्रम बना लिया।

सरकारी गैस्ट हाउस था, दाल रोटी खाने वाले हम। वहाँ यह आसानी से नहीं मिलती है। खाने की थोड़ी समस्या थी जो लोग शाकाहारी होते हैं उनके लिए कुछ कठिनाइयाँ वहाँ आती हैं लेकिन प्रकृति की गोद में अति सुंदर नज़ारों के बीच खुद को पाकर यह समस्या हमें तुच्छ जान पड़ती थी। तो जो भी शाकाहारी उपलब्ध था उसी को सहर्ष स्वीकार किया ।चारों तरफ नारियल के बाग और प्रत्येक स्थान पर बड़े बड़े पानी वाले नारियल की भरमार है। तो हमने सोचा कि हम सुबह शाम नारियल जरूर पियेंगे और जो भी कुछ थोड़ा बहुत शाकाहारी मिलेगा ले लेंगे।

**पहला दिन:**

पोर्टब्लेयर के पर्यटनस्थल के लिए हम टैक्सी से सुबह 11 बजे निकले। सबसे पहले मरीन म्यूजियम देखा जहाँ पर विभिन्न प्रकार की मछलियाँ को रखा गया है। इस म्यूजियम के बाहर जरवा आदिवासी का पुतला रखा हुआ है जो तीर कमान लिए सिर पर लाल रंग का टोप तथा कुछ कपड़े पहने कमान पर तीर ताने हुए खड़ा हुआ बहुत संदर लग रहा था। दो घंटे मरीन म्यूजियम में हमने बिताए और यादगार के लिए लिए तस्वीरें ली। हमारे साथ और भी टूरिस्ट मिल गए जिनसे काफी बाते हुई। यहाँ पर बड़े बड़े नारियल बिक रहे थे सो नारियल पानी पिया। अब हमें अपने अगले पड़ाव की ओर चलना

❖ *मौसम विज्ञान के महानिदेशक के कार्यालय में वैज्ञानिक सहायक के पद पर कार्यरत हैं*

था। यह चाथम नाम से लकड़ी का एक कारखाना है। वहाँ पर समुद्र के पानी में लकड़ी के बड़े बड़े लट्ठ (लॉग) यानि पेड़ के तने बहकर आ रहे थे। यहाँ हाथियों को लॉग खींचने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। समुद्र के बहते पानी में लॉग छोड़ दिए जाते हैं और यहाँ पर एक रूकावट लगाई गई है। उसमें ये लॉग फस जाते हैं। कारखाने के कर्मचारी इन लॉगों को इकट्ठा करते हैं। कुछ दिन धूप में रख देते हैं। इसके बाद जरूरत के अनुसार मशीन के द्वारा इन्हे चीरते हैं। इस कारखाने में हमने एक डेढ़ घंटे का समय बिताया। मशीनों के द्वारा रोलरों पर विभिन्न प्रकार की लकड़ी के तखते चीरे जा रहे थे। वहाँ की लकड़ी एक तरह का लोहा होती है जिसकी जिंदगी लगभग 100 वर्ष से अधिक मानी जाती है। प्रमाण तो नहीं है परंतु जैसा कि वहाँ बताया गया और हमें देखने से भी यह लग रहा था कि वहाँ लकड़ी पर न तो पॉलिश होती है और न ही पेंट लेकिन फिर भी यह लकड़ी इतनी सुंदर और टिकाऊ है। यहाँ काफी अच्छा लगा चारों तरफ इसके समुद्र जल था। समुद्र के ऊपर ही एक पुल है जिससे गुज़र कर वहाँ पहुँचा जाता है। फिर हम अपने अगले गंतव्य स्थान की ओर चल दिए। यह स्थान एंथ्रोपॉलेजी यानि मानव संरचना का म्यूज़ियम था। यह म्यूजियम तीन मंज़िला इमारतें में है। एक एक करके मंजिलों को तय करके म्यूज़ियम देखा। कई देशों के आदिवासी भारत अर्थात अंडमान-निकोबार में आए हुए हैं और भारत से कई देशों में ये आदिवासी गए हुए हैं जिसमें भारत, मंगोलिया, दक्षिणी अफीका, चीन इत्यादि शामिल हैं।

विभिन्न देशों के आदिवासी यों के रंग रूप भी अलग-अलग हैं। उनके रहने की झोंपड़ी, खाने के साधन अर्थात शिकार करने के तरीके, दूर संचार के तरीके, उनकी संस्कृति , उनके मनोरंजन के तरीके इस म्यूज़ियम में दर्शाये गए हैं। इसको देख कर लगा कि इनकी भी एक अलग ही दुनियाँ है। यहाँ इनके अलग अलग देशों के आदिवासियों के हथियार, पहनावे, इत्यादि दिखाए गए हैं। इस म्यूजियम में दो घंटे का समय बिताया और अगले गंतव्य की ओर चल दिए। बीच, ज्यादा दूर नहीं था इसे मीना बीच कहते हैं। यहाँ पर समुद्र की लहरें तेज़ी से किनारे से टकरा रही थी। लोग समुद्र की लहरों का आनंद ले रहे थे। समुद्र के किनारे नारियल के पेड़ थे जिन पर खूब सारे नारियल लदे हुए थे। हमने फिर एक एक नारियल पिया । शाम ढल रही थी हमें सेल्यूलर जेल की तरफ प्रस्थान करना था। दिन छिपने पर 7:00 बजे शाम को यहाँ पर लाइट एंड साउंड शो शुरू होता है। यह लगभग एक घंटे चलता है। यहाँ पर एक म्यूजियम है जिसमें हमारे देश के वीर शहीदों की तस्वीरें लगी हुई हैं। इन शहीदों को अंग्रेजी सरकार ने कैसी कैसी यातनाएँ दी उन दृश्यों को भली भाँति चित्रण के साथ-साथ मूर्तियों में भी दर्शाया गया है। उन्हें देख कर प्रत्येक भारत वासी भावुक हो उठता है। सेल्यूलर जेल गोलाई में सात कतारों में बनाई गई थी जिसका एक केंद्र है जहाँ से एक शिकारी अर्थात एक ही गार्ड इन सभी लाइनों पर आसानी से नज़र रख सकता था। प्रत्येक लाइन दो मंजिलों की बनी हुई है। इनमें छोटे छोटे सेल बनाए गए थे। एक कैदी दूसरे कैदी से बात नहीं कर सकता था। इन सेलों में लोहे के भारी भारी गेट

लगे हुए थे जिसे तोड़ना तो दूर की बात है खोलना भी कठिन होता होगा। इस समय केवल तीन कतारें ही खड़ी हुई है और शेष कतारों के बारे में बताते हैं कि समुद्री तूफान ने उन्हें निगल लिया। यहाँ से रॉस आईलैंड दिखाई दे रहा था जहाँ पर अंग्रेज अधिकारी रहा करते थे। वहीं से जनवरी के महीने में आम से लदे हुए पेड़ भी दिखाई दे रहे थे। यह बहुत ही सुंदर दृश्य था लेकिन शहीदों को दी गई यातनाओं के बारे में सोचकर आँखों से आँसू बह रहे थे। सबसे कोने में वीर सावरकर की सेल थी जिसमें उनके खाने, पीने,पहनने के कपड़े भी सहेज कर रखे गए हैं। इनके बारे में सख्त हिदायत दी गई थी कि उनसे कोई बात न करे। ये राजनैतिक कैदी थे और पढ़े लिखे थे। इन्हें कुछ वर्षों के बाद रिहा कर दिया गया था और बाद में इनकी मृत्यु हो गयी।

लाइट एंड साउंड शो का समय हो रहा था। गाइड ने हमें ऐसे स्थान पर बिठाया जहाँ से सभी कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसके दिशानिर्देशों के मुताबिक हमने अपनी सीट सबसे पहले ले ली थी। आधे घंटे के बाद लाईट एंड साउंड शो शुरू हुआ जो बहुत ही भावुक कर देने वाला शो था। जिस क्रांतिकारी कैदी के बारे में बताते थे उसी के सेल के अंदर लाइट जलती थी और पीछे से अंग्रेजी हुक्मरानों के उन्हें पीटने, डाँटने यंत्रणा देने तथा कैदियों के चीखने की आवाजें आती थी जो सभी दर्शकों के दिलों को झकझोर जाती थी। अनायास सभी की आँखों से अश्रुधार बहने लगी। अंग्रेजी हुक्मरानों ने कैसे कैसे हमारे देशभक्त शहीदों को यातनाएं दी थी। जब यह जेल बनाई जा रही थी, बताते हैं कि सभी पेड़ काट दिए गए थे। यह द्वीप सबसे खतरनाक था क्योंकि कोई भी व्यक्ति यहाँ से भाग नहीं सकता था। इसके चारों तरफ दूर-दूर तक समुद्र ही है। लेकिन गलती से एक पीपल का पेड़ कटने से बच गया था। बताते हैं कि वह पीपल का पेड़ रोज सोचा करता था कि आज कटने का नम्बर उसका है। परन्तु बार बार उसकी जान बच जाती। यह पेड़ एक बार पूर्ण रूप से गिर गया था लेकिन फिर से वह जी उठा और बड़ा हो गया। इस पेड़ की भी शहीदों की तरह दुख भरी कहानी है। यह लाइट एंड साउंड शो एक घंटे चला जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की आँखों से आँसू बह निकले। यह नज़ारा बड़ा ही दिल दहलाने वाला था। किसी भी व्यक्ति को जिसे अपने देश से थोड़ा भी प्यार होगा तो वह उसी मन स्थिति में पहुँच जाता है जिस समय भारत के क्रांतिकारी अंग्रेजी सरकार की यातनाएं झेल रहे थे। उस समय ना कोई मुस्लिम था ना कोई हिदू, ना कोई ईसाई ना कोई सिख, था तो केवल भारतीय। उनका जुनून था कि भारत आजाद हो। अंग्रेजी सरकार देश से बाहर निकले। हमें बताया गया कि द्वितीय विश्व युद्ध में पोर्टब्लेयर पर जापानियों को प्रत्येक व्यक्ति अंग्रेजों का जासूस लगता था। जापानी अंग्रेजों से भी अधिक कड़ी यातनाएं कैदियों को दिया करते थे। उनके प्रशासन का कोई नियम कानून नहीं था। इसके खिलाफ कई बार कैदियों ने जेल में भूख हड़ताल की ताकि कैदियों को उनके जरूरत का सामान मिल सके। इस प्रकार सेल्यूलर जेल का दृश्य बड़ा ही भावुक रहा। पूरी रात क्रांतिकारियों के बारे में सोचते सोचते निकल गई।

**दूसरा दिन**

हमने हैवलॉक आईलैंड जाने का निश्चय किया। यहाँ पर एक बीच है। यहाँ पर आप समुद्र में स्नान कर सकते हैं। समुद्री जहाज से हैवलॉक आईलैंड तक पहुँचा जाता है। इस शिप की आप ऑनलाइन टिकट भी बुक करा सकते हैं। हमारे गाइड ने ऑनलाइन टिकट बुक कर लिए थे। हम सुबह समुद्री जहाज की बंदरगाह पहुँच गए,जहाँ वे जहाज हमें सुबह 7:00 बजे हैवलॉक आईलैंड की तरफ ले जाने के लिए तैयार खड़ा था। हमने क्रू मेम्बर से अपर डेक की सीट के लिए अनुरोध किया तो उसने हमें आश्वस्त किया कि पहले शिप में सभी यात्रियों को बैठ जाने दो फिर देखते हैं। हमने यह यात्रा पानी के जहाज के द्वारा चार घंटे में तय की और भरपूर आनंद लिया। अपर केबिन से बहुत अच्छा नजारा दिखाई दे रहा था। 11:00 बजे हैवलॉक हार्बर पर पहुँच गए। यहाँ पर हमने नाश्ता किया। नाश्ते में दक्षिण भारतीय खाना था। वहाँ से हैवलॉक बीच 10 कि.मी. दूर है। टैक्सी से 11:30 बजे तक हैवलॉक बीच पर पहुँच गए। वहाँ पर समुद्र में नहाने के लिए कपड़े बिक रहे थे, नारियल भी बिक रहे थे। सबसे पहले हमने नारियल पानी पिया। इसके बाद हमने नहाने के कपड़े लिए और समुद्र की लहरों में कूद गए। इस बीच पर विभिन्न प्रजाति के लोग नहा रहे थे। समुद्र स्नान ने हमें आनंदित किया। हमारा उसकी लहरों से टकराना, कभी डूब जाना कभी उसके किनारे पर घूमना, कभी उससे सटे जंगल में घूमना। मतलब यह है कि खूब आनंद लिया। शिप के क्रू मेम्बर ने हमें पहले ही दिशा-निर्देश दे दिए थे कि शाम को 4:00 बजे तक वापस हार्बर आना है। यहाँ से शिप चार बजे वापस पोर्टब्लेयर जाएगा। 3:00 बजे शाम हम स्नान ही करते रहे और 3:30 बजे के लगभग वापस हार्बर की तरफ चल दिये। 3:50 बजे शाम को हार्बर पर आए तो क्रू मेम्बर हमारा इंतजार कर रहे थे। हम सबसे पीछे रह गए थे तभी क्रू मेंम्बर ने दूर से हमें जल्दी आने का इशारा किया क्योंकि शिप चलने को तैयार था। हम तेज़ी से चले और शिप के ऊपर केबिन में जा बैठे। उसके बाद हमने शिप के बाहर खड़े होकर समुद्र का नजारा देखा। कुछ समय बाद हम शिप से पिछले भाग की तरफ गए। शिप के पिछले भाग से चारों तरफ का समुद्र दिखाई दे रहा था। बीच बीच में हरे भरे द्वीप दिखाई देते थे। हम कैमरे से लगातार तस्वीरे ले रहे थे। आँखों में सुंदर नज़ारा भर रहे थे। उसे ही कैमरे में बंद करते जा रहे थे और लगभग 7:45 बजे देर शाम को वापस पोर्टब्लेयर आ गए । वहाँ पर कुछ दूरी पर गाइड हमारा इंतजारा कर रहा था। 9:00 बजे हम वापस गेस्ट हाउस में पहुँच गए । थकावट से चूर थे। गेस्ट हाउस में ही हमने चाय की चुस्की ली और थोड़ा बहुत जो हमारे पास खाने की वस्तुएं थी उसका भोग लगाया और बिस्तर पर गिरते ही सो गए। अगले दिन का प्रोग्राम हमारा जॉली बॉय बीच जाने का था।

**तीसरा दिन**

अगले दिन गाइड के साथ सुबह आठ बजे हम जॉलीबॉय बीच की तरफ चल दिये। रास्ते में हमने

सुनामी के अवशेष देखे। सुनामी ने सब कुछ बरबाद कर दिया था। घर, झोपड़ी इत्यादि टूटे हुए थे। रास्ते में एक बोटेनिकल गार्डन देखा। तभी गाइड ने गाड़ी रोकी और 5-5 रूपये की टिकट लेकर हमने गार्डन में प्रवेश किया। वहाँ पर भी सभी प्रकार की जड़ी बूटियाँ तथा उनके पेड़ हैं। सभी पौधों पर उनके नाम की प्लेट लगी है। उस पर पौधे का पूरा विवरण लिखा हुआ है कि यह कौन सा पौधा है,किस बीमारी में काम आता है, इसकी प्रजाति क्या है, इसको किस बीमारी में कैसे लेना चाहिए आदि। हमने वहाँ एक घंटा बताया। फिर अपने अगले पड़ाव जालीबॉय की तरफ चल पड़े। वहाँ बंडूर गाँव है जहाँ से शिप से जालीवॉय-बीच के लिए जाया जाता है। वहाँ पर हमने नाश्ता किया,उसके बाद टिकट ली। वहाँ पर एक फार्म भरना पड़ता है जिस में यात्री के अपने बारे में पूरी ब्योरा देना होता है। हमने उस फार्म को भरा। वन विभाग के यहाँ पर सख्त दिशानिर्देश है कि बीच पर कोई गंदगी नहीं करनी है पर्यावरण को साफ सुथरा बना के रखना है। वन विभाग के लोग ही यहाँ पर टिकट जारी करते हैं। बीच पर किसी तरह से कचरा फैलाना सख्त मना है। वे पानी की बोतलें भी अपनी ही देते थे जिनका वे चार्ज करते थे। उन बोतलों में हम मिनरल वॉटर भर लेते थे। वापस आकर आप खाली बोतलें वापस करेंगें तो आपने जो पैसे जमा किए हैं वो वापस आपको मिल जायेंगे। हमने दो बोतले ली और आगे बिसलेरी की दो बोतले खरीद कर उनमें पानी भर लिया और शिप की जैटी की तरफ चल पड़े जहाँ पर शिप हमारा इंतजार कर रहा था। हम शिप में बैठ गए। यह छोटा शिप था। चारों तरफ से खुला था। आधे घंटे के अंदर हम जॉलीबॉय बीच पर पहुँच गए । जॉलीबॉय बीच स्नॉर्कलिंग और कोरल के लिए प्रसिद्ध है। इसे देखने का मौका मिला। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के कोरल थे जो गहरे समुद्र में जाकर देखे जा सकते हैं। इसके साथ ही वहाँ पर स्नार्कलिंग करने का मौका मिला जिसमें समुद्र की गहराई में जाकर विभिन्न प्रकार की रंग-बिरंगी मछलियाँ देखी जा सकती है। क्रिस्टल क्लियर साफ चमचमाता समुद्र जल। स्नॉर्कलिंग के लिए एक बोट में कम से कम छह यात्रियों का बिठाया जाता है। इन यात्रियों को ऊपर से चादर से ढक दिया जाता है। ताकि सूर्य की रोशनी न आए । बोट के तल में पारदर्शी शीशा लगा होता है। इस शीशे में से समुद्र के अंदर गहराई तक सब कुछ दिखाई देता है। इस बोट को बीच समुद्र में ले जाते हैं। जहाँ पर रंग बिरंगी मछलियाँ पाई जाती है। उस शीशें में से विभिन्न प्रकार के जीवित व मृत कोरल भी दिखाई देते हैं। साथ में रंग बिरंगी मछलियाँ और अन्य प्रकार के समुद्री जीव भी दिखाई देते है। एक घंटे की स्नॉर्कलिंग के बाद हम समुद्र में स्नान करने के लिए गए। हमने दो घंटे खूब स्नान किया। दोपहर बाद लगभग 3:00 बजे शाम को वापस बंडूर के लिए रवाना हो गए । गैस्ट हाउस लौटते समय रबड़ प्लांट देखें। रबड़ कैसे बनाई जाती है यह देखने को मिला। दालचीनी के पेड़ देखे। मधुमक्खी पालन के फार्म भी देखने को मिला। लगभग 6:00 बजे हम वापस आ गए । वहाँ से 1 घंटे के अंदर हम गेस्ट हाउस पहुँचे। यह पहला दिन था कि 6:00 बजे तक हम वापस गेस्ट हाउस आए। थोड़ा आराम किया और रेस्टोरेंट में

डिनर किया। सोते समय दिन भर के दृश्य आँखों के आगे घूम रहे थे। अगले दिन का कार्यक्रम भारतांग जाने का था बड़ी ही रोमांचकारी यात्रा करनी थी।

**चौथा दिन**

सुबह सात बजे हम भारतांग की और चल पड़े। यह काफी दूर है। लगभग 125 कि.मी. की दूरी पर है जिसमें 50 कि.मी. का घना जंगल रास्ते में आता है। उस घने जंगल में जरवा नाम से प्रसिद्ध आदिवासी जाति के लोग रहते हैं। लगभग 9:00 बजे हम घने जंगल में प्रवेश द्वार पर पहुँच गए जहाँ पर पोर्टब्लेयर पुलिस का चेकपोस्ट है इस चेकपोस्ट पर सुबह आने वाली गाड़ियों को कतार में इकट्ठा किया जाता है जब लगभग 60-70 गाडियाँ इकट्ठी हो जाती हैं फिर इन गाड़ियों को एक साथ छोड़ा जाता है इस कॉनवॉय में सबसे आगे, बीच में तथा अंत में पुलिस की गाड़ी होती है जो आधुनिक हथियारों से लैस होती है। घने जंगल में जरवा आदिवासी पूरे रूप से नग्न और कोई आंशिक रूप से ढके हुए होते है। ये लोग हिंसक होते हैं जो मनुष्य को देखकर आक्रमण कर सकते है। कॉनवॉय को छोड़ने से पहले यहाँ चैक पोस्ट पर विभिन्न प्रकार के दिशानिर्देश लिखे होते हैं। उसके बाद भी गाइड पर्यटकों को समझाते हैं कि यहाँ फोटो खींचना मना है ताकि कैमरे की फ्लैश से ये लोग गलत अर्थ लेकर आक्रमक न हो उठे। इन्हें चिढ़ाना नहीं है। अधिक देर तक उन्हें देखना नहीं है इत्यादि। इस जंगल को लांघते समय तो जंगल के अधिकारी और कर्मचारी भी मिलते है। ये लोग इनका संरक्षण कर रहे हैं। जब इस घने जंगल से हम गुजर रहे थे तभी कुछ दूरी पर जरवा आदिवासियों का एक समूह दिखाई दिया जिसमें एक आदमी और एक औरत थी, जिनके आठ दस के करीब बच्चे थे। वे सड़क के किनारे बैठे हुए थे। तभी गाइड ने हमारा ध्यान आकर्षित किया देखो ये लोग जरवा आदिवासी है। ये लोग पूर्ण रूप से नग्न थे। इनके हाथों में धनुषबाण थे और कुछ के पास भाला और बरछी थी। ये लोग हिरन, सुअर इत्यादि जानवरों का शिकार करते है और उनका मांस खाते हैं। इनका रंग बहुत ही काला था। छोटे छोटे घुंघराले बाल थे अर्थात अफ्रीकन की तरह थे। इस प्रकार यहाँ जंगल पार किया और हम भारतांग पहुँच गए। बीच में समुद्र है जिसकों बड़े शिप से पार कराया जाता है। उसमें तीन चार बसें, पाँच सात कारें आ सकती है। हम इस पर सवार हुए और 10 मिनट के अंदर दूसरी तरफ पहुँच गए । वहाँ पर जाकर नारियल पानी पिया और लंच किया। इसके बाद बोट में बैठ कर लाइम स्टोन गुफाओं को देखने के लिए निकले। समुद्र में आधे घंटे की यात्रा की और लाइम स्टोन की गुफाओं की तरफ चल पड़े। गुफाएं समुद्र तट से लगभग 1 कि.मी. की दूरी पर थी। जैटी से एक कि.मी. पैदल चलकर हम लाइम स्टोन गुफाओं तक पहुँचे। ये गुफाएं काफी लंबी है और ऊँचाई पर झरोखे बने हुए है। हमें यह बताया गया कि इनका पता सुनामी के दौरान ही चला है। विभिन्न प्रकार के आकारों की गुफाएं थी जिन पर विभिन्न प्रकार के देवी देवताओं के नाम पर इन गुफाओं का नाम रखा गया है। यहाँ रास्ते में दो चार छोटे-छोटे गाँव मिले जो लगभग 8-10 परिवार के

थे। दो घंटे के अंदर हम वापस जैटी के पास आ गए और पुन: स्टीमर में बैठ कर भारतांग आ गए । भारतांग से हम चार बजे चल दिये। वहाँ से उसी प्रकार फिर कॉनवॉय चल दिया। इस घने जंगल को पार करते हुए हमें फिर से एक जरवा आदिवासी मिला । लगभग 6 बजे हम फिर उसी चेक पोस्ट पर वापस आ गए। यहाँ हमने चाय पी और 10 मिनट का विराम लिया फिर पुन: अपनी यात्रा शुरू कर दी और लगभग शाम 7:30 बजे तक पोर्टब्लेयर आ गए । इससे अगला दिन अंतिम पड़ाव का दिन था।

**पाँचवा दिन**

इस यात्रा का अंतिम दिन, जितना भी देख सकें। सुबह सुबह हम रॉस आईलैंड की तरफ निकल गए । वहाँ जैटी पर काफी इंतजार करना पड़ा क्योंकि वाटर बोट वाला एक बार में कम से कम चार यात्रियों को ले जाता था। हमने फिश म्यूजियम देखने का फैसला किया। इस म्यूजियम में समुद्र में पाई जाने वाली सभी मछलियों के ढाँचे रखे गए थे। एक घंटे के बाद हमें रॉस आईलैंड जाने का मौका मिला। यहाँ पर देखा कि अंग्रेज अधिकारी कितना आनंद लेते थे और भारत के क्रान्तिकारियाँ को कैसी कैसी यातनाएं देते थे। यह द्वीप बहुत छोटा सा था। चारों तरफ से समुद्र जल से घिरा हुआ। यह सुरक्षा की दृष्टि से काफी सुरक्षित था। वहाँ काफी समय बिताया और देखा अंग्रेजों का जीने का स्तर उच्च था। दो घंटे का समय बिताने के बाद हम वापस उसी जैटी पर आ गए । इसके पश्चात हमें नॉर्थ बे- आईलैंड पर जाना था। यह यात्रा भी हमें स्टीमर से करनी थी। लगभग आधे घंटे के बाद हम नार्थ बे पहुँच गए। वहाँ देखा कि छोटा सा द्वीप चारों तरफ से नारियल के पेड़ों से घिरा हुआ है। हमने नारियल का पानी पिया और समुद्र जल में कूद पड़े क्योंकि वहाँ जनवरी के महीने में भी गर्मी का मौसम था। करीब करीब दो घंटे का समय समुद्र के हरे जल में कैसे बीत गया पता ही नहीं चला। वहाँ पर काफी पर्यटक स्कूबा डाइविंग कर रहे थे। स्कूबा डाईविंग में एक स्कूबा डाइविंग का काला ड्रेस होता है। पीठ पर एक आक्सीजन सिलेंडर बाँध दिया जाता है। ताकि पानी के अंदर आपको सांस लेने में कोई परेशानी न हो। इसमें आपको सांस छोड़नी होती है जो बुलबुले के रूप में समुद्र की सतह पर दिखाई पड़ती है। इस पानी में विभिन्न प्रकार के समुद्री जीव देखने को मिलते हैं। डाइविंग का आपको एक CD (सी डी) तथा कुछ फोटो दिये जाते हैं ताकि आप इसको बाद में देख सकें। इसमें लगभग दो घंटे का समय लगता है।

4:00 बजे हम वापस पोर्टब्लेयर आ गए। आने के बाद कुछ शॉपिंग की और बाजार में घूमें । बाजार विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से भरा पड़ा था। कुछ देर बाजार में आनंद लिया और अपने गैस्ट हाउस की तरफ चल पड़े। 10 मिनट के बाद गैस्ट हाउस आ गए। अगले दिन यहाँ से वापसी का था। हमें उड़न खटोला पकड़ना था। सुबह 6:00 बजे गैस्ट हाउस छोड़ दिया और टैक्सी से वीर सावरकर हवाई अड्डे पर आए। लगभग 8:00 बजे उड़न खटोले पर सवार हुए और दो घंटे बाद मद्रास स्टेशन यानि चेन्नै आ गए। यह थे हमारे अंडमान निकोबार में बिताए दिन।

यात्रा वृत्तांत

# आइए विशाखापट्टनम का भ्रमण करें

❖ कु.वै.बालसुब्रमणियन

## यात्रा क्यों करें ?

भारतीय प्राचीन ग्रंथों में स्पष्ट रूप से मानव के विकास, सुख और शांति, संतुष्टि व ज्ञान के लिए पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है। हमारे देश के ऋषि मुनियों ने भी पर्यटन को प्रथम महत्व दिया है। प्राचीन गुरुओं (ऋषि-तपस्वियों) ने भी यह कहा है कि बिना पर्यटन मानव अन्धकार प्रेमी होकर रह जाएगा । पाश्चात्य विद्वान संत ऑगस्टिन ने तो यहाँ तक कह दिया कि बिना विश्व दर्शन ज्ञान ही अधूरा है । पंचतंत्र नामक भारतीय साहित्य दर्शन में कहा गया है कि विधाक्तिम शिल्पं तावन्नाप्यनोती मानवः सम्यक यावद ब्रजति न भुमो देशा - देशांतरः ।

भारत मनमोहक दृश्यों, ऐतिहासिक महत्व के स्थानों तथा शानदार शहरों, सुनहरे तटों, धुंध वाले पर्वतों, रंग-बिरंगे लोगों, समृद्ध संस्कृति और त्योहारों का देश है। भारत विदेशी यात्रियों के लिए, अंतरराष्ट्रीय छात्रों और यहां तक कि प्रवास के इच्छुक व्यक्तियों के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य के रूप में अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर अपना स्थान तेजी से सुदृढ़ कर रहा है। स्वास्थ्य और चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में एक आकर्षक गंतव्य के रूप में भारत की साख बढ़ी है। भारत की यात्रा पर्यटकों के लिए असाधारण होती है क्योंकि आश्चर्यों से भरे इस देश में दक्षिण के सुंदर समृद्ध समुद्र तट, जादू भरे बैक वॉटर, उत्तर दिशा में प्राचीन सभ्यताओं के अवशेष, विशाल पर्वत, लंबी घाटियां, हरे भरे मैदान और उष्णकटिबंधीय वर्षा वन जैसे दिलकश नजारे लोगों का मन मोहने के रहस्य अपने में समेटे हुए हैं।

यह कहा जाता है कि यदि आप विश्वभ्रमण कर चुके हैं तो आपने अब तक केवल आधी दुनिया ही देखी है और यदि भारतीय उपमहाद्वीप का भ्रमण किया है तो आपने पूरी दुनिया देख ली है। पर्यटन की दुनिया में अपनी ऐतिहासिक विश्व धरोहरों और परंपरागत आध्यात्मिकता के कारण भारत एक नए गंतव्य के रूप में अत्यंत तेजी से उभर कर सामने आया है। यह दोनों ही बातें विश्वभर के उत्साही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं ।

## विशाखपट्टनम का महत्व

विशाखपट्टनम भारत में ऐसा ही एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। यह तटीय उत्तरी आंध्र प्रदेश में है। यह गोवा की तरह एक सुंदर जगह है, जहां पहाड़ और समुद्र के किनारे दोनों पास -पास होते हैं। विशाखपट्टनम (विजाग - उपनाम) आंध्र प्रदेश में (वर्तमान सीमांध्र में) सबसे बड़ा शहर है।

❖ प्रादेशिक मौसम केंद्र - चेन्नै में सहायक मौसम विज्ञानी के पद पर कार्यरत हैं

विशाखपट्टनम, सीमांध्र राज्य की प्रस्तावित राजधानी अमरावती के उत्तर पूर्वी दिशा में 370 किलोमीटर आंध्र प्रदेश और तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद से 701 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

यह विशाखपट्टनम जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है। पूर्वी घाट पर्वत श्रृंखला और बंगाल की खाड़ी के बीच शहर बसे हैं। विशाखपट्टनम पोर्ट कार्गो संभालने के मामले में भारत में पांचवां सबसे व्यस्त बंदरगाह है। यह शहर भारतीय नौसेना के पूर्वी नौसेना कमान्ड के मुख्यालय के रूप में कार्य करता है तथा सबसे पुराना शिपयार्ड है और भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक ही प्राकृतिक बंदरगाह है।

विशाखपट्टनम का इतिहास छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व से मिलता है। ऐतिहासिक रूप से, यह कलिंग क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है। बाद में यहाँ वेंग़ी, पल्लव और पूर्वी गंगा राजवंशों का शासन था। मौजूदा पुरातत्व के रिकॉर्ड के अनुसार इस शहर का 11वीं और 12वीं शताब्दी के आसपास निर्माण किया गया था। शहर पर नियंत्रण तो पहले चोल राजवंश और गजपति राजवंश रखते थे। विजयनगर साम्राज्य ने 15वीं सदी में अपनी विजय के बाद शहर का शासन अपने हाथ में ले लिया। बाद में,16वीं सदी में मुगलों ने इस शहर पर विजय प्राप्त की । फिर यूरोपीय शक्तियों ने शहर में व्यापारिक हितों की स्थापना की और उसके बाद यह शहर फ्रांसीसी और ब्रिटिश नियंत्रण में आ गया। आजादी के बाद, विशाखपट्टनम देश के प्रमुख बंदरगाहों में से एक के रूप में विकसित और भारतीय नौसेना के पूर्वी नौसेना कमान्ड का मुख्यालय बन गया।

यह शहर अक्सर पूर्वी तट का गहना, भाग्य का शहर और पूर्वी तट का गोवा के रूप में जाना जाता है। विशाखापट्टनम के समुद्र-तटों (जैसे रामकृष्ण मिशन बीच और ऋषिकोन्डा बीच), पार्कों (जैसे कैलासगिरि और VUDA पार्क), संग्रहालयों (जैसे कुर्सुरा पनडुब्बी संग्रहालय और विशाखा संग्रहालय के रूप में) और प्राकृतिक सुंदरता ने (जैसे कांपलकोन्डा वन्यजीव अभ्यारण्य, अरकु घाटी और बोर्रा गुफाएं) इस शहर को एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल बना दिया है।

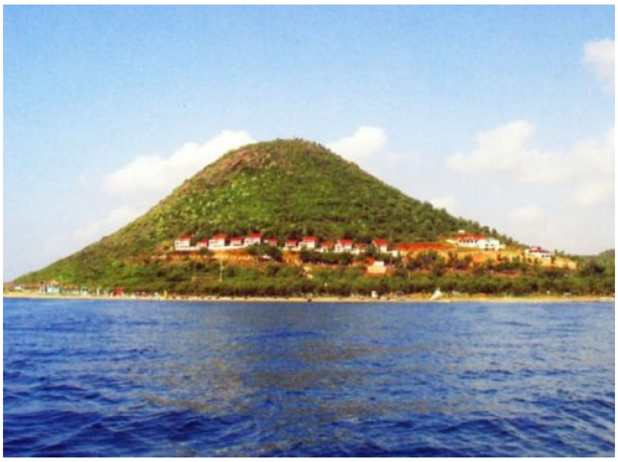

*समुद्र से ऋषिकोन्डा बीच रिसॉर्ट का दृश्य*

*कुर्सुरा पनडुब्बी संग्रहालय*

**यात्रा की योजना कैसे बनाएँ**

विशाखापट्टनम तक की यात्रा करना बहुत आसान है। यहाँ घरेलू हवाई अड्डा है जिसका नाम है इंदिरा गांधी हवाई अड्डा। इसके अलावा भारत के लगभग सभी प्रमुख शहरों से इस शहर के लिए नियमित ट्रेनें भी हैं। आंध्र प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम (APSRTC) द्वारा शहर में चारों ओर जाने के लिए बस सुविधा उपलब्ध है ।

रेलवे स्टेशन के पास कई होटल हैं। पाँच सौ रुपये में भी अच्छी गुणवत्ता वाला कमरा मिलता है। तीन या पांच सितारा होटलों में कमरे का किराया प्रति दिन लगभग 4000 रुपये है। आंध्र प्रदेश राज्य पर्यटन निगम (APTDC) के दो तीन रिसॉर्ट भी यहाँ हैं जिनमें वातानुकूलित कमरे 2,500 रुपये में उपलब्ध हैं। लेकिन बुकिंग पहले से ही करनी पड़ती है। मगर आंध्र प्रदेश राज्य के पर्यटन निगम (APTDC) हरिता के नाम के दो रिसॉर्ट शहर के बाहर स्थित हैं। एक तो वॉल्टेयर ऋषिकोन्डा क्षेत्र में स्थित है और दूसरा किरलमपुडि में है। ऋषिकोन्डा हरिता बीच होटल (हरिता ऋषिकोन्डा बीच रिसॉर्ट) खुद एक पर्यटक स्थल पर स्थित है ।

विशाखापट्टनम प्राचीन भूवैज्ञानिक चमत्कार, प्रसिद्ध मंदिरों के साथ-साथ, समय के साथ आगे कदम बढ़ाने वाला शहर है । यह अपने समृद्ध अतीत के संरक्षण के प्रति सजग भी है और नए के प्रति उम्मीद भरा भी। इस शहर के प्रमुख उद्योग, जहाज निर्माण यार्ड, एक बड़ी तेल रिफाइनरी, एक विशाल इस्पात और बिजली संयंत्र है । इसके सुंदर घाट बंगाल की खाड़ी के नीले पानी पर एक जादू की दुनिया में पंहुचा देते हैं और अपने आगोश में समेट लेते हैं ।

***कैलासगिरी***

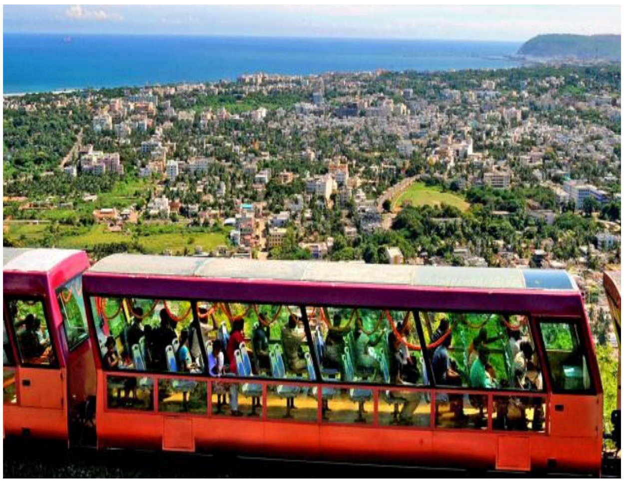

***कैलासगिरी की टॉय ट्रेन***

वास्तव में विशाखापट्टनम के दौरे में चार दिन की यात्रा नियोजित की जा सकती है । पहले दिन रामकृष्ण बीच, ऋषिकोन्डा बीच, कैलासगिरि, सिंहाचलम मंदिर, डाल्फिन नोज़, वाल्टेयर में 'कुछ और मंदिरों और जगदम्बा बाजार का दौरा किया जा सकता है। दूसरे दिन में अरसवल्ली, श्री कूर्मम मंदिर (श्रीकाकुलम से 13 किलोमीटर), श्रीमुखलिंगम मंदिर (श्रीकाकुलम से 60 किलोमीटर) और

कलिंग़पट्टनम बीच आदि का दौरा करने की योजना बनाई जा सकती है। तीसरे दिन विशाखापट्टनम के पास स्थित बौद्ध केन्द्रों का दौरा किया जा सकता है। चौथा दिन APSTDC पैकेज टूर पर अरकु घाटी जाने के लिए रखा जा सकता है। APSTDC पैकेज का मतलब, जाते समय रेल और वापस आते समय बस में यात्रा करना।

## अरकु घाटी यात्रा

अरकु घाटी यात्रा के लिए आंध्र प्रदेश पर्यटन विभाग के द्वारा आयोजित रेल और सड़क से सुखद यात्रा की जा सकती है। विशाखापट्टनम से रेल से जाते हुए हम 58 सुरंगों और 84 पुलों को देख सकते हैं । सड़क मार्ग से जब जाते हैं तब रास्ते के दोनों तरफ घने जंगल और अनंतगिरि श्रृंखला के साँप जैसे रास्ते नजर आएंगे। ईस्ट कोस्ट रेलवे के वाल्टेयर डिवीजन पर कोट्टवासला-किरन्डुल लाइन के इंजीनियरिंग चमत्कार से आप अवाक हो जाएँगे । अरकु के रास्ते में आने वाले शिमलिगुडा रेलवे स्टेशन को जम्मू-कश्मीर में काजीगुंड के निर्माण से पहले देश में पहली उच्चतम ब्रॉड गेज रेलवे स्टेशन माना जाता था। यह स्टेशन समुद्र स्तर से 997 मीटर की ऊंचाई पर है।

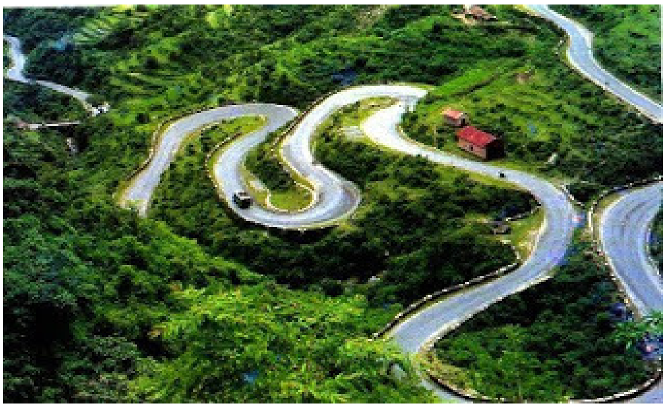

*अरकु जाने का रास्ता*

*रेलगाड़ी से अरकु जाते हुए*

आंध्र प्रदेश राज्य पर्यटन विभाग द्वारा यात्रा की व्यवस्था विशाखापट्टनम रेलवे स्टेशन पर सुबह 06:00 बजे शुरू होती है । ट्रेन का टिकट, वापसी यात्रा के लिए वोल्वो बस, सुबह का नाश्ता और दोपहर के भोजन की व्यवस्था टूर ऑपरेटरों द्वारा की जाती है। ट्रेन 06:50 बजे विशाखापट्टनम स्टेशन छोड़ देती है और सिंहाचलम, पेन्डुटी, कोट्टवालसा (यहाँ ट्रेन मुख्य लाइन से अरकु की ओर जाती है), मल्लीवीडु, श्रृंगुवरप्पुकोट्टा, शिवलिंगपुरम (पहाड़ियाँ और घाटी यहां से शुरू होती हैं), टैडा, चिमिडिपल्ली (यहाँ एक सुरंग आती है और उसके बाद बाई तरफ एक झरना दिखता है), बोरा गुफा (बोर्रा गुफाएं यहाँ हैं और गुफा के ऊपर रेल जाती है), करकवासला, शिमलागुडा और अंत में 10:55 बजे अरकु पहुंचती है। यहां अरकु घूमने के लिए और वापस विशाखपट्टनम ले जाने के लिए वोल्वो बस तैयार होती है। कई जनजातियाँ अरकु घाटी में रहती हैं। कई कॉफी बागान यहाँ हैं और फिल्म की शूटिंग यहाँ होती है ।

अरकु आराम करने की और प्रकृति का आनंद लेने की एक जगह है। अरकु में कुछ पर्यटन स्थल हैं जिसको दो घंटे के समय में देखा जा सकता है। अगर समय हो तो अरकु से 15 किलोमीटर दूर, चप्पारै नामक जगह को देख सकते हैं जहाँ चट्टानी ढलानों पर गिरता हुआ पानी देख सकते हैं। यहाँ से बोर्रा गुफा जाने के लिए दो से तीन घंटे का समय लगेगा। अरकु में चप्पारै, पद्मपुरम गार्डन, जनजातीय संग्रहालय, फिल्म की शूटिंग के स्थान (ये अरकु से पहले हैं), बोरा गुफा (अरकु से आते समय 35 किलोमीटर दूर पर) गलिकोन्डा व्यू प्वाइंट (अरकु से आते समय 20 किलोमीटर दूर पर) और कॉफी बागान आदि दर्शनीय स्थल हैं।

**बोरा गुफाएं**

10 लाख साल पुरानी ये गुफाएं समुद्र तल से 1400 फुट ऊंचाई पर स्थित हैं। भू-वैज्ञानिकों के शोध कहते हैं कि लाइमस्टोन की ये स्टैलक्टाइट व स्टैलग्माइट गुफाएं गोस्थनी नदी के प्रवाह का परिणाम हैं। गुफाएं अंदर से काफी विराट हैं। उनके भीतर घूमना एक अद्भुत अनुभव है। अंदर घुसकर वहाँ एक अलग ही दुनिया नजर आती है। कहीं आप रेंगते हुए मानो किसी सुरंग में घुस रहे होते हैं तो कहीं अचानक आप विशालकाय बीसों फुट ऊंचे हॉल में आ खड़े होते हैं। देश की प्रमुख गुफाओं में से एक है बोरा की गुफाएं। बोरा गुफाएं छत्तीसगढ़ में कोटमसर गुफाओं जैसी गर्म और दमघोंटू नहीं हैं। इसकी वजह इनकी भीतर से विशालता भी है। इन्हें मूल रूप से तो 1854 में एचबी फुटे ने खोजा था लेकिन दुनिया के सामने 1882 में यूरोपीय गुफा विज्ञानियों की एक टीम ने इन्हें मौजूदा स्वरूप में पेश किया। जमीन से गुफाओं तक तीन कुएं जैसे छेद हैं। इन्हीं में से बीच का छेद गुफा के प्रवेश द्वार के रूप में इस्तेमाल होता है। लगभग 20 मीटर तक सीधे नीचे उतरने के बाद गुफा जमीन के नीचे फैल जाती हैं । इनकी लंबाई 3,229 मीटर है।

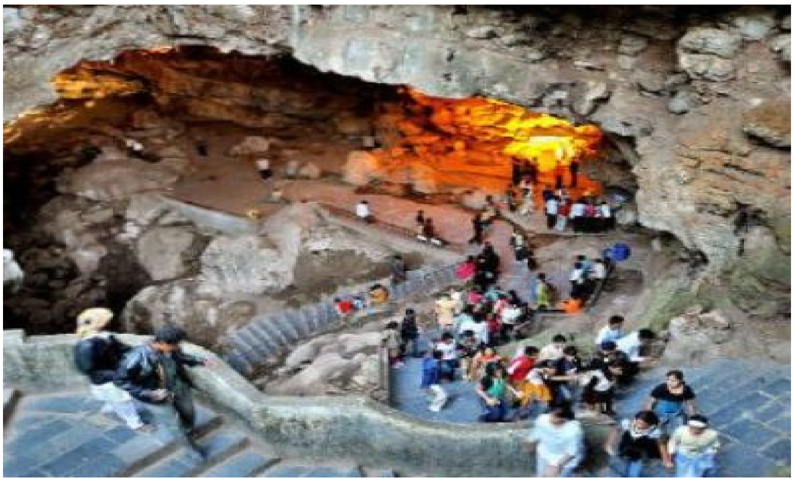

बोरा गुफाएं पूर्वी घाट की अनन्तगिरी पहाड़ियों में हैं। वैसे तो पूर्वी घाट और पश्चिमी घाट दोनों पहाड़ियों का निर्माण ज्वालामुखीय क्रियाकलाप से हुआ है। ज्वालामुखी से लावा निकलता है जो जमने पर बहुत कठोर हो जाता है। लेकिन यहां पता नहीं कहां से चूने जैसी नरम चट्टानें भी आ गईं।

लेकिन ये इतनी नरम भी नहीं होतीं। हजारों सालों में, लाखों सालों में ऐसा होता है। बारिश होती है, पानी जमीन के अन्दर जाता रहता है। इससे नरम चट्टानें पानी में घुल-घुलकर बाहर बहने लगती हैं और जमीन के अन्दर एक खोखलापन आ जाता है। कठोर चट्टानें बची रह जाती हैं, जो छत का काम करती हैं। इस तरह गुफाओं का निर्माण होता है।

यह प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। आज भी यह अनवरत जारी है। ऊपर छत से पानी की बूंदें टपकती हैं। जाहिर है कि उनमें नरम चट्टानों के कुछ अवशेष अवश्य रहते हैं। बूंदें टपकती रहती हैं, टपकती रहती हैं। ऊपर जिस स्थान से यह टपक कर नीचे गिरती है, वहां धीरे-धीरे चूना जमने लगता है और इसी तरह नीचे जहां बूंद जमीन पर गिरती है, वहां भी चूना जमने लगता है। इस तरह ऊपर से भी और नीचे से भी चूने के एक खम्भे का निर्माण शुरू होता है जो कालान्तर में आपस में मिल भी जाते हैं। इसी तरह की अनगिनत और विचित्र आकृतियां इन बोरा गुफाओं में बनी हुई हैं।गुफा के द्वार पर गाइड बैठे रहते हैं जो पचास रुपये में आपकी सहायता कर देंगे। ये गुफा की अन्धेरी दीवारों पर टॉर्च से रोशनी मारते हैं और ऐसी ऐसी आकृतियां दिखा देते हैं जो हम अगर अकेले होते तो शायद न देख पाते।

बोरा गुफाओं का निर्माण चूंकि पानी से हुआ है और अभी भी जारी है तो जाहिर है कि इसमें पानी अवश्य मिलेगा। पूरी गुफा में खूब फिसलन है। अगर प्रशासन चलने के लिए रास्ता न बनाता तो यहां घूमना बेहद मुश्किल होता। अन्दर तक जाने के लिए रास्ता है, सीढियां हैं और रोशनी का भी प्रबन्ध है। यदि मौसम मॉनसून का हो प्रशासन को विशेष चौकन्ना रहना होता है कि कहीं से अचानक इसमें ज्यादा पानी न आ जाए। हालांकि ये छत्तीसगढ़ की कुटुमसर गुफाओं जैसी नहीं हैं, अन्यथा मॉनसून में इन्हें बन्द करना पड़ता।

गुफा में ऊपर एक छेद भी है। कहते हैं कि कभी एक गाय उस छेद से नीचे गिर गई थी और पानी के बहने के रास्ते से होती हुई बाहर निकल गई। गाय को तो हालांकि कुछ ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचा लेकिन उसे ढूंढते - ढूंढते गाँववालों ने गुफा ढूंढ ली। ठीक अमरनाथ जी गुफा की तरह। करोड़ों देवता यहां मिलेंगे और गाइड आपको हर देवता की पहचान कराता आगे बढेगा। हालांकि इस महा विशाल गुफा में एक छोटी सी गुफा भी है जहां एक पुजारी आपको शिवलिंग के दर्शन करायेगा। यह शिवलिंग और कुछ नहीं है बल्कि वही पानी का टपकना और चूने का इकट्ठा होना है । मॉनसून में पानी बढ़ जाता है इसलिए भक्त लोग कहते हैं कि सावन का चमत्कार है। ठीक इसी तरह का चमत्कार वैष्णों देवी के पास शिवखोडी की गुफाओं में भी है ।

किरन्दुल लाइन ठीक इस गुफा के ऊपर से गुजरती है। पूर्वतट रेलवे ने गुफा के अन्दर एक सूचना पट्ट भी लगा रखा है कि इस बिन्दु के ठीक 176 फीट ऊपर से रेलवे लाइन गुजरती है । ज्यादा भीड़ हो जाती है तो इसमें उमस और घुटन भी होने लगती है। आपको सलाह दी जाती है कि

अगर आप इन गुफाओं को देखने जा रहे हैं और ज्यादा भीड़ है तो अंदर न जाएँ। गुफा के बिल्कुल आखिर में काफी बड़ा हॉल जैसा कुछ है। उसकी छत पर खूब चमगादड़ लटके रहते हैं और शोर करते रहते हैं। यहां से पानी निकासी का प्रबन्ध है और उसकी वजह से एक संकरी गुफा दूर तक चली गई है। उसमें पर्यटकों को जाने की अनुमति नहीं है। लेकिन बड़े हॉल में से देख सकते हैं कि वहाँ एक दरार है। गाइड ने उस दरार को दिखाकर बताया कि यहां दो पहाड़ मिल रहे हैं।

इसका क्या अर्थ है ? क्या दो पहाड़ बाहर खुले में टहल रहे थे और अचानक मिल गए और उनके मिलन स्थान पर यह दरार पड़ गई ? ऎसा है कि हमें इसके लिए फिर से इन पहाड़ियों के निर्माण काल में जाना होगा। ये वास्तव में ज्वालामुखीय चट्टानें हैं। धरती के अन्दर से लावा निकला और इकट्ठा होता चला गया। लावा बहुत गहराई पर होता है । कम गहराई पर दूसरी नरम चट्टानें होती हैं। लावे के साथ साथ नरम चट्टानें भी आती गईं और पूरे इलाके में इनका टीला बनता चला गया। पहाड़ी श्रृंखला का निर्माण इसी तरह हुआ है। इन टीलों में दरार कैसे पड़ी ? इसका जवाब यह हो सकता है कि सारा लावा एक बार में तो नहीं निकला। हजारों सालों तक, लाखों सालों तक यह प्रक्रिया चली थी। कुछ लावा आज निकल गया और धीरे धीरे ठण्डा पड़ गया। कुछ हजार साल बाद निकला और वो भी ठण्डा पड़ गया। दोनों के बीच में निश्चित ही एक दरार रहेगी।

अतः विशाखपट्टनम एक खूबसूरत जगह है जहाँ की यात्रा सभी को करनी चाहिए। भारत मौसम विज्ञान विभाग के विशाखपट्टनम में दो कार्यालय हैं। एक चक्रवात चेतावनी केंद्र है और दूसरा डॉपलर मौसम रेडार। डॉपलर मौसम रेडार कैलासगिरी पर है जबकि चक्रवात चेतावनी केंद्र आंध्र विश्वविद्यालय परिसर के पास है। दोनों कार्यालयों में छोटा सा अतिथि गृह है। मेरे प्यारे दोस्तों एक बार इस खूबसूरत जगह विशाखपट्टनम का भ्रमण करने जरूर आएँ।

-----------------------

गर्मी के जुल्म से ये, दुनिया दहक रही थी
प्यासी ज़मीन कब से, आकाश तक रही थी
थम थम चले हैं बादल, डम डम बजे हैं बादल
खोली है आसमान ने, बादल की अपनी छागल ।

❖ **मो. असदुल्लाह**

***साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ***

*सामान्य लेख*

# 'भारतरत्न डॉ भीमराव रामजी अम्बेडकर' - एक झलक

❖ उदय प्रताप सिंह

चौदह अप्रैल 1891 दिन मंगलवार, भारतीय समय 5 घंटे 26 मिनट 23 सैकंड, संक्रांति का पुनीत पर्व, उषा की सुनहरी किरणें, बंसत ऋतु सर्वत्र अठखेलियाँ खेलती, पुष्प पल्लव से आह्लादित प्रकृति और सर्वत्र आनन्दोत्सव ऐसे समय में एक महापुरूष का एक निश्चित उद्देश्य के लिए इस धरा पर प्रादुर्भाव हुआ ये और कोई नहीं  हमारे बाबा साहब ही थे।

समय की माँग के अनुरूप धरती पर विशिष्ट आत्माएँ विशेष प्रयोजन हेतु अवतरित होती रही हैं । वह काल दिव्य महापुरूषों के प्रादुभाव का था। गाँधी, सुभाष, चंद्रशेखर, भगत सिंह, डॉ अम्बेडकर आदि ने भिन्न- भिन्न मार्गो को आजादी पाने के हथियार के रूप में अंग्रेजों के विरूद्ध इस्तेमाल किया। मानो गीता की युक्ति '**यदा-यदा ही धर्मस्य, ग्लार्निभवति भारत......**' ही चरित्रार्थ हो रहा हो। आज से लगभग छः हजार वर्ष पूर्व श्री कृष्ण ने बुराईयों के साथ-साथ बुरे लोगों का समूल नाश किया था, वहीं बाबा साहब समाज में प्रचलित रूढ़ीवादी परम्पराओं को नष्ट करने लिए सतत प्रयत्नशील रहे। कृष्ण ने हमारे आध्यात्मिक उत्थान हेतु कर्म ज्ञान भक्ति से परिपूर्ण गीता प्रदान की। वहीं डॉ अम्बेडकर ने हमारे सामाजिक उत्थान हेतु हमें गीता रूपी संविधान प्रदान किया। जिसमें उन्होंने अपने जीवन का सम्पूर्ण अनुभव एवं ज्ञान को समाहित किया है। हमारा संविधान जीता जागता अम्बेडकर ही है। संविधान कार्यपालिका न्यापालिका एवं संसद के बीच समन्वय रखते हुए एक स्थिर अक्षुण्ण एवं सशक्त लोकतांत्रिक व्यवस्था करने में सक्षम है।

बाबा साहब को राजा राममोहन राय की तरह हम एक प्रबल समाज सुधारक के रूप में पाते हैं। समाज में रहते हुए समाज सुधार की बात करते हैं, बाबा साहब सभी दबे कुचलों की आवाज थे। वे ब्राहमणों के कभी खिलाफ नहीं थे अपितु मनुस्मृति द्वारा स्थापित ऊँच-नीच एवं छुआछूत के प्रबल विरोधी थे। इन्होंने मनुस्मृति को अग्नि के हवाले करने में भी संकोच नहीं किया। हम सभी जानते हैं कि हम एक ही ईश्वर की सन्तान हैं फिर यह भेदभाव कैसा। बाबा साहब ने अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर एक ब्राहमण लड़की डॉ कविता कबीर को अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया। इससे इनके भेदभाव रहित विशाल व्यक्तित्व की झलक मिलती है।

भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीति के क्रान्तिदूत भारत रत्न डॉ भीमराव अम्बेडकर एक प्रबल  भविष्यद्रष्टा थे।  इन्होने अपने अध्ययन और अनुभवों के आधार पर व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं

❖ ***मौसम विज्ञान के महानिदेशक के कार्यालय में  वैज्ञानिक "ई" के पद पर कार्यरत हैं***

विश्व के लिए आर्थिक एवं सामाजिक सिद्धांतों का प्रतिपादन कर स्वस्थ समृद्ध मानवतावादी समाज की स्थापना का संदेश दिया। डॉ अम्बेडकर राज्य की अपेक्षा समाज को अधिक महत्व देते थे उनकी सोच थी कि यदि समाज लोकतांत्रिक होगा तो राज्य स्वत: लोकतांत्रिक हो जाएगा। वे राजनीतिक स्वतंत्रता से अधिक अर्थ, धर्म एवं समाज की स्वतंत्रता पर बल देते थे उनका विचार था कि देश को केवल स्वतंत्र कराने से काम नहीं चलेगा अपितु प्रत्येक नागरिक को धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक समानता मिले तभी राष्ट्र एक सबल एवं श्रेष्ठ राष्ट्र बन पाएगा।

उनके मन पर संत कबीर और महात्मा बुद्ध का गहरा प्रभाव था। इनके अंदर अकेले ही पथ निर्माण करने की अदभुत क्षमता थी। इन्होंने स्वंय स्वीकारा है *कि 'यह संभव हो सकता है कि मैं गलती पर होउँ, परंतु मैंने हमेशा यही मुनासिब समझा है कि दूसरों के पथ-निर्देशन और आदेशों को मानने तथा मौन बैठे रहने व स्थितियों को बिगड़ने देने की अपेक्षा त्रुटियाँ करना कहीं श्रेयस्कर है'।* यह इनके दृढ़ आत्मबल एवम विश्वास का परिचायक है। उस समय की सामाजिक मान्यताओं की भूमिका पंडितों के हाथों में थी। इन्होने अपनी परंपरा, विधि और शैली को धर्म की संज्ञा दी, जो सामाजिक दुर्दशा का कारण बनी। संत कबीर की यह युक्ति कहना समाचिन होगा।

**पंडित, मुल्ला जो लिख दीया, छाँड़ि चले हम, कुछ न लिया।।**

आज हम नारी सशक्तिकरण की बात करते हैं, आज की नारी जयशंकर प्रसाद की **'नारी तुम केवल श्रद्धा हो'** नहीं रह गई अपितु वह पुरूष के साथ कंधा से कंधा मिलाकर अपने सामाजिक एवं आर्थिक विकास के साथ-साथ देश के विकास में अभूतपूर्व योगदान दे रही है। डॉ अम्बेडकर नारी जाति की उन्नति में बहुत ही विश्वास करते थे समाज के योगदान में स्त्री पुरूष दोनों को समान मानते थे। वे चाहते थे कि हिन्दु समाज में स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार मिले। उनकी मान्यता थी कि नारी जाति को उचित सम्मान दिए बिना हिन्दु समाज का कल्याण संभव नहीं है। हिन्दु समाज और उसके उत्थान का सारा दारोमदार महिलाओं की उन्नति और विकास पर था। आज से 70-80 वर्ष पूर्व उन्होंने नारी को अपने पिता की सम्पति में हिस्सेदारी की वकालत की थी एवं हिन्दू कोड बिल भी लाये थे परन्तु पुरूष प्रधान समाज की कट्टर मानसिकता के विरोध के कारण पूर्ण रूप से लागू नहीं किया जा सका।

डॉ अम्बेडकर की सोच थी कि धर्म मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य धर्म के लिए। जो धर्म इंसान-इंसान में अंतर करता हो वह धर्म नहीं हो सकता, धर्म का आधार विज्ञान होना चाहिए जिसमे स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा हो। धर्म का रास्ता न्याय, सदाचार, सदव्यवहार और सर्वमंगल का रास्ता है। वे धर्म को आवश्यक मानते थे परन्तु धर्म के मिथ्याचार और पाखंड को अधर्म मानते थे। वे हिन्दु धर्म की रूढ़िवादी परंपराओं से काफी असहज महसूस करते थे, इन्होने 23 अक्टूबर 1935 को कहा था *'मैं हिन्दु धर्म में पैदा अवश्य हुआ हूँ परन्तु मैं हिन्दु के रूप में नहीं मरूंगा'* । यह उनकी

हिन्दु धर्म के प्रति अंतरपीड़ा को दर्शाता है। इनको अनेक धर्मो जैसे इस्लाम, ईसाई, जैन, बौद्ध और सिख धर्म के धर्मावलाबियों ने अपने-अपने धर्मो में सम्मिलित करने के लिए अथक प्रयास किए थे। अन्ततोगत्वा बुद्ध के धम्म से इतने प्रभावित हुए थे कि 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में लाखों लोगों के साथ वयोवद्ध भिक्षु महास्थविर चंद्रमणि द्वारा बौद्ध धर्म में दीक्षा ली और बौद्ध धर्म स्वीकार किया। इनको बौद्ध धर्म में पीड़ित मानव के लिए आशा, विश्वास व करूणा की एक किरण नजर आई। गौतम बुद्ध का आनन्द दु:ख निवृत में था। बाबा साहब का दुख था भेदभाव एवं गरीबी। इन दुखों से निदान का उपाय था बिना भेदभाव के सबको विश्वास एवं साथ लेकर सबका सामाजिक एवं आर्थिक विकास। यद्यपि प्रारंभ में डॉ. अम्बेडकर का झुकाव मार्क्सवाद की ओर था बाद में महात्मा बुद्ध की ओर आकर्षित हुए। इन्होंने पाया कि मार्क्स की अपेक्षा बुद्ध का चिन्तन बहुत अधिक व्यावहारिक है। मार्क्स के भौतिक द्वंद्वाद की अपेक्षा बुद्ध की करूणा, दया, समानता और अहिंसा की ओर उनका झुकाव हुआ। धम्म में ही इन्हे दुनिया को शांति और जन समस्याओं का निदान नजर आया। आज हम मार्क्स के वर्ग व्यवस्था की तरफ बढ़ रहें हैं जिसमें दो ही वर्गो का स्थान है अभिजात्य एवं सर्वहारा वर्ग, मालिक एवं श्रमिक अथवा अमीर और गरीब। आज जाति अप्रासंगिक होती जा रही है। गरीबी हमारे लिए मुख्य समस्या है। गरीबी और अमीरी के बीच खाई बढ़ती जा रही है इसे पाटना हमारी अब नैतिक जिम्मेदारी बन गई है।

डॉ. अम्बेडकर ने भाषा की समस्या को राष्ट्रीय संदर्भ में देखा, ये जानते थे कि यदि प्रांत की सरंचना भाषा के आधार पर की गई तो भविष्य में सभी प्रांत सिर उठा कर बोलने लगेंगे। भाषा की क्षेत्रीय राजनीति पांव जमा लेगी तो देश की भावनात्मक तथा राष्ट्रीय एकता को गहरा आघात पहुंचेगा। ये केन्द्र तथा प्रांतों की भाषा को हिन्दी रखना चाहते थे तथा अंग्रेजी भाषा की अंग्रेजी सरकार के साथ विदाई चाहते थे। उनका विचार था यदि आगे केन्द्र और प्रांत की सरकारें अंग्रेजी भाषा में काम करती रही तो आजादी के बाद भी क्या हम हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित कर पाएंगे। आजादी के संघर्ष की भाषा हिन्दी थी जिसने इस देश को राष्ट्र के रूप में परिवर्तित किया। भाषा के विषय में उनका मत था कि एक भाषा और एक प्रांत का सिद्धांत व्यवहार में लाने योग्य नहीं है इसलिए इन्होने भाषा के आधार पर राज्यों के विभाजन को उचित नहीं माना। यह राष्ट्रीय एकता के लिए हानिकारक था। उन्होंने कहा था कि संविधान में हर राज्य की सरकारी भाषा वही हो जो केन्द्र सरकार की हो अन्यथा भाषायी आधार पर हम आपस में लड़ने लगेंगे।

डॉ अम्बेडकर राज्य की नीति को जीवन की नीति से संबद्ध कर एक नवीन पथोन्मुखी बनाना चाहते थे। ये सृजनात्मक राजनीतिज्ञ एवं तर्कवादी थे, बुद्धि को प्रधानता देते थे और नियम के महत्व को सर्वोपरि मानते थे। नियम को स्वीकारने से पहले वे नियमों को कसौटी पर कसकर देख लेते थे। डॉ अम्बेडकर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार से बहुत चिन्तित थे। उनका मानना था कि भ्रष्टाचार लोकतांत्रिक

व्यवस्था के लिए हानिकारक है। कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अध्ययन के समय उनको समानता, प्रेम तथा सम्मान का वातावरण मिला। वहीं से उन्होंने अर्थशास्त्र में एम ए किया। भारत का राष्ट्रीय लाभांश नामक शोध पत्र पर इन्हे डॉ ऑफ फिलास्फी की उपाधि मिली। इसमे बिट्रिश सरकार की अति धन-इच्छा, नौकरशाही आदि प्रमाण के साथ आलोचना की गई है। इसी तरह अपनी पुस्तक 'ब्रिट्रिश भारत में प्रांतीय वित्त व्यवस्था का विकास' में प्रांतीय वित्त-व्यवस्था एवं बजट संबंधी महत्वपूर्ण विचार प्रतिपादित किये। इस पुस्तक में व्यक्त विचार आज भी लोक वित्त के क्षेत्र में मानक स्थान रखते हैं। इन्होंने अपनी पुस्तक 'रूपये की समस्या,उत्पत्ति एवं समाधान' में कहा है कि मूल्य का मानक सोना होना चाहिए इससे मुद्रा में लचीलापन आ जाता है। उनका यह विचार विश्व बाजार में परिलक्षित हो रहा है। इनकी सभी कृतियॉ मौलिक शोधपरक रहते हुए समाज पर दूरगामी प्रभाव डालने में सक्षम रही हैं। इनकी पुस्तक 'शूद्र कौन थे' ने उस समय समाज में एक तूफान खडा कर दिया।

वे राजकोष पर केन्द्रीय नियत्रंण के पक्षधर थे जिससे प्रांतीय सरकारों की फिजूलखर्ची पर रोक लगे और राजस्व का समान वितरण हो सके। अत: राजकोषीय समृद्धि के लिए शक्तिशाली केन्द्रीय सरकार होना आवश्यक है। जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए इन्होंने औद्योगिकीकरण को आवश्यक माना है। नीति ऐसी होनी चाहिए जिससे अधिकतम उत्पादन के साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुणवत्ता एवं प्रतिस्पर्द्धा के संदर्भ में हमारे उत्पाद लाभकारी बन सकें। सभी नागरिकों का बीमा के पक्षधर थे जिसमें बीमा के प्रीमियम की दर व्यक्ति द्वारा अर्जित आय को ध्यान में रखते हुए तय किया जाए। डॉ अम्बेडकर एक संतुलित नियोजन व्यवस्था चाहते थे जिसमें देश के अंदर उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर कम लागत से अधिक से अधिक आय अर्जित की जा सके।

डॉ अम्बेडकर निडर, स्पष्ट वक्ता, सिद्धांतवादी, दृढ़ विचारशील, प्रखर बुद्धि, मेधावी और सेवाव्रती थे। वे विशिष्ट न्यायवादी और अत्यंत कर्मठ महापुरूष थे। वे अतिवादी नहीं थे और न भावुकता के वशीभूत होकर निर्णय करने की उनकी आदत थी। उनका हृदय निष्पक्ष था। उनकी राजनीतिक प्रतिबद्धता उपेक्षितों के उत्थान के लिए थी। डॉ अंबेडकर के जीवन का समग्रत अध्ययन विश्लेषण किया जाए तो यह पता चल सकता है कि वे कितने निर्मल और सज्जन इंसान थे। धन्य है यह भारत भूमि जहाँ ऐसे महापुरूष ने जन्म लिया।

-------------

**वह नास्तिक है, जो अपने आप में विश्वास नहीं रखता |**

**❖स्वामी विवेकानंद**

सामान्य लेख

# बदलाव जरुरत - विचार पूरक

❖ डॉ. प्रकाश खरे

विकसित होती सूचना तकनीक के माध्यम से आजकल संदेशों का आदान-प्रदान अत्यंत सुगम हो गया है। प्रथम कम्प्यूटर के माध्यम से ईमेल, फेसबुक एवं अब स्मार्ट फ़ोन के द्वारा व्हाट्सप्प, भेज कर हम चाहे- अनचाहे अपने हितैषियों को अपनी उपस्थिति का हर क्षण अहसास करा सकते हैं, और हम जैसे तो करतें भी हैं। प्रतिदिन सुबह व्हाट्सप्प पर सुप्रभात के साथ एक प्रेरक वाक्य आप के अंदर नई ऊर्जा का संचार करने में मदद कर सकता है। समाज के लिए भी ऐसे सद्वाक्य प्रेरणा का स्त्रोत हो सकते हैं। हालाँकि, मेरे अनुभव से इनका प्रभाव क्षणिक होता है, शायद आप भी इस बात से सहमत हों?

बदलते समय के साथ मैंने यह भी महसूस किया है कि नई युवा पीढ़ी देर तक बैठ कर पढ़ने की आदत से दूर होती जा रही है। अगर व्हाट्सप्प पर भेजा संदेश/प्रसंग थोड़ा सा बड़ा है, तो हमारे युवा कई बार तो उसको बिना पढ़े ही थंब अप, थंब डाउन [👍👎] जैसे कुछ चित्रो के साथ अपना जबाब तुरंत प्रेषित कर देते हैं। मुझे लगता है कि हमें अपने पढ़ने की आदत में एक गहराई लाने की आवश्यकता है, ताकि हम अच्छे एवं बड़े प्रेरक प्रसंगो को पढ़ें, एवं उनकी सीख को आत्मसात कर उसका प्रभाव एक लम्बे समय तक महसूस करते रहें। ऐसी ही आशा के साथ, मैं "मौसम मंजूषा" के इस अंक में कुछ संग्रहित प्रेरक व मनोरंजक प्रसंगो को आप जैसे सुधि पाठकों के साथ बांटनें का प्रयास कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आप भी इन्हें पढ़कर थोड़े लम्बे समय के लिए आनंदित हो सकेंगे।

## प्रसंग 1- 'केले' पर पूछा था प्रश्न 'शून्य' का मिल गया उत्तर

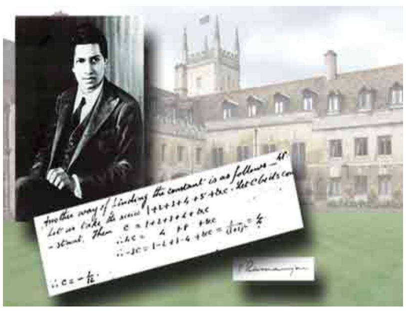

महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के बचपन की एक दिलचस्प घटना है उनके अध्यापक गणित पढ़ा रहे थे। उन्होंने ब्लैक-बोर्ड पर तीन केले (बनाना) बनाए और पूछा, यदि हमारे पास तीन केले हों, और तीन ही विद्यार्थी हों तो प्रत्येक विद्यार्थी को कितने केले मिलेंगे?

एक विद्यार्थी ने तुरंत उत्तर दिया, 'सभी को एक-एक केला मिल जाएगा।' अध्यापक ने कहा, 'तुम सही कह रहे हो। अभी भाग देने की प्रक्रिया को आगे समझाने जा ही रहे थे कि एक बालक ने पूछा,यदि किसी भी बालक को कोई भी केला न दिया जाए, तो क्या तब

❖ मौसम विज्ञान के अपरमहानिदेशक के कार्यालय पुणे में वैज्ञानिक 'ई' के पद पर कार्यरत हैं

भी प्रत्येक बालक को एक-एक केला मिल सकेगा?'यह सुनकर सारे विद्यार्थी हंसने लगे। तब अध्यापक ने उन्हें शांत कराने के बाद कहा, 'इसमें हंसने की बात नहीं है, यह बालक जानना चाहता है शून्य से शून्य को विभाजित किया जाए तो क्या परिणाम निकलता है। यह गणित का बहुत ही जटिल प्रश्न था जिसका उत्तर खोजने में सैकड़ों वर्ष लगे।कुछ लोगों का विचार था कि शून्य को शून्य से विभाजित करने पर शून्य ही होगा, जब कि अन्य लोगों का विचार था कि एक होगा। आखिर में भारतीय वैज्ञानिक भास्कर ने सिद्ध किया कि शून्य को शून्य से विभाजित करने पर परिणाम शून्य ही होगा न कि एक।

**प्रसंग 2 - मान सम्मान से परे एक मर्मस्पर्शी पत्र**

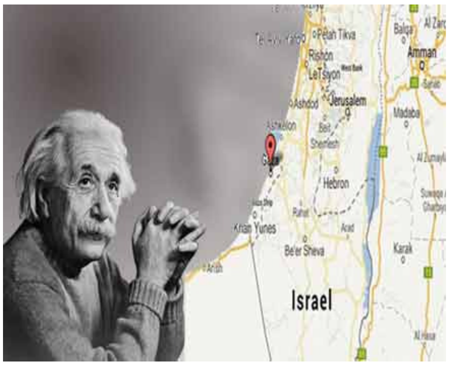


सन 1952 में इज़राइल के प्रथम राष्ट्रपति कैम वीजमान का निधन हो गया तो इज़राइल का राष्ट्रपति पद स्वीकारने के लिए महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन से प्रार्थना की गई। आइंस्टीन ने विनम्रता से उस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया और इज़राइली राजदूत अब्बा एवान को एक पत्र लिखा।

पत्र कुछ इस तरह था, 'मुझे प्रकृति के बारे में थोड़ा बहुत ज्ञान है, पर मनुष्य के बारे में लगभग कुछ भी नहीं मालूम। हमारे राष्ट्र इज़राइल के इस निमंत्रण ने मेरे हृदय को गहरा छुआ है और मुझे एक साथ उदास और लज्जित कर दिया है, क्योंकि मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता।' आइंस्टीन ने आगे लिखा कि, 'जीवन भर मेरा पाला भौतिक पदार्थों से पड़ा है। मुझमें मनुष्यों से समुचित व्यवहार करने और सरकारी कामों को निभाने की न स्वाभाविक क्षमता है, न ही अनुभव। अगर बढ़ती उम्र मेरी शक्ति को सोखने न लगी होती, तो भी सिर्फ ये कारण ही मुझे इस उच्च पद के लिए अनुपयुक्त ठहराने के लिए काफी है।'

**प्रसंग 3 - यकीन कीजिए ईश्वर आपको जरूर मिलेंगे**

एक बार संत रामदासजी के पास एक शिष्य आया और उसने पूछा, 'प्रभु मैं कौन सी साधना करूं?' रामदासजी ने उत्तर दिया, 'कोई भी कार्य करने से पहले यदि तुम यह निश्चय करोगे कि वह भगवान के लिए किया जा रहा है तो तुम्हारे लिए यही साधना उत्तम होगी'।तुम यदि तय कर लो कि तुम्हें दौड़ना है, तो दौड़ो, कितु दौड़ने से पहले यह निश्चय कर लो कि तुम भगवान के लिए दौड़ रहे हो, तब यही तुम्हारी साधना होगी। शिष्य ने पुनः पूछा, 'गुरुवर क्या बैठ कर करने की कोई साधना नहीं है? क्या मैं जप के द्वारा साधना नहीं कर सकता हूं।' तब संत बोले, 'हां जप कर सकते हो, लेकिन ध्यान रखना ये तुम भगवान के लिए कर रहे हो। इसमें भाव का महत्व है, क्रिया का नहीं। 'शिष्य समझ नहीं पाया तब संत रामदास बोले, 'क्रिया का भी महत्व है। क्रिया से भाव और भाव से ही तो क्रिया होती है। लेकिन ऐसे समय में आपकी दृष्टि लक्ष्य की ओर होना चाहिए।' जब तुम जो भी

करोगे वही साधना होगी। लक्ष्य के लिए क्रिया और भाव की आवश्यकता होगी। इनके योग का नाम साधना है और इन्हीं से सिद्धि प्राप्त होती है। यदि लक्ष्य भगवान की ओर है, तो निश्चय ही ईश्वर आपको जरूर मिलेंगे ।

## वे कुछ दिन कितने सुंदर थे

❖ ***जयशंकर प्रसाद***

वे कुछ दिन कितने सुंदर थे ?
जब सावन घन सघन बरसते
इन आँखों की छाया भर थे
सुरधनु रंजित नवजलधर से
भरे क्षितिज व्यापी अंबर से
मिले चूमते जब सरिता के
हरित कूल युग मधुर अधर थे

प्राण पपीहे के स्वर वाली
बरस रही थी जब हरियाली
रस जलकन मालती मुकुल से
जो मदमाते गंध विधुर थे

चित्र खींचती थी जब चपला
नील मेघ पट पर वह विरला
मेरी जीवन स्मृति के जिसमें
खिल उठते वे रूप मधुर थे ।

***साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ***

सामान्य लेख

# चाय पर चर्चा

❖ पूनम सिंह

सिर्फ एक चाय का प्याला
किया राष्ट्रपति ओबामा को मतवाला ।
चाय पर चर्चा के लिए किया मजबूर
आना पड़ा सात समुन्दर पार से दूर।

यही चाय रामायण काल में संजीवनी के नाम से जानी जाती थी । चीन के राजा शेन नांग जो एक दिन वृक्ष के नीचे पीने के पानी को उबाल रहे थे, तभी तेज हवा का एक झोंका आया और उस वृक्ष की कुछ पत्तियाँ गरम पानी में आ गिरी, परिणामतः पत्तियों ने पानी में रंग छोडा और उसको पीने के बाद चीन के राजा को ऊर्जा व चुस्ती का आभास हुआ। यहीं से चीन में चाय का शुभारम्भ हुआ। यह चाय ही है जिसने एक चाय वाले को भारत के प्रधानमंत्री जैसे सर्वोच्च पद पर नियुक्त करवाया।

आज भारतीय चाय का इतिहास यह दर्शाता है कि निर्यात में, विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद भारत आज पाँचवे स्थान पर खड़ा है। यदि निकट भविष्य में इसकी अनदेखी की गई तो इसकी पैदावार आने वाले 30 वर्षों में शून्य की ओर अग्रसर हो जाएगी और इस उद्योग से जुड़े सभी, विशेषकर मजदूर वर्ग सड़क पर आ जाएगें। 21वीं सदी में अंतरराष्ट्रीय बाजार की माँग जैविक पद्धति से उत्पादित चाय की है। आज पारम्परिक व गैर पारम्परिक क्षेत्रों में जैविक पद्धति से चाय बागान विकसित किए जाने की अति आवश्यकता है।

यह चाय ही है जिसने रोजगार के क्षेत्र में भारत में दूसरा स्थान प्राप्त किया है और महिलाओं का सशक्तिकरण करने में इसका पहला स्थान है।

## रामायण काल की संजीवनी, कलियुग की चाय के खुलासे -

- यह सत्य है कि चाय एक जीता-जागता वृक्ष है। आज भी उत्तराखण्ड के लोहाघाट और गैरसैण में यह चाय के पेड़ के रुप में देखा जा सकता है जबकि अधिकतर लोग इसे कमर की ऊँचाई वाली झाड़ी ही समझते हैं।
- रोचक बात यह है कि विश्व भर में प्रतिदिन 18,000 करोड़ चाय के प्याले पिए जाते हैं।
- चौकाने वाली बात यह है चाय में कैल्शियम, फासफोरस, पोटेशियम, आयरन, विटामिन-ए,बी,सी, एमिनो एसिड, सोल्युबल शुगर (Soluble Sugar) की मात्रा अधिक पाई जाती है ।

❖ *प्रादेशिक मौसम केंद्र - नई दिल्ली के कार्यालय में वैज्ञानिक सहायक के पद पर कार्यरत हैं*

- परन्तु, दुर्भाग्यवश रामायण काल में सही मायने में संजीवनी जानी जाने वाली चाय के लिए जिसमें, कलियुग में भी जैविक खाद के सारे गुण मौजूद हैं, हम भारतीयों को रसायनिक खाद पर निर्भर होना पड़ता है।
- एक दिलचस्प बात यह भी है कि भारत में 1820 सदी में चीन से ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से जॉर्ज जेम्स गोर्डन नामक व्यक्ति द्वारा उत्तराखण्ड के कावलगढ़ इलाके में पहला चाय का पौधा लगाया गया।
- चाय में प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने की प्रबल क्षमता है-आँधी, तूफान, बाढ़, भूस्खलन, सूखा, बादल फटना इत्यादि जैसी आपदाओं की गति मंद करना, जलभराव की स्थिति में जल भूमिगत करवाना, भूस्खलन की स्थिति में 20 से 30 फुट गहरी अपनी जड़ों के माध्यम से मिट्टी को जकड़े रखने जैसी विशेषताओं के कारण यह आपदाओं से लड़ने में सक्षम है।
- भारतीय चाय 33,000 करोड़ का व्यापार है जहाँ एक ओर 2014 में मकई बाड़ी की चाय विश्व बाजार में 1 लाख 12 हजार रुपये (1,12,000/- रु) प्रति किलो बिकी है वहीं, दूसरी ओर चाय से जुड़े मजदूरों को 330/- रुपये प्रतिदिन वेतन नहीं दे पा रहे हैं, मात्र 90/- रुपये प्रतिदिन देकर वार्षिक 5000 करोड़ रुपये से मजदूरों को महरुम रख उनका शोषण किया जा रहा है।
- केमिस्ट्री–चाय अनेक गुण से परिपूर्ण है उदाहरण के तौर पर साँस सम्बंधित रोग (ठण्ड, फ्लू, प्रौस्टेट, फंग्ल, डायरिया) और इसमें पाए गए एण्टी ऑक्सीडेन्ट-कैंसर, दिल का रोग, बन्द रक्त धमनी, मोटापा घटाना, पार्किन्सन-अलज़ाइमर जैसी बिमारियों से लड़ने की क्षमता और धूम्रपान करने वालों के फेफड़ों को बचाने में सक्षम है। इसके अलावा डायबटीज, गैसट्राईटिस, अस्थमा, ब्राँक्काइटिस, हर्निया, अल्सर, अर्थराइटिस, हार्ट अटैक जैसी बिमारियों से लड़ने में भी सक्षम है।
- एक सत्य यह भी पाया गया है कि चाय में दीमक से लड़ने की प्रबल क्षमता है और इसका जीता-जागता उदाहरण उड़ीसा के कालाहाण्डी इलाके में देखा जा सकता है। जहाँ एक समय दीमक ही दीमक पाई जाती थी वहाँ, आज काया पलट हो गई है जब से वहाँ चाय का बागान विकसित हुआ है।
- एक चटपटी खबर यह है कि ब्लेंडिंग शब्द से लोगों को आपत्ति नहीं है क्योंकि यह अंग्रेजी का शब्द है, मगर चाय के संदर्भ में इसका अर्थ होता है “मिलावट” करना। बगानों से निकली हुई चाय 100% शुद्ध होती है परन्तु फुटकर व खुदरा व्यापारी मोटा मुनाफा कमाने के लालच में श्रीलंका, केन्या, दक्षिण भारत की “फिलर” चाय जो कि बहुत ही सस्ती होती है उसे दार्जलिंग व असम की चाय में मिलावट कर, उसको ऊँची दरों में बेचकर मुनाफा कमाते हैं।पिछले वर्ष विशाखापट्टनम में आए चक्रवात से जो नुकसान हुआ, क्या यह जानकर आश्चर्य नहीं होगा कि उस चक्रवात का प्रभाव श्रीलंका देश में क्यों नहीं हुआ? आपको यह जानकर और भी अचरज

होगा कि श्रीलंका में आपदाओं से तबाही न होने का कारण यह है कि श्रीलंका द्वीप चारों ओर चाय बागानों से घिरा हुआ है।

- दूध का प्रयोग चाय में न ही किया जाय तो बेहतर होगा क्योंकि चाय की गुणवत्ता को यह कम कर देता है।
- चाय की पौध की आयु 90 वर्ष की होती है और सन 1840 में लगाई गई चाय सन 1930 में लगभग लुप्त हो चुकी थी और यकीन मानिए मोहनजोदड़ो-हड़प्पा के अवशेषों की तरह इनके फॉसिल्स कटरा से लेकर दून वैली से होते हुए गोरखपुर तक पाए जा सकते हैं।
- कलियुग की चाय का प्रारम्भ उत्तराखण्ड के जिस कावलगढ़ इलाके से हुआ था, सन 1993-95 में वहीं के एक जागरुक निवासी ने वहाँ के मूल निवासियों को चाय आन्दोलन के माध्यम से लुप्त हो चले चाय बागानों को एक बार फिर से पुनर्जीवित करने का प्रयास किया ताकि बढ़ती बेरोजगारी, भूस्खलन, जंगलों का कटाव, महिला सशक्तिकरण एवम् पर्यावरण सुरक्षा जैसे उद्देश्यों का हल ढूँढा जा सके। हालाँकि इस संदर्भ में राज्य सरकार के साथ कई बैठके हुई, जहाँ का सर्वांगीन विकास समय रहते हो सकता था वहाँ राज्य सरकार के उदासीन रवैये ने लाखों लोगों को वंचित रख, दो-चार चाय बागानों तक ही सिमटा दिया। हर्ष की बात यह है कि आज उत्तरांचल की चाय विश्व के बाजार में 500/-रू. से 12000/-रू. प्रति किलो तक बिक रही है और एक विशेष प्रकार की चाय 36000/-रू. प्रति किलो भी बिकी है। मेरा मानना है यदि लाखों एकड़ भूमि पर चाय विकसित की गई होती तो पूर्व में आई तबाही से जान-माल का नुकसान कम हो सकता था।

**अपार सम्भावनाओं से भरी चाय -**

चाय पर चर्चा इस बात को लेकर होनी चाहिए कि परम्परागत चाय को इक्कीसवीं सदी में दूरदर्शिता के साथ, ऐसी कौन-कौन सी सम्भावनायें खोजी जाएँ जो आने वाली पीढ़ी की गति, पैमाने, हुनर को ध्यान में रखते हुए, देश भर में सबसे बड़े रोजगार से जोड़ सके। निम्नलिखित शोध कार्य, नई खोज और सम्भावनाओं के बारे में पाठकों को जानकारी दी जा रही है:-

- परम्परागत चाय बागान "चाय के बीजों" द्वारा पौध तैयार कर, दो से ढाई वर्ष बाद बगीचों में लगाए जाते थे और इनमें चाय की पत्तियों के लिए दस वर्ष तक इंतजार करना पड़ता था परन्तु आधुनिक तकनीक क्लोनिंग के माध्यम से केवल तीन वर्ष के बाद बगीचे में चाय की पत्तियाँ तैयार मिलती है।
- चाय बगानों में परम्परागत प्रति हैक्टेयर 18 से 20 हजार पौध लगाई जाती रही हैं परन्तु आधुनिक तकनीक से जितनी हरी चाय की पत्तियों का उत्पादन 20000 हजार पौध से प्राप्त होता है उतना ही 12000 पौध से भी प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त प्रति

हैक्टेयर  बची हुई शेष भूमि में इंटरक्रॉपिंग तकनीक से शुगर फ्री, हल्दी,अदरक, काली मिर्च, सिलवर ओक छायेदार वृक्ष के बदले टैक्सस (कैंसर औषधि), और थायम (Thyme) से तार बाड़ कर आय में वृद्धि की जा सकती है।

- बूढ़े व लुप्त हो चुके चाय बागानों की जड़ें और तने भवन निर्माण के लिए महत्वपूर्ण "नींव" की भूमिका निभाते हैं। विश्व भर में आपदा ग्रसित क्षेत्रों से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि आपदाओं से लड़ने के लिए 30 फुट पेड़ के तनों को भूमिगत कर जमीन की सतह से 3 फुट ऊपर तनों पर भवन निर्माण किया जा रहा है। इस प्रकार सरकार द्वारा 'हर भारतीय को एक छत' का नारा सफल बनाने में चाय की मजबूत जड़े व तने सार्थक सिद्ध हो सकते हैं।
- जो तम्बाकू स्वास्थ्य की दृष्टि से "मुँह व फेफड़ों के कैंसर" के लिए हानिकारक है और जिसके पीछे देश की पूँजी इस रोग के चिकित्सा, प्रचार-प्रसार व दवाओं में खर्च होती है ऐसे तम्बाखू, सिगरेट, बीड़ी, खैनी, गुटका इत्यादि के लिए "निकोटीन मुक्त चाय" एक विकल्प के रुप में प्रयोग में लाई जा सकती है।
- चाय दूसरी हरित क्रांति में कृषि और पशुओं के आहार के लिए जनक व जननी की भूमिका निभाने में सक्षम होगी। हमसे कहाँ चूक हुई जब कि इसका वर्णन रामायण काल में संजीवनी का था। कृषि के लिए तीन चीजे महत्वपूर्ण हैं- खाद, पानी, बिजली और उसके लिए सबसे ज्यादा लागत "खाद" सामग्री में होती है। चाय की पत्तियों में कैल्शियम, फासफोरस, पोटेशियम, आयरन, विटामिन-ए,बी,सी, एमिनो एसिड इत्यादि की मात्रा अधिक पाई जाती है और इन सभी गुणों के कारण चाय एक उत्तम "जैविक खाद" के विकल्प के रुप में प्रयोग में लाई जा सकती है और यह इस प्रकार सम्भव है कि तैयार चाय के लिए पहली ऊपर की दो पत्तियाँ ही तोड़ी जाती हैं और नीचे की तीसरी से लेकर बारहवीं पत्ती को कूटने के उपरांत फरमेंटिंग करके तैयार "जैविक खाद" सस्ते दरों पर किसानों को उपलब्ध करवाई जा सकती है जिसका दूरगामी परिणाम यह होगा कि देशवासियों को अच्छा स्वास्थ्य और सस्ते अनाज के भण्डार मिल सकेंगे ।
- जैविक पद्धति से विकसित की गई चाय और दूसरी हरित क्रांति के लिए "रिसर्च लैब" का महत्वपूर्ण स्थान है। मिट्टी की गुणवत्ता से लेकर चाय की अपार सम्भावनाओं और दूसरी हरित क्रांति में कृषि से जुड़ी छोटी से छोटी बातें बिना समय व्यर्थ किए "स्कूल व कालेज" के अवकाश के बाद और गर्मियों के अवकाश को ध्यान में रखते हुए, इनके लैबों का सदुपयोग किया जा सकता है। जहाँ-जहाँ स्कूल व कालेज नहीं हैं वहाँ "मोबाइल वैन तकनीक रिसर्च लैब" द्वारा पहुँचा जा सकता है।

## चाय पर चर्चा अभी बाकी है

भारतीय चाय को विश्व में अपना खोया हुआ स्थान पुनः प्राप्त करना है तो बूढ़े हो चले बागानों को जैविक व आधुनिक तकनीक से जीर्णोद्धार कर नया जीवन प्रदान किया जाना चाहिए। इसके अलावा गैर पारम्परिक क्षेत्रों में जहाँ शोध कार्य किए जा चुके हैं, नई पौध आधुनिक तकनीक को अपनाकर प्रारम्भ की जा सकती है। इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है जहाँ पारम्परिक P.H. मूल्य 4.5 से 5.5 के बीच चुना गया था वहाँ जैविक पद्धति से P.H. मूल्य 3 से 7 के बीच उपयुक्त है। यदि भारतीय चाय को विश्व में एकमात्र सबसे बड़ा उद्योग बनाना है तो उपर्युक्त खुलासों और सभी सम्भावनाओं को एक लक्ष्य बनाकर रोजगार को जन्म दिया जाना चाहिए। तभी 21वीं सदी में इतिहास रचा जा सकता है । कुल मिलाकर यह इस देश की सबसे बड़ी रोजगार उपलब्ध कराने वाली इन्डस्ट्री कहलाएगी और यदि दूसरी हरित क्रांति के कृषकों को "उद्योग का दर्जा" मिल जाए तो यह विश्व की सबसे बड़ी रोजगार देने वाली इन्डस्ट्री कहलाएगी। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए चाय का विकास गैर पारम्परिक क्षेत्रों में जैसे कि नगालैण्ड, सिक्किम, में घालय, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, भूटान, म्यांमार, नेपाल, बंग्लादेश, हिमालय क्षेत्रों में व समुद्र के तटीय क्षेत्रों में भी करना नितांत आवश्यक होगा तभी कृषकों को जैविक खाद आसानी से सस्ते दरों पर उपलब्ध करवाई जा सकती है तथा भारत के ऊर्जावान नवयुवकों को सुरक्षित रोजगार दिलवाया जा सकता है।

"दुग्ध शर्करो युक्त पर्वतों उत्पादित पेय पदार्थ" जी हाँ, यह चाय का ही दूसरा नाम है। यदि आप चाय के सभी गुणों से लाभान्वित होना चाहते हैं तो चाय पर चर्चा अवश्य करें परन्तु "दूध" का प्रयोग न करें। भारत की चाय "राष्ट्रीय पेय पदार्थ बने"।

-------------------------

वो देखो उठी काली काली घटा
है चारों तरफ छाने वाली घटा
घटा के जो आने की आहट हुई
हवा में भी इक सनसनाहट हुई
तो बेजान मिट्टी में जान आ गई

❖ ***इस्माईल मेरठी***

***साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ***

*सामान्य लेख*

# कूड़े के ढेर के नीचे कराहती धरती

❖ *अंजुलता विक्रम शर्मा*

पृथ्वी दिवस हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाता है। इस वर्ष का विषय है "हमारी जिम्मेदारी लेने की बारी है"। जाहिर है यह केवल थीम नहीं है बल्कि इसका अर्थ काफी गूढ़ है। हरियाली के बीच चहकते हुए परवाज़ भरते पंछी, कलकल करती नदियाँ, सरोवरों में खिले कमल, सोतों से फूटती शीतल जल की धारा और कहाँ आज की धरा अत्यधिक जल-दोहन के कारण सूखते भूमिगत जल स्त्रोत, रासायनिक उर्वरकों से बंजर होती पृथ्वी, हरियाली लीलते कंक्रीट के जंगल, कूड़े कचरे से पट चुके सरोवर, खनन के चलते इको सिस्टम पर चोट, सीवेज व औद्योगिक प्रदूषण से लबालब नदियाँ, जहरीली होती हवाएं, गायब होती गौरैया, कौवे.. . . ये उदाहरण यह साफ़ करते हैं कि धरा को हमने कहाँ से कहाँ पहुंचा दिया है। अफ़सोस की बात यह है कि हर साल हम "विश्व पृथ्वी दिवस "बड़े जोर-शोर से मनाते हैं, लेकिन ऐसे तमाम कारक जो एकमात्र जीवन युक्त ग्रह के लिए चुनौती बन चुके है, उन्हें रोकने की कोशिशें हाशिए पर है। हम पहाड़ों की नैसर्गिक सुन्दरता को निहारते नहीं थकते लेकिन रचयिता की इस कृति को नुकसान पहुँचाने से बाज नहीं आते। जाहिर है कि अब जिम्मेदारी लेने की हमारी बारी है। लेकिन यह जिम्मेदारी ठंडे कमरों में बैठ कर गोष्ठियाँ करने, आकर्षक पोस्टर, बैनर छपवाने या एक दिन स्कूली बच्चों के साथ कार्यक्रम करने से पूरी नहीं होगी। इसके लिए व्यक्तिगत कोशिशें करनी होंगी। ऐसा नहीं है कि हम अनजान हैं, बस पहले आप, पहले आप में समय गुजर रहा है। इसलिए चलिए इस पृथ्वी दिवस से शुरुआत करें, जिससे कुछ नहीं तो अगले वर्ष जब पृथ्वी दिवस आए तो यह थोड़ी सी कोशिश हमें आत्मसंतोष दे सके ।

हमें पहले यह देखना होगा कि यह हालत हुई कैसे ? इसके दो प्रमुख कारण हैं -

- **धरती पर बढ़ता कूड़ा :**

कूड़े कचरे का निस्तारण खुले में करने से भूमिगत जल स्त्रोत जहरीले हो रहे हैं। यही नहीं, लैंड फिलिंग के लिए कूड़े का इस्तेमाल मृदा को नुकसान पहुँचा रहा है। दरअसल घरों से निकलने वाला कूड़ा- कचरा पर्यावरण के समक्ष बड़ी चुनौती बन चुका है। समस्या यह है कि इससे निपटने के लिए फिलहाल जो तैयारियाँ हैं, उनसे कोई राहत मिलती नहीं दिखाई देती। केवल लखनऊ राजधानी की बात करें तो नगर निगम के मुताबिक यहाँ से रोज करीब 1400 मीट्रिक टन कूड़ा निकलता है। इसमें 70% सड़ने वाला, 20% मलबा और 10% प्लास्टिक होता है। हर रोज सुबह शहर के अलग-

❖ ***मौसम केंद्र - लखनऊ के कार्यालय में वैज्ञानिक सहायक के पद पर कार्यरत हैं***

अलग हिस्सों से कूड़ा ले जाकर आई.आई.एम रोड पर डाल दिया जाता है। यहाँ कूड़े के ऊँचे -ऊँचे टीले पृथ्वी का दम घोट रहे हैं। इससे रिसने वाला दूषित पानी (लिचेट) भूजल स्त्रोतों को तबाह कर रहा है। वहीं इससे पैदा होने वाली मीथेन व कार्बन डाईऑक्साइड हवा को जहरीला बना रही है। ख़ास बात यह है कि कोई नहीं जानता कि आखिर इस कूड़े का हश्र क्या होगा ?

राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सर्वेक्षण के अनुसार कूड़े से खाद बनाने के लिए प्लेटफॉर्म तैयार नहीं है। इनसे निकलने वाले दूषित पानी को लीचेट टैंक तक ले जाने के लिए नालियां तक नहीं बनाई गई हैं। यही नहीं, प्लास्टिक कचरे से दाना बनाने के लिए भी प्लांट नहीं लग सका है। बताते चलें कि कूड़े का निस्तारण वैज्ञानिक तरीके से करना अनिवार्य है। कारण यह है कि अवैज्ञानिक तरीके से जमा किए जाने वाले कूड़े से भूजल दूषित होने के साथ-साथ हवाएं जहरीली होती है। इससे पर्यावरण को बड़ी क्षति पहुंचती है।

- **भूगर्भ से गायब होता जल :**

पृथ्वी के गर्भ में छिपे जल भंडारों को मुफ्त की जागीर समझने की भूल ने हमें ऐसे मुकाम पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहाँ हम अपने हिस्से के पानी के साथ-साथ न जाने कितने और लोगों के हिस्से के पानी को बर्बाद कर रहे है।

धरा में छिपे भूमिगत जल भंडारों को यह नुकसान बिल्डर पहुंचा रहे हैं। कुकुरमुत्ते की तरह आकार लेती गगनचुम्बी इमारतों के निर्माण के लिए तो बड़े पैमाने पर भूजल भंडारों से अनवरत पानी लेने का सिलसिला जारी है। इसका सबसे भयावह पहलू यह है कि जमीन के 3-4 मंजिल नीचे जाकर धरती के गर्भ में प्रकृति द्वारा संचित जल भंडारों से शुद्ध पानी को खींचकर नाली-नालों में व्यर्थ बहाया जा रहा है, जहाँ कुदरत द्वारा भविष्य की जरुरत के लिए पानी संचित है। इससे पृथ्वी को दोहरी चोट पहुँच रही है। एक तो निर्माण के लिए हजारों गैलन पानी का दोहन कर धरती की कोख खाली की जा रही है तो दूसरी ओर जमीन की गहराई में सुरक्षित शुद्ध पानी को भी निचोड़ा जा रहा है।

जमीन के नीचे तीन चार मंजिल तक निर्माण से प्राकृतिक जल स्त्रोतों तक बारिश का पानी रिसकर जाने के रास्ते ही बंद हो गए हैं। यही नहीं, निर्माण में बाधा बन रहे भूमिगत जल स्त्रोतों की 'डीवाटरिंग' करके यानि भूजल निकाल कर उसे सुखाया जा रहा है। खनन ने इको सिस्टम को ही असंतुलित कर दिया है। नदियों का प्रवाह प्रभावित हो रहा है व बाढ़ का खतरा पैदा हो गया है। इतना ही नहीं, नदी जल में सीवेज और औद्योगिक प्रदूषण सर चढ़ कर बोल रहा है।

बताते चलें कि ऐसे ही मामलों में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) द्वारा नोएडा एवं ग्रेटर नोएडा में निर्माण कार्यों के लिए भूजल के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई थी। NGT में मामला दर्ज करने वाले पर्यावरणविद विक्रांत तोंगद की मानें तो इस पर अंकुश तो लगा लेकिन जिम्मेदार अथॉरिटी पूरी तरह से रोक लगा पाने में असफल रही है । यही वजह है कि NGT द्वारा ग्रेटर नोएडा में बीते

दिनों सख्त कार्रवाई करते हुए दो बिल्डरों के प्रोजेक्ट सील कर दिए गए। विक्रांत बताते हैं कि समस्या की भयावहता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि निर्माण कार्यों के लिए इस कदर भूजल का इस्तेमाल हुआ कि ग्रेटर नोएडा के गाँव के किसानों के पम्प सूखने के साथ उनके हैण्ड पम्प तक सूख गए। राजधानी में भी कमोबेश ऐसी ही स्थितियां हैं। केन्द्रीय भूजल बोर्ड ने अंधाधुंध बनाए जा रहे अपार्टमेंट पर अंकुश लगाने की गरज से सिफारिश की है कि "एक परिवार एक मकान" का फार्मूला लागू किया जाए। देखा गया है कि संपत्ति के लालच में लोग कई- कई फ्लैट लेकर उस पर कई - कई वर्षों तक ताला डालकर रखते हैं। इससे नुकसान यह हो रहा है कि निर्माण कार्यों में लाखों गैलन पानी बर्बाद हो रहा है।इसका विकल्प यह हो सकता है कि

- जमीन के नीचे निर्माण में पाइलिंग का प्रयोग करें, इससे जमीनी जल स्त्रोतों का पानी निकालना नहीं पड़ेगा,
- निर्माण कार्य में सीवेज शोधन संयंत्र के शोधित पानी का प्रयोग किया जाए ।
- जहाँ नगर निगम की आपूर्ति हो वहां बोरिंग पर रोक लगे ।

**खतरनाक तथ्य :**

- ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार ग्रीन हाउस गैसों में मुख्य $CO_2$ का उत्सर्जन 289 मिलियन टन आँका गया है, जो कुल ग्रीन हाउस गैसों का 66% है।
- बीते 15 वर्षों में $CO_2$ का उत्सर्जन 3 गुना से अधिक बढ़ा है। इसके लिए कोयला आधारित तापीय बिजली घर व पेट्रोलियम उत्पादों की खपत में 2 से 3 गुना वृध्दि जिम्मेदार है ।
- $CO_2$ उत्सर्जन का 27% केवल सोनभद्र से निकलता है ।
- रायबरेली 5% व नोएडा 4% $CO_2$ उत्सर्जित करता है ।
- दूसरे स्थान पर ग्रीन हाउस गैस - मीथेन की भागीदारी 26% है, अकेले धान की खेती में 15% मीथेन निकलती है, जब कि नाइट्रस ऑक्साइड का उत्सर्जन 8% है ।

**सेहत पर असर :**

हवा सबसे ज्यादा कार्बन मोनो ऑक्साइड (CO) से जहरीली होती है जिससे सांस व अस्थमा के मरीजों को समस्या हो सकती है। थकावट बहुत जल्दी आती है। लाल रक्त कणिकाएं (RBC) फेफड़ों से ऑक्सीजन लेकर शरीर के उतकों तक पहुंचाती हैं। वहीं CO इसमें अवरोध पैदा कर RBC की ऑक्सीजन ($O_2$) ले जाने की क्षमता को कम करती है। अकसर कमरे में अंगीठी जलाकर सो जाने पर कमरे की वायु CO का स्तर इस कदर बढ़ जाता है कि मृत्यु का कारण तक बन जाता है। उसी तरह हवा में मौजूद CO किसी के रोग के रूप में सामने नहीं आई है, लेकिन लोगों में थकावट, सुस्ती व कमजोरी की शिकायत इसकी वजह हो सकती है ।

*सामान्य लेख*

# विविधता में एकता

❖ *आर. बी. एस. नारायण*

भारत एक विशाल एवं विविधता से भरा देश है। इस विविधता में अनेक जाति, भाषा, धर्म आदि जैसे प्रमुख रूप से समावेश है। भारत में लोगों के जो अलग अलग समूह हैं, उनके शारीरिक या जनसांख्यिकीय विशेषताओं में तो विभिन्नता है ही परन्तु व्यवहार के विशिष्ट चाल चलन में भी भारी विभिन्नता देखी जाती है । हर एक समूह के अपने तौर तरीके, भाषा, धर्म, जाति, सांस्कृतिक रहन सहन आदि समूह के आधार पर निर्धारित हैं तथा हर समूह में भी जातीय तर्ज़ पर उपजात, उपक्षेत्रीय बोलियाँ, धर्म आदि पाए जातें हैं। सहज शब्दों में अगर ये कहा जाए कि भारतीय उप-महाद्वीप विभिन्न नस्लों का एक संग्रहालय है तो शायद गलत ना होगा। सारांश में कहा जाए तो भारत में पाई जाने वाली विविधता अद्वितीय है। बड़ी आबादी के साथ एक बड़ा देश होने के नाते, भारत भौतिक सुविधाओं और सांस्कृतिक चालचलन की अंतहीन किस्मों का एक सुन्दर उदहारण प्रस्तुत करता है। संक्षेप में, भारत दुनिया का प्रतीक है। विशाल जनसंख्या का यह देश, विविध धर्मों और रंगों के लोगों से मिलकर बना है। आर्थिक विकास, शिक्षा और विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में लोगों की राजनैतिक, संस्कृतिक स्तर क्षेत्रवार भिन्न हैं। भारत में दिखाई देने वाली विभिन्न विविधताओं के होते हुए भी, जीवन की एक निश्चित अंतर्निहित एकरूपता के साथ-साथ एकीकरण के कुछ तंत्र भी यहाँ स्थित हैं, जो हमें एकता के बंधन में बांधकर रखते हैं। विविधता में एकता यह इस भूभाग की मुख्य कल्पना है। कुछ परम्पराएँ जैसे आवास की परंपरा, भारत की राजनैतिक एकता, भावनात्मक बंधन, कुछ विषयों पर धार्मिक और सांस्कृतिक समानता, ये हमारी ताकत है ।

भारत की एकता का एक मुख्य पहलू राजनैतिक एकीकरण में पाया जाता है। राजनैतिक रूप से भारत अब एक संप्रभु राज्य है। यहां के हर भाग में एक ही संविधान है और यह एक ही संसद द्वारा संचालित है। हम लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के मानदंडों द्वारा चिह्नित एक ही राजनैतिक संस्कृति का हिस्सा है। आजादी के बाद हमने एक ऎसे सांस्कृतिक मॉडल को अपनाया है जहाँ एक एकीकृत राष्ट्र के दायरे के अंदर रहते हुए ही हमने सभी संस्कृतियों के संरक्षण और उनकी सफलता की जिम्मेदारी ली है । इसलिए, राष्ट्रीय एकता की हमारी नीति के रूप में सभी धर्मों के लिए समान आदर, यानि धर्मनिरपेक्षता को पसंद किया है। जब भी कभी इस एकता एवं अखंडता को कुछ विभाजनकारी और अलगाववादी प्रवृत्तियों ने बिगाड़ने की कोशिश की, तब तब सारा देश एकजुट होकर इसके खिलाफ आवाज उठाता रहा है और ऐसी ताकतों को विफल करता रहा है। कभी कभी इन

❖ *मौसम कार्यालय - मुंबई में सहायक मौसम विज्ञानी के पद पर कार्यरत हैं*

शक्तियों द्वारा अलग अलग मुद्दों को लेकर भ्रम फैलाया गया एवं देश में दंगे कराए गए। उदाहरण के लिए जब हमने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में लागू करने का फैसला किया तब विरोध में तमिलनाडु में भाषाई दंगे देखे तो कभी धर्म के नाम पर होने वाले दंगों को भी हम भुला नहीं सके हैं। अतीत और वर्तमान में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए की गई कोशिशों के बावजूद कुछ नासमझ तत्वों की वजह से रुकावट आती रही है। इनके साथ साथ कुछ नई चुनौतियाँ भी पिछले दशकों के दौरान उभरी हैं। ये राज्य के निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में काफी परेशानियों का सबब है । ऎसे तत्वों की वजह से राष्ट्र-राज्य की समानता और सामाजिक न्याय के लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधा आ रही है, जिसकी आज हर देश प्रेमी भारतीय चर्चा करता रहता है।

## सामाजिक घटकों में विविधता

भारत एक विषम समाज है। यह विभिन्न समूहों की एक संख्या से बना है। भारतीय राष्ट्र के लिए सबसे पहले संभावित खतरा इस बहुसंख्य विषम समाज में ही निहित है। भारतीय समाज धर्म, जाति, भाषा और जातीय मूल के संदर्भ में बंटा हुआ है। ब्रिटिश कुछ हद तक एक दूसरे के खिलाफ एक समूह खड़ा करने की नीति का पालन करते हुए विभिन्न समूहों को नियंत्रित करने में सक्षम थे। किन्तु भारत से ब्रिटिश शासन को हटाने के लिए बापू ने विभिन्न समूहों को एकजुट किया यह उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी। इसी के लिए उन्होंने अपनी क़ुरबानी भी दी। आज भी भारत के राष्ट्रीय नेताओं को इन्हीं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हर समूह या वर्ग अपने अपने समूह को एकत्रित कर अपनी विशिष्ट आकांक्षाओं, इतिहास, और जीवन की रक्षा करना चाहता है तथा अपने समूह के लोगों का भला करना चाहता है। जबकि राष्ट्रीय नेताओं को इन परस्पर विरोधी गुटों के बीच टकराव कम करने के लिए प्रयास करते रहना पड़ता है। इसीलिए आज हमारे प्रधान मंत्री को पूरे देश में "सबका साथ-सबका विकास" जैसे नारे लगाने पड़ते हैं और जिसका शायद कोई पर्याय नहीं है ।

## क्षेत्रवाद और सांस्कृतिक पहचान

क्षेत्रवाद भी आजकल एक राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा बनता जा रहा है। हर क्षेत्र के वासी उनकी अलग अलग सांस्कृतिक पहचान होने की वजह से एवं अपने अपने समूह के उत्थान हेतु राजनैतिक स्तर पर राज्यों का पुनर्गठन चाहते हैं। उदाहरण के लिए गोरखालैंड हेतु गोरखा समूह की पुरानी मांग है। उसी प्रकार विदर्भवासी अपना विदर्भ चाहते हैं तो तेलंगाना समूह अपनी पहचान पाने में सफल हो चुके हैं। झारखंड एवं उत्तराखंड राज्य का निर्माण कुछ आदिवासीयों द्वारा मांगों का नतीजा है। किसी तरह राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में क्षेत्रीय और सांस्कृतिक पहचान के अस्तित्व को हमने मान्यता दी है और केंद्र सरकार ने भी क़ानूनी सुरक्षा के साथ कुछ कानूनी प्रतिबंध भी लगाए हैं।

## जातिवाद

जातिवाद ने हमेशा राजनीति और आरक्षण नीति के मामलों में एक विघटनकारी भूमिका

निभाई है और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच एक व्यापक खाई बना दी है। जाति व्यवस्था में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए एक सुरक्षात्मक भेदभाव प्रदान करके संविधान निर्माताओं द्वारा मान्यता दी गई है किन्तु इस प्रकार का आरक्षण समय की मांग को देखते हुए एक सीमित अवधि के लिए बनाया गया था।

**भाषावाद**

हाल ही में यह देखा जाने लगा है कि राष्ट्रीय भावना धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है और भाषाई और क्षेत्रीय वफादारी की ओर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। भाषाई तनाव अब सीमाओं में प्रकट होते हैं। उदाहरण के लिए गोवा कोंकणी और महाराष्ट्र मराठी भाषाओं के आधार पर विभाजित हैं। बेलगाम में कन्नड़ भाषी तथा मराठी लोगों के बीच संघर्ष भी है। अब तो भाषा विशेष रूप से स्वतंत्रता या राजनैतिक अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली स्रोत बन गया है। एक विशिष्ट राज्य में केंद्रित समूह, दूसरे राज्यों के विभिन्न भाषाई समूहों के लोगों को अपने-अपने राज्यों पर बोझ सा महसूस करने लगें हैं। उन्हें लगता है कि अपने राज्य का हित ही सर्वोपरि है। यह राष्ट्रीय मुद्दों पर विचार करने को नजरअंदाज कर संकीर्ण भावनाओं का कारण बनता है। भाषाई वफादारी की वजह से राष्ट्रीय भावना को नजर अंदाज करना हमारे देश की संप्रभुता के लिए अब बड़ा खतरा बनता जा रहा है। हम सब भारतीय हैं,इस भावना को सुदृढ़ करने की अब सबसे ज्यादा जरुरत है।

**सांप्रदायिकता**

यह पाया गया कि, अन्य समूहों की कीमत पर अपनी आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक ताकत को अधिकतम करने के लिए, कई सामाजिक-धार्मिक समूह यह परिभाषित करने की कोशिश करते हैं कि उनकी सांप्रदायिकता अन्य समूहों की तुलना में ज्यादा ऊँची है। इस प्रकार की प्रवृत्ति धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की धारणा को आघात पहुंचाती है। भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता का मतलब है कि सभी धर्मों को शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के रूप में रहने का पूरा अधिकार है तथा इसके लिए घटनात्मक सुरक्षा प्रदान की गई है। लोकतंत्र और समाजवाद के लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयास में हम आज तक इस भारत माता को इस प्रकार की सांप्रदायिक हिंसा करने वाले असुरों से मुक्त नहीं करा पाए हैं। विभिन्न धार्मिक समुदायों में तालमें ल बनाकर आपस में शांतिपूर्ण ढंग से एवं प्यार से रहने की एक तालीम हमें लेनी होगी तभी सही मायने में हम धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बन पाएंगे।

**क्षेत्रीय विषमता**

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हुआ असमान विकास नकारात्मक साबित हुआ है और राष्ट्रीय एकता के चरित्र को प्रभावित करता है। असमान विकास, आजादी के बाद कई सामाजिक आंदोलनों का प्रमुख कारण बना है। उदहारण के लिए झारखण्ड, बिहार, मध्यप्रदेश जैसे प्रदेशों में आदिवासी समूहों को यह लगने लगा है कि उनके क्षेत्र के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों का दूसरों के लाभ के लिए उपयोग किया

जा रहा है। इसी प्रकार बंगाल और उड़ीसा के अन्य समूहों की भी यह भावना बनने लगी है और वे अपने लिए पृथक राज्य की मांग करने लगते हैं। इस प्रकार के असंतोष मिटाने हेतु, यह देखना होगा कि "सबका साथ सबका विकास" का नारा पूरी तरह से सार्थक हो। इससे देश की अखंडता और एकता बनाए रखने में सहायता मिलेगी ।

## जातीय संघर्ष

जातीय संघर्ष राष्ट्रीय एकता के लिए एक रुकावट है। भारत में कुछ राज्यों में जैसे पूर्वोत्तर में कई जातीय समूहों के बीच आपसी मतभेद एवं संघर्ष है जो आधुनिक राष्ट्र निर्माण के लिए एक दीवार है। सन 1947 में भारत की आजादी के बाद से, कुछ प्रदेशों जैसे उत्तर पूर्व में राजनैतिक शांति नहीं देखी गई। कभी बोडो, कभी उल्फा, तो कभी नक्सल आदि विद्रोही स्वर उठते रहे हैं। आज भी असम, त्रिपुरा, नागालैंड, मणिपुर जैसे क्षेत्र उग्रवाद से परेशान हैं तथा आए दिन वहाँ हिंसा होती रहती है।

## आदिवासी पहचान

भारतीय राष्ट्रीय मुख्यधारा के एक सदस्य होने के बावजूद भी कुछ समूहों को हमने नागा या मिजो आदिवासी कहा है। इस प्रकार के शब्द या "आदिवासी" नाम दिए जाने से इन समूहों की भावनाएं आहत होती हैं। अपनी पहचान को खोने के भय से ही इनमें उग्रवाद की आग फैलती है और वे क्षेत्रीय स्वायत्तता की मांग पर अड़ जाते हैं। अपनी पहचान खोने का डर उन्हें इसके लिए बाध्य करता है।

## राजनैतिक दलों की भूमिका

क्षेत्रीय राजनैतिक दल लोगों की क्षेत्रीय भावनाओं का शोषण करने में एवं भावना भड़काने में भूमिका निभाते हैं। क्षेत्र और भाषायी आधार पर गठित इन राजनैतिक दलों का एक ही मकसद होता है भाषावाद एवं क्षेत्रवाद की भावना को भड़का कर सत्ता हासिल करना।

अंत में, इन सारी बातों की वजह से, भारत एक समृद्ध राष्ट्र बनने में बाधा महसूस कर रहा है तथा कई विदेशी संस्थागत निवेशक इस देश में अस्थिरता के डर से पूंजी नहीं लगाना चाहते। हमें धर्मों, अनुष्ठानों, जातियों, उपजातियों, रंग, आहार पोशाक पैटर्न, बोलियों, लिपियों, भाषाओं, उपभाषा और क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर एक समृद्ध समाज निर्माण पर ध्यान देने की अब जरुरत है। हम ये सारी विषमताएं अचानक तो नहीं दूर कर सकते हैं पर सतत प्रयास से रचनात्मक बदलाव कर सकते हैं। विविधताओं के बीच एकता की राष्ट्रीय भावना सर्वोपरि मानकर प्रस्थापित कर सकते हैं तथा सही मायनें में सबका साथ सबका विकास का नारा सफल बना सकते हैं एवं आने वाली पीढ़ी का भविष्य उज्ज्वल बना सकेंगे।

रहस्य

# पुनर्जन्म

❖ प्रीति श्रीवास्तव

पुनर्जन्म यह धारणा है कि व्यक्ति मृत्यु के पश्चात पुन: जन्म लेता है । हम ये कहें कि कर्म आदि के अनुसार कोई मनुष्य मरने के बाद कहीं अन्यत्र जन्म लेता है । भारतीय मत इसका उत्तर देता है कि अज्ञान से आवृत्त होने के कारण आत्मा अपना वर्तमान देखती है और भविष्य बनाने का प्रयत्न करती है पर भूत को एकदम भूल जाती है । यदि अज्ञान का नाश हो जाए तो पूर्वजन्म का ज्ञान असंभव नहीं है । पिछले जन्म में आप क्या थे ? क्या आप पुनर्जन्म के सिद्धांत को मानते हैं? पिछला या पुनर्जन्म होता है या नहीं ? यह सवाल प्रत्येक व्यक्ति के मन में होगा । कुछ लोग मानकर ही बैठ गए हैं कि हां होता है और कुछ लोग यह मानते हैं कि नहीं होता है ।

पुनर्जन्म को लेकर सबसे बड़ी विडम्बना है कि यहूदी, ईसाईयत, इस्लाम पुनर्जन्म को नहीं मानते जबकि हिंदू, जैन और बौद्ध यह तीनों धर्म पुनर्जन्म को मानते हैं । गीता में कहा गया है कि आत्मा जन्म एवं मृत्यु के निरन्तर पुनरावर्तन की शिक्षात्मक प्रक्रिया से गुजरती हुई अपने पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करती है और प्रत्येक आत्मा मोक्ष प्राप्त करती है ।

हमारा यह शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है- आकाश, वायु, अग्नि, जल, धरती । शरीर जब नष्ट होता है तो उसके भीतर का आकाश, आकाश में लीन हो जाता है, वायु भी वायु में समा जाती है । अग्नि में अग्नि और जल में जल समा जाता है । अंत में बच जाती है राख, जो धरती का हिस्सा है इसके बाद में कुछ है जो बच जाता है, उसे कहते हैं आत्मा । परन्तु गीता में आठ तत्वों की बात की गई है फिर शेष तीन तत्व कौन से हैं ? वे हैं मन, बुद्धि और अहंकार।

भारतीय दर्शन में नश्वरता को दु:ख का कारण माना जाता है । संसार आवागमन, जन्म मरण और नश्वरता का केंद्र है । प्राय: सभी दार्शनिक प्रणालियों ने संसार के दुखमय स्वभाव को स्वीकार किया है और इससे मुक्त होने के लिए कर्ममार्ग या ज्ञानमार्ग का रास्ता अपनाया है । फलत: सभी प्रणालियों में मोक्ष की कल्पना प्राय: आत्मवादी है । हम जिस जगत में जी रहे हैं, वह भौतिक है, केवल पदार्थ ही पदार्थ है । पदार्थ की सीमा में विचरण करने वाला व्यक्ति आत्मा तक नहीं पहुँच पाता । हमारे ज्ञान की शक्ति बहुत स्थूल है ।

हमारे जानने का पहला साधन है इन्द्रियां, दूसरा साधन है मन और तीसरा साधन है बुद्धि । इन्द्रियों के द्वारा जो प्राप्त होता है उसका ज्ञान मन को होता है और जो मन को प्राप्त होता है उसका विवेक और निर्णय करना बुद्धि का काम है । तीनों की बहुत छोटी दुनिया है । प्रश्न उठता है कि पुनर्जन्म

❖ ***मौसम केंद्र - भोपाल के कार्यालय में वैज्ञानिक सहायक के पद पर कार्यरत हैं***

की अवधारणा को हम कैसे सिद्ध करें । इसे सिद्ध करने के लिए हमारे पास कुछ आधार हैं । इन आधारों में पहला सशक्त प्रमाण है स्मृति । हिंदू धर्म के अनुसार मनुष्य का केवल शरीर मरता है इसकी आत्मा नहीं । आत्मा शरीर का त्याग कर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है, इसे ही पुनर्जन्म कहते हैं । हालांकि नया जन्म लेने के बाद पिछले जन्म की याद बहुत ही कम लोगों को रह पाती है । पुनर्जन्म की घटनाएं भारत सहित दुनिया के कई हिस्सों में सुनने को मिलती हैं ।

बौद्ध धर्म पुनर्जन्म को सच मानता है । बौद्ध दर्शन में निर्वाण की बात कही जाती है । बौद्ध धर्म की तरह हिंदू धर्म भी पुनर्जन्म की अवधारणा में विश्वास करता है । मनुष्य देह की प्राप्ति के बाद जन्म मरण का चक्र चालू हो जाता है । मृत्यु के बाद जब स्थूल देह को त्याग कर जीवात्मा बाहर आती है तो अपने साथ सूक्ष्म शरीर को लेकर चलता है । सूक्ष्म शरीर में मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार होते हैं ।

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है -

'यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजन्यन्तें कलेवरम् ।
तं तमें वैति कौन्तेंय सदा तद्भावभावित ।

अर्थात् मनुष्य जिस भाव का स्मरण करता हुआ अन्तकाल में देह त्याग करता है उसी भाव को प्राप्त होता है ।

अन्तकाले च मामें व स्मरन् मुक्तवा कलेवरम् ।
य: प्रयाति स मद्रभदावं यति नास्त्यत्र संशय: ।।

अर्थात् अन्तकाल में भगवत भाव का स्मरण करते हुए देह त्याग कर सकने पर भगवान का सायुज्य-लाभ प्राप्त किया जा सकता है, इसमें कोई संदेह नहीं है । यह बात तो सत्य है कि आपके होकर वही लोग अन्तिम समय तक आपके साथ रहेंगे जिनका आपके साथ पूर्वजन्मों का संबंध है बाकी तो सब परिचयात्मक संबंध मात्र ही हैं । जन्म एक दु:ख है और मरण भी दु:ख है । प्राणी जब जन्म लेता है तब भी बहुत दु:ख का अनुभव करता है और जब मरता है तब भी बहुत दु:ख का अनुभव करता है । जन्म से पूर्व बच्चे में पूर्वजन्म की स्मृति होती है किन्तु जन्म के समय इतनी भयंकर यातना से गुजरना पड़ता है कि उसकी सारी स्मृति नष्ट हो जाती है ।

योनियाँ चार तरह की मानी गई हैं - उद्भिज, स्वेदज, अण्डज एवं जरायुज । इनमें उद्भिज, स्वेदज एवं अण्डज इन तीनों योनियों में चौरासी लाख जन्म माने गए हैं । चौरासी लाख जन्मों के बाद जरायुज स्थिति प्राप्त होती है। फिर जरायुज श्रेणी की उर्ध्वतम सीमा पर पहुंचकर दुर्लभ मनुष्य शरीर मिलता है । मनुष्य शरीर प्राप्ति से पूर्व तक जीव पाप-पुण्य से परे होता है । हजारों वर्षों से मनुष्य यह जानने का प्रयत्न करता रहा है कि जन्म से पूर्व और मृत्यु के पश्चात् क्या ? यह पूर्व और पश्चात् की जिज्ञासा दर्शन के प्रारम्भिक क्षणों में हो रही है । इसका उत्तर उन लोगों ने दिया जो प्रत्यक्ष ज्ञानी थे, जिनका अपना अनुभव और साक्षात्कार था । उन्होंने कहा, 'जन्म के पहले भी जीवन

होता है और मृत्यु के बाद भी जीवन होता है । 'बुद्धिवादी दार्शनिकों ने तर्क दिया कि न पूर्वजन्म है न पुर्नजन्म है । केवल वर्तमान जीवन ही होता है । इससे दो धाराएं बन गई हैं - एक को नास्तिक कहा गया और दूसरे को आस्तिक कहा गया है ।

आत्मा को मानने वाली धारा आस्तिक व न मानने वाली धारा नास्तिक है । जब यह शरीर बिखरता है, शरीर की शक्तियां बिखरती है और जब विशिष्ट प्रकार के परमाणुओं की इस संयोजना का विघटन होता है तब चेतना समाप्त हो जाती है । जब तक चेतना तब तक जीवन। जीवन समाप्त, तब चेतना समाप्त हो जाती है । इसके पश्चात कुछ भी नहीं है । न पहले चेतना और न बाद में चेतना । जो कुछ है वर्तमान है न अतीत और न भविष्य । हम सभी को ऐसे हजारों किस्से सुनने को मिलते हैं कि फला बच्चा अपने पूर्व जीवन के किस्से सुनाता है । आखिर इस किस्म की घटनाओं का सही कारण क्या है ? क्या पुर्नजन्म सम्भव है ? क्या मृत्यु के बाद दोबारा मनुष्य जीवन संभव है?

पश्चिम के एक दार्शनिक कार्लोस लामोत ने पुर्नजन्म की अवधारणा पर काम किया है। वह मृत्यु के उपरांत जीवन को दो हिस्सों में बांटते हैं एक वैयक्तिक और दूसरा निर्वैयक्तिक। निर्वैयक्तिक जीवन का सबसे सटीक उदाहरण बौद्ध धर्म में व्यक्त निरपेक्ष मस्तिष्क है जो कभी मरता नहीं । यहीं से पुर्नजन्म की बात उठती है । इसमें सबसे बड़ा पेच यह है कि हम पहले से ही मनुष्य के शरीर में एक ऐसे तत्व की उपस्थिति की बात मानकर चलते हैं जो रंगहीन, निर्विकार और अदृश्य है । अब इसे कोई आत्मा कहता है तो कोई मस्तिष्क । यदि यह अदृश्य तत्व' शरीर के मरणोपरांत भी जीवित रहता है और तमाम किस्म के अनुभव करता है तो फिर वह अनुभव शरीर के बगैर संभव है क्या ?

यह शरीर जब विकसित होता है तो अपनी वस्तुगत परिस्थितियों के मुताबिक रूपांतरित हो जाता है । यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि मूल मस्तिष्क वापस अज्ञान की स्थिति में न पहुँच जाए । बौद्ध दर्शन में इसी चरण को निर्वाण का नाम दिया गया है। यही बौद्ध धर्म का लक्ष्य है। प्रक्रिया को वैज्ञानिक कहा गया है हालांकि दार्शनिक दृष्टि से इस पर भी आपत्तियां हैं । अतएव ऋगवेदकालीन भारतीय चिन्तन में आत्मा के अमरत्व, शरीरात्मक द्वैत तथा कर्म सिद्धांत की उपर्युक्त प्रेरणा से यह निर्णय हुआ कि मनुष्य के मरण के बाद, कर्मों के शुभाशुभ के अनुसार, स्वर्ग या नरक प्राप्त होता है । मृत्यु के बाद क्या कुछ ऐसा है जो शेष रह जाता है जिसे दोबारा जन्म लेने पर मनुष्य याद रखता है ।

भारत ही नहीं बल्कि विश्व में कई जगहों पर बहुत बार ऐसी घटनाएं सामने आती हैं जो पुर्नजन्म की धारणा को मजबूत करती हैं । अमेरिका के डॉ. वाल्टर सेमकिव ने 'बॉर्न अगेन' किताब लिखी हैं जिसमें मनुष्य के पुर्नजन्म व वर्तमान जन्म की तुलना की गई है । पुनर्जन्म की घटना एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है इसे किसी विशेष स्थान या देश तक सीमित नहीं रखा जा सकता है । अगर हम यह कहें कि पुनर्जन्म की घटनाएं या मान्यताएं सिर्फ भारत में ही सुनाई देती हैं या पाई जाती हैं

तो यह कहना गलत होगा । पुर्नजन्म की घटना सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी पाई जाती है । डॉ ब्रायन द्वारा लिखी पुस्तक 'मैनी लाइव्स मैनी मास्टर्स' में ऐसी ही अनेक घटनाओं का वर्णन किया गया है । डॉ. ब्रायन एल.विस एवं ऐमी ई. विस की रचना 'मिरिकल हैपेन्स:द ट्रान्सफार्मेशनल हीलिंग पॉवर ऑफ पास्ट लाइफ में मोरिज' में अनेक शोधों के परिणामों को दर्शाया गया है जो पुनर्जन्म की धारणा को सशक्त आधार प्रदान करते हैं ।

अत: हम कह सकते हैं कि पुनर्जन्म कोई भ्रम ना होकर एक ऐसी घटना है जिसे जानने का प्रयास भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अनेक स्थानों पर किया जा रहा है और उसके लिए शोध व अनुसंधान किए जा रहे हैं ।

---------------------

# हे सागर संगम अरुण नील !

❖ ***जयशंकर प्रसाद***

हे सागर संगम अरुण नील !
आकुल अकूल बनने आती,
अब तक तो है वह आती ,
देवलोक की अमृत कथा की माया
छोड़ हरित कानन की आलस छाया

विश्राम माँगती अपना .
जिसका देखा था सपना
निस्सीम व्योम तल नील अंक में ,
अरुण ज्योति की झील बनेगी कब सलिल?
हे सागर संगम अरुण नील !

***साहित्य में मौसम से जुड़ी सुंदर अभिव्यक्तियाँ***

खास खबर

# खास खबर

## *सम्मान*

- राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास के तत्वावधान में दिनांक 6 व 7 जनवरी 2015 को श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रशंसनीय एवं प्रेरक योगदान के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग को राजभाषा उत्कृष्टता सम्मान-2015 से अलंकृत किया गया।

- राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास के तत्वावधान में दिनांक 6 व 7 जनवरी 2015 को श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भारत मौसम विज्ञान विभाग की वरिष्ठ हिंदी अधिकारी और हिंदी अधिकारी को नामित किया गया । सम्मेलन में राजभाषा हिंदी की स्थिति और उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के बारे में दोनों ने अपने विचार रखे। राजभाषा हिंदी के विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए सुश्री रेवा शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी को राजभाषा विभूति सम्मान-2015 और श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी को राजभाषा गौरव सम्मान-2015 से सम्मानित किया गया।

**खास खबर**

## *प्रकाशन*

- विभाग के 140वें स्थापना दिवस के अवसर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के माननीय मंत्री महोदय डॉ. हर्ष वर्धन के कर कमलों से विभागीय हिंदी गृह पत्रिका *मौसम मंजूषा के* 20वें *संस्करण* का विमोचन किया गया।

- विभाग में राजभाषा हिंदी की गतिविधियों से संबंधित न्यूज़लैटर *'राजभाषा बुलेटिन'* के अंक - 03 का प्रकाशन किया गया। इसका विमोचन दिनांक 02-07-2015 को मुख्यालय की राजभाषा कार्यांवयन समिति की 131वीं बैठक में महानिदेशक महोदय डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़ द्वारा अन्य सदस्यों की उपस्थिति में किया गया ।

- *प्रादेशिक मौसम केंद्र-चेन्नै* की हिंदी गृह पत्रिका *"पवन दूत"* का अंक:6, वर्ष:2014 प्रकाशित किया गया।
- *प्रादेशिक मौसम केंद्र-मुंबई* की हिंदी गृह पत्रिका *"ऋतु चक्र"* का द्वितीय अंक प्रकाशित किया गया।

- *प्रादेशिक मौसम केंद्र- नागपुर* द्वारा हिंदी गृह पत्रिका *"ऋतुरंग"* का पहला अंक प्रकाशित किया गया।
- *मौविअमनि (अनुसंधान) पुणे* द्वारा हिंदी गृह पत्रिका *"किरणें"* का पहला अंक प्रकाशित किया गया।

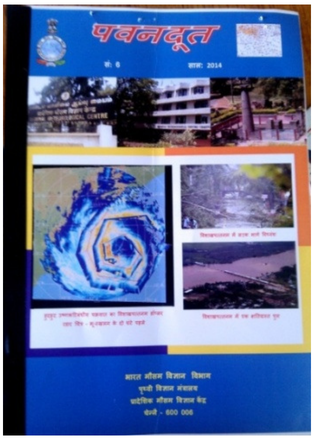


***प्रा.मौ.केंद्र-चेन्नै* की हिंदी गृह पत्रिका**

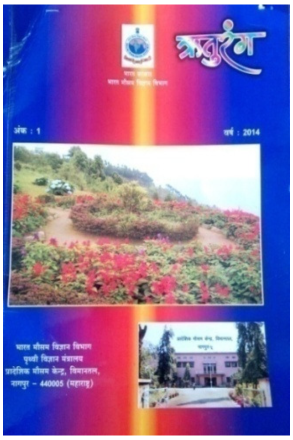


***प्रा.मौ.केंद्र-नागपुर* की हिंदी गृह पत्रिका**

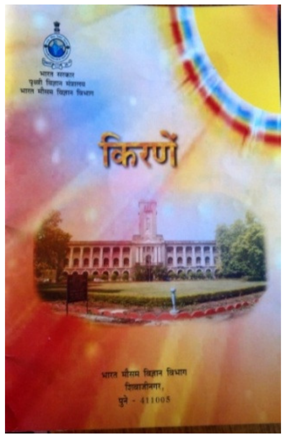


***मौविअमनि,पुणे* की हिंदी गृह पत्रिका**

## *उपकार्यालयों का निरीक्षण*

- मुख्यालय की वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा तथा हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी द्वारा दिनांक 08.01.2015 को मौसम कार्यालय उदयपुर, दिनांक 12.02.2013 को प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै, दिनांक 15.02.2015 को मौसम कार्यालय कडलूर एवं मौसम कार्यालय पुदुच्चेरी, दिनांक 16.02.2015 को डी. डब्ल्यू. आर. चेन्नै,दिनांक 17.02.2015 को मौसम वेधशाला मीनाम्बक्कम एवं विमानन मौसम कार्यालय चेन्नै का निरीक्षण किया गया तथा दिनांक 09-04-2015 को चक्रवात चेतावनी केंद्र- विशाखापट्टनम, दिनांक-11-04-2015 को मौसम कार्यालय-कलिंगपट्टनम और दिनांक 13-04-2015 को डॉप्लर वेदर रेडार-विशाखापट्टनम तथा दिनांक 05-05-15 को प्रादेशिक मौसम केंद्र -कोलकाता, दिनांक 06-05-15 को खगोल विज्ञान केंद्र -कोलकाता, दिनांक 07-05-15 को चक्रवात संसूचन रेडार -कोलकाता का वरिष्ठ अनुवादक के साथ राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।

***मौसम कार्यालय कडलूर***

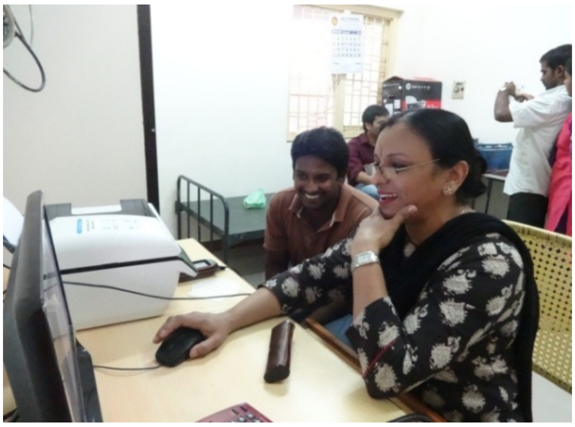

***मौसम कार्यालय पुदुच्चेरी***

- वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा, हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी तथा वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती एम. अनुराधा द्वारा दिनांक 04-06-2015 को मौसम केंद्र -श्रीनगर तथा दिनांक 05-06-2015 को पर्यटन मौसम कार्यालय-पहलगाम का राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।

***पर्यटन मौसम कार्यालय -पहलगाम***

- वरिष्ठ हिंदी अधिकारी द्वारा दिनांक 01.05.2015 को मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक(उ.वा.उ)नई दिल्ली का तथा हिंदी अधिकारी के साथ दिनांक- 20.05.2015 को प्रादेशिक मौसम केंद्र,नई दिल्ली का राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।

## *अनुभागों का निरीक्षण*

- सुश्री रेवा शर्मा- वरिष्ठ हिंदी अधिकारी , श्रीमती सरिता जोशी-हिंदी अधिकारी व श्रीमती एम. अनुराधा-वरिष्ठ अनुवादक द्वारा दिनांक 30.10.2014 को उपग्रह मौसम प्रभाग तथा दिनांक 31.10.2014 को राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केंद्र और भूकंप विज्ञान केंद्र का तथा वरिष्ठ हिंदी अधिकारी द्वारा दिनांक 02.03.2015 को संगठन अनुभाग एवं सी.ए.एम.डी. तथा दिनांक 03.03.2015 को ई.एम.आर.सी. का राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।

- श्री बीरेन्द्र कुमार कनिष्ठ अनुवादक तथा श्री प्रमोद कुमार सहायक द्वारा दिनांक 22.07.2014 को स्थापना-। एवं आयोजना का और दिनांक 23.07.2014 को स्थापना-।।। एवं सूचना का अधिकार प्रकोष्ठ का राजभाषायी निरीक्षण किया गया ।

## *संगोष्ठी / कार्यशाला / सम्मेलन*

- मुख्यालय की वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान, पुणे द्वारा दिनांक 30-31 जुलाई 2014 को पुणे में आयोजित ***राष्ट्रीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी*** में भाग लिया।

***राष्ट्रीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी***

- मुख्यालय की वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा तथा हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी ने राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास के तत्वावधान में दिनांक 6 व 7 जनवरी 2015 को श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) में आयोजित 19वें ***अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन*** में भाग लिया।

***अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन श्रीनाथद्वारा (राजस्थान)***

- ***प्रादेशिक मौसम केंद्र - कोलकाता*** में दिनांक- 08.05.2015 को एक हिंदी संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें डॉ. देवेंद्र प्रधान, वैज्ञानिक "ई" ने "प्रादेशिक मौसम केंद्र कोलकाता की पर, श्री जी. के. दास वैज्ञानिक 'डी' ने "चक्रवात" पर, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने

'राजभाषा हिंदी व निरीक्षण प्रश्नावली" विषय पर, तथा श्रीमती एम. अनुराधा ने 'वार्षिक कार्यक्रम' पर व्याख्यान दिए।

- ***हवाई अड्डा मौसम कार्यालय - मोहनबाड़ी*** में दिनांक-18-06-2014 को एक हिंदी संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के कार्मिकों ने व्याख्यान दिए और विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। इस संगोष्ठी में प्रादेशिक मौसम केंद्र -गुवाहाटी के उपमहानिदेशक मुख्य अतिथि रहे । इसमें कार्मिकों द्वारा हिंदी में वैज्ञानिक व्याख्यान दिए गए ।

- ***पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय*** *के* अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी ने दिनांक 22.12.2014 को मंत्रालय में व्याख्यान दिया । जिसमें पहले सत्र में 'कम्प्यूटर और हिंदी- सुविधाएँ व उपयोग विषय पर प्रेजेंटेशन दिया तथा दूसरे सत्र में कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य करने और हिंदी में कार्य करने की अन्य सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया व उसका व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया।
- ***चक्रवात चेतावनी केंद्र, विशाखापट्टनम*** में दिनांक-13.04.2015 को एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने 'राजभाषा हिंदी व निरीक्षण प्रश्नावली"

विषय पर, श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी ने 'कम्प्यूटर और हिंदी तथा यूनिकोड' विषय पर तथा श्रीमती एम. अनुराधा ने 'वार्षिक कार्यक्रम' पर व्याख्यान दिए।

- ***प्रादेशिक मौसम केंद्र - नई दिल्ली*** द्वारा आयोजित इंटरमीडिएट मौसम प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के बैच 235वें के प्रशिक्षणार्थियों को दिनांक 14.08.2014 को, 236वें बैच के प्रशिक्षार्थियों को दिनांक 17.12.2014 को वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने 'राजभाषा हिंदी' विषय पर व्याख्यान दिया और हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी ने 'कम्प्यूटर और हिंदी सुविधाएँ व उपयोग' विषय पर प्रेजेंटेशन दिया और कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य करना सिखाया ।
- ***मौसम केंद्र - श्रीनगर*** में दिनांक-05.06.2015 को एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें विशेष रूप से आमंत्रित राजभाषा विभाग के निदेशक श्री केवल कृष्ण जी ने कम्प्यूटर पर हिंदी में आसानी से कार्य करने से संबंधित तकनीकी व्याख्यान दिया। वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने 'राजभाषा हिंदी व निरीक्षण प्रश्नावली" विषय पर, श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी ने 'कम्प्यूटर और हिंदी तथा यूनिकोड' विषय पर तथा श्रीमती एम. अनुराधा ने 'वार्षिक कार्यक्रम' पर व्याख्यान दिए ।

***मौसम केंद्र -श्रीनगर में श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग व्याख्यान देते हुए***

***श्रीमती सरिता जोशी, हिंदी अधिकारी मौसम केंद्र -श्रीनगर में व्याख्यान देते हुए***

# संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

***प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै*** का संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 13.02.2015 को राजभाषायी निरीक्षण किया गया जिसमें भारत मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक डॉ. लक्ष्मण सिंह राठोड़, प्रादेशिक मौसम केंद्र चेन्नै के उपमहानिदेशक श्री एस.बी तंपि और वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने भाग लिया। निरीक्षण के दौरान मुख्यालय की हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी और कनिष्ठ अनुवादक श्री बीरेंद्र कुमार भी उपस्थित रहे।

***समिति के संयोजक डॉ प्रसन्न कुमार पाटसाणी का स्वागत करते हुए महानिदेशक डॉ. लक्ष्मण सिंह राठोड़***

***श्री एस.बी तंपि संयोजक से राष्ट्रपति के आदेशों से संबंधित पुस्तक लेते हुए***

***चक्रवात चेतावनी केंद्र - विशाखापट्टनम*** का संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 10.04.2015 को राजभाषायी निरीक्षण किया गया जिसमें भारत मौसम विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक"एफ" डॉ.सोमेश्वर दास, उपमहानिदेशक (प्रशासन एवं भंडार) श्री ए.के शर्मा, चक्रवात चेतावनी केंद्र - विशाखापट्टनम के निदेशक श्री रामचंद्र राव और वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, सुश्री रेवा शर्मा ने भाग लिया। निरीक्षण के दौरान मुख्यालय की हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी और वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती एम. अनुराधा भी उपस्थित रहे।

***निदेशक श्री रामचंद्र राव संयोजक से राष्ट्रपति के आदेशों से संबंधित पुस्तक लेते हुए***

***समिति के सदस्यों का स्वागत करते हुए वैज्ञानिक"एफ" डॉ.सोमेश्वर दास***

***समिति के सदस्य प्रदर्शनी देखते हुए***

***मौसम केंद्र श्रीनगर*** का संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 02.06.2015 को राजभाषायी निरीक्षण किया गया जिसमें भारत मौसम विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक“एफ” डॉ.सोमेंश्वर दास, उपमहानिदेशक (प्रशासन एवं भंडार) श्री ए.के शर्मा, प्रादेशिक मौसम केंद्र नई दिल्ली के उपमहानिदेशक श्री एस. एस. सिंह , मौसम केंद्र श्रीनगर के निदेशक श्री सोनम लोटस और वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने भाग लिया। निरीक्षण के दौरान मुख्यालय की हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी और वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती एम. अनुराधा  भी उपस्थित रहे।

***निदेशक श्री सोनम लोटस संयोजक से राष्ट्रपति के आदेशों से संबंधित पुस्तक लेते हुए***

***निरीक्षण करते हुए समिति के सदस्य***

***निरीक्षण के दौरान अधिकारीगण***

***प्रादेशिक मौसम केंद्र- नई दिल्ली*** का संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 30.06.2015 को राजभाषायी निरीक्षण किया गया जिसमें भारत मौसम विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक "एफ" डॉ.सोमेश्वर दास , उपमहानिदेशक (प्रशासन एवं भंडार) श्री ए.के शर्मा, प्रादेशिक मौसम केंद्र- नई दिल्ली के उपमहानिदेशक श्री एस. एस सिंह और वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, सुश्री रेवा शर्मा ने भाग लिया। निरीक्षण के दौरान मुख्यालय की हिंदी अधिकारी श्रीमती सरिता जोशी , वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती एम. अनुराधा और श्री बीरेंद्र कुमार कनिष्ठ अनुवादक भी उपस्थित रहे।

***समिति के संयोजक डॉ प्रसन्न कुमार पाटसाणी का स्वागत करते हुए उपमहानिदेशक (प्रशासन एवं भंडार) श्री ए.के शर्मा***

***समिति के सदस्यों का स्वागत करते हुए अधिकारीगण***

***निरीक्षण के दौरान अधिकारीगण***

# *उपकार्यालयों में हिंदी दिवस* / हिंदी पखवाड़ा-2014

***मौविअमनि (अनु) पुणे*** में दिनांक 01.09.2014 से 15-09 -2014 तक हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2014 समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण/मसौदा लेखन एवं अनुवाद प्रतियोगिता, सरल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता, हिंदी गीत /लोकगीत /गजल /भजन गायन प्रतियोगिता एवं नाटक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए ।

***प्रादेशिक मौसम केंद्र, गुवाहाटी*** में दिनांक 01.09.2014 से 15.09.2014 तक हिंदी पखवाड़ा / हिंदी दिवस 2014 समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़ा/ हिंदी दिवस 2014 के दौरान हिंदी श्रुतलेखन, सुलेख, हिंदी निबंध ,हिंदी वाद-विवाद , हिंदी तात्कालिक भाषण और हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रा.मौ.केंद्र, गुवाहाटी के उपमहानिदेशक की अध्यक्षता में इस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. बी.के. सिंह, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार को आमंत्रित किया गया।

***प्रादेशिक मौसम केंद्र, कोलकाता*** में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2014 समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाडे के दौरान आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता में सुश्री प्रियम सिंह, हिंदी टिप्पण और मसौदा लेखन प्रतियोगिता में श्री शुभेन्दु कर्मकार हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता में श्री सुमन चट्टोपाध्याय, हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता में श्री जे.वी.सुब्रमन्यम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया ।प्रादेशिक मौसम केंद्र, कोलकाता में हिंदी दिवस समारोह में डॉ. देवेन्द्र प्रधान, मौविउमनि द्वारा स्वरचित कविता पाठ प्रस्तुत किया । उन्होंने विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए ।

***प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर*** में हिंदी पखवाड़ा/ हिंदी दिवस 2014 समारोहपूर्वक मनाया गया और विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

***मौसम केंद्र,लखनऊ*** में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस दिनांक 15-09-2014 से 30.09.2014 तक समारोहपूर्वक मनाया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध, हिंदी टंकण, हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन, प्रश्नोत्तरी, हिंदी वाद-विवाद, हिंदी काव्य पाठ, हिंदी सामान्य ज्ञान और हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

***मौसम केंद्र, रांची*** में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2014 समारोहपूर्वक मनाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री बी.के.मंडल, वैज्ञानिक 'ई' ने की । हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी भाषण में श्री उपेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, हिंदी वाद-विवाद में श्री विवेक कुमार और हिंदी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता में श्री संजय कुमार सिंह प्रथम रहे।

***मौसम केंद्र,भोपाल*** में हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस 2014 दिनांक 03.09.2014 से 15.09.2014 तक समारोहपूर्वक मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित स्वरचित हिंदी कविता पाठ में श्री आर.के. सिंह, हिंदी टंकण प्रतियोगिता में श्रीमती सुरभी पुरोहित, हिंदी निबंध में श्रीमती सुरभी पुरोहित, हिंदी प्रश्नोत्तरी में श्री सुमित परोहा एवं श्री विवेक छलोत्रे,हिंदी तात्कालिक भाषण (वाद-विवाद) में डॉ जी.डी. मिश्रा, हिंदी गीत एवं गाना में श्री तुलसी राम, हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता में श्री योगेश श्रीवास्तव एवं श्रीमती प्रीति श्रीवास्तव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

***हाईड्रोजन फैक्ट्री आगरा*** में दिनांक 01.09.2014 से 14.09.2014 तक हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टंकण,हिंदी वाद-विवाद, हिंदी अन्ताक्षरी ,हिंदी सुलेख और हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। श्री उदयवीर सिंह, वैज्ञानिक 'डी' की अध्यक्षता में दिनांक 16.09.2014 को हिंदी दिवस मनाया गया।

***प्रादेशिक मौसम केंद्र मुंबई,चेन्नै,मौसम कार्यालय -पालम,मोहनबाड़ी जयपुर,श्रीनगर,ग्वालियर,गोवा,मौसम केंद्र अहमदाबाद , देहरादून, रायपुर , पटना ,खगोल विज्ञान केंद्र- कोलकाता, केंद्रीय भूकंप वेधशाला शिलॉग, डॉपलर मौसम रेडार स्टेशन, करैक्कल*** आदि *कार्यालयों* में हिंदी दिवस/पखवाड़ा के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजेता कार्मिकों को पुरस्कृत भी किया गया ।

# आपकी पाती मिली

आपके दिनांक 25 नवम्बर,2014 के पत्र सं. हिं-9/12/14 के अंतर्गत हिंदी पत्रिका 'मौसम मंजूषा' का अंक-19 प्राप्त हुआ। हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं सारगर्भित, रूचिकर, सूचनाप्रद, वैज्ञानिक, ज्ञानवर्धक एवं शिक्षाप्रद हैं। प्रकाशन से जुड़े समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई। अगले अंक के सफल एवं निर्विघ्न प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

***धूम सिंह***
***सहायक निदेशक (रा.भा) एवं***
***सदस्य सचिव, नराकास,***
***भारत के महासर्वेक्षक एवं***
***अध्यक्ष नराकास, देहरादून***

सबसे पहले मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने यह अमूल्य (मौसम-मंजूषा) भेंट हमें प्रेषित की।

आपने अपनी पत्रिका को इस प्रकार सुंदर रूप से संकलित (बेहतरीन मुख्य पृष्ठ एवं पेपर क्वालिटी के साथ) किया है जिससे यह हमारे पुस्तकालय की शोभा बढ़ा रही है।

'अनुक्रमणिका' के दर्शन मात्र से इसमें समाहित विषयों की विविधता की जानकारी मिल जाती है। हमारे सभी कर्मचारी अपने रूचि अनुसार इस पत्रिका का आस्वाद ले रहे हैं।

आपसे अनुरोध है कि यदि संभव हो तो इसे ई-पत्रिका के प्रारूप में बनाने का प्रयास किया जाए जिससे हम हमारे क्षेत्राधिकार में आने वाले अन्य कार्यस्थल के कर्मचारियों को 'मौसम मंजूषा का लाभ करा सकें।

अगले अंक के प्रतीक्षा में-----

***शांताराम दत्ताराम देशाई***
***राजभाषा अधिकारी***
***हिंदुस्तान पेट्रोलियम***
***अहमदाबाद***

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'मौसम-मंजूषा के 19वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई।उक्त अंक के प्रेषण के लिए हार्दिक धन्यवाद।

मौसम-मंजूषा के 19वें अंक में संपादकीय सहित सभी लेख एवं रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सुंदर एवं मनमोहक कविताएं, विभागीय जानकारी से ओत-प्रोत तथा रोचक व ज्ञानवर्धक लेखों ने भारतीय मौसम के हर रंग की छटा बिखेरने के साथ-साथ पत्रिका की गरिमा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आशा है उक्त अंक सभी सुधी पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगा, पत्रिका संग्रहणीय है। हमें आपके आगामी अंक की प्रतीक्षा रहेगी।पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादन मंडल को हार्दिक बधाई एवं नववर्ष-2015 की हार्दिक शुभकामनाएं।

*रवीन्द्र कुमार*
*राजभाषा अधिकारी*
*ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी ,*
*आसफ अली रोड , नई दिल्ली*

आप द्वारा प्रेषित 'मौसम-मंजूषा पत्रिका के जनवरी 2015 में प्रकाशित 20वें अंक की प्रति प्राप्त करके अत्यंत प्रसन्नता हुई। हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका का रंग बिरंगा मुख्य पृष्ठ (कवर) बहुत ही सुंदर व आकर्षक है। मुद्रण भी बहुत अच्छा है।पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कविताएं तथा अन्य सामग्री उच्च-स्तरीय, ज्ञानवर्धक तथा सराहनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित वैज्ञानिक तथा तकनीकी लेखों का अवलोकन करके पता चलता है कि मौसम विज्ञान विभाग में अब कठिन विषयों को भी हिंदी में लेखन द्वारा परिश्रमपूर्वक अभिव्यक्ति देने वाले अच्छे लेखक हैं। सभी लेखक बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में प्रकाशित विषयों का चयन व क्रम भी बहुत अच्छे ढंग से करके आकर्षक एवं मनोरंजक बनाया गया है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी बौछार में जहाँ गंभीर तथा उच्च-स्तरीय ज्ञानवर्धक विषय दिए गए हैं वही साहित्यिक बयार में मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'प्रायश्चित' व कविताएं तथा अन्य लेख सभी पाठकों के लिए उत्तम है। वर्ष 2014 में विभाग में मनाएं गए हिंदी पखवाड़े के कार्यक्रम का सचित्र विवरण देखकर पत्रिका को और अधिक आकर्षक बना दिया गया है। भारतीय प्राचीन साहित्य एवं मौसम लेख भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं विस्तार/प्रसार की जानकारी देते हैं। कुल मिलाकर आपका, हिंदी अनुभाग तथा विभाग के अधिकारियों, लेखकों का प्रयास बहुत सराहनीय है। सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

*ए. एस. वर्मा*
*पूर्व हिंदी अधिकारी*
*भारत मौसम विज्ञान विभाग*

प्रकाशक

भारत मौसम विज्ञान विभाग

हिंदी अनुभाग, नई दिल्ली - 110 003